शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग– 2 हिंदी सत्र 3 V. S. C. III

हिंदी भाषा : वाचन कौशल

बी. ए. भाग– 2 हिंदी सत्र 4 V. S. C. IV

हिंदी भाषा : श्रवण कौशल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2025-26 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2025
बी. ए. भाग 2 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 200

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-47370-49-6

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, के.एस.ओ.यू.
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
प्र. अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
प्र. अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) ज्योती जाधव
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अध्ययन मंडल ■

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धवडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. (डॉ.) वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्‌यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्‌यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स अ‍ॅण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्‌यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्‌यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्‌यालय, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत**
  बळवंत कॉलेज, विटा जि. सांगली
- **प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **प्रो. (डॉ.) परसराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग-2 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रूप से प्रवेश न ले पानेवाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इस वर्ष से बी.ए.भाग-2 के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) के तहत पाठ्यक्रम को नए प्रारूप में ढाला गया है। इसलिए शिक्षा से वंचित छात्रों को इस नए प्रारूप के पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन सामग्री की सुविधा प्रदान करने के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर प्रतिबद्ध है। बी.ए. भाग- 2 के छात्र प्रस्तुत स्वयं-अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

बी. ए. भाग-2 के व्यावसायिक कौशल पाठ्यक्रम (Vocational Skill CourseVocational Skill Course) के अंतर्गत सत्र - 3 में 'हिंदी भाषा: वाचन कौशल' और सत्र- 4 में 'हिंदी भाषा : श्रवण कौशल' इन दो इकाइयों का अध्ययन छात्रों को करना है। भाषा में व्यावसायिक स्तर पर सफलता प्राप्त करने के लिए भाषा के कौशलों की सूक्ष्म समझ होना जरूरी है। इसलिए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही नए पाठ्यक्रम और प्रश्नपत्र के प्रारूप को ध्यान में रखकर अध्ययन-सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी.ए. भाग-२ के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत अध्ययन-सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी-अपनी इकाइयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक, उनके सभी सहयोगी सदस्यों तथा हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष तथा सदस्य ने समय-समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अत: इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

इकाई लेखक	**सत्र ३**	**सत्र ४**
★ **प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत** बळवंत कॉलेज, विटा ता. खानापुर जि. सांगली	1	-
★ **डॉ. नरसिंग एकिले** शिवराज कॉलेज ऑफ आर्टस, कॉमर्स ॲण्ड डी. एस. कदम सायन्स कॉलेज, गडहिंग्लज, जि. कोल्हापूर	2	-
★ **प्रो. (डॉ.) पी. आर. रगडे,** शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा	-	1
★ **डॉ. माधव मुंडकर,** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स इचलकरंजी, ता. हातकणंगले जि. कोल्हापूर	-	2

■ संपादक ■

प्रो. (डॉ.) पी. आर. रगडे,
शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,
वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

प्रो. (डॉ.) सिद्राम खोत
बळवंत कॉलेज, विटा
ता. खानापुर जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	हिंदी भाषा : वाचन कौशल	
1.	**इकाई – I**	1
2.	**इकाई – II**	16
	हिंदी भाषा : श्रवण कौशल	
1.	**इकाई – I**	35
2.	**इकाई – II**	50

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है?

(२) आपसे क्या अपेक्षित है?

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है?

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई - I

हिंदी भाषा : वाचन कौशल

1.1. उद्देश्य

1.2. प्रस्तावना

1.3. विषय विवेचन

1.3.1 वाचन कौशल : अर्थ एवं परिभाषा

1.3.2 वाचन कौशल का महत्त्व

1.3.3 वाचन कौशल की विशेषताएँ

1.3.4 वाचन कौशल के प्रकार

1.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7. सारांश

1.8. स्वाध्याय

1.9. क्षेत्रीय कार्य

1.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1) वाचन कौशल का अर्थ एवं परिभाषा से परिचित होंगे।

2) वाचन कौशल का महत्त्व समझेंगे।

3) वाचन कौशल की विशेषताओं से परिचित होंगे।

4) वाचन कौशल के प्रकार समझ पाएंगे।

1.2. प्रस्तावना –

भाषा कौशल वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति सुनने (श्रवण), बोलने, पढ़ने और लिखने के माध्यम से प्रभावी संचार कर सकता है। यह किसी भी भाषा को समझने, अभिव्यक्त करने और दूसरों तक सही तरीके से पहुँचाने की दक्षता को दर्शाता है। भाषा कौशल का विकास व्यक्तिगत, शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायक होता है।

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित रूप है। इसका दष्टिकोण प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब हम बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हैं। तो अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क के कक्ष भाग में क्रमबद्ध होकर एक तस्वीर बनाते हैं, और हम उसे उच्चरित करते हैं। यह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है, वाचन कहलाती है। वाचन या बोलना भाषा का वह रूप है जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का साधन साधारणत उच्चारित भाषा ही होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वाचन और बोलने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी मधुर वाणी है। वाचन कौशल को अभिव्यंजनात्मक या उत्पादक कौशल कहते हैं।

1.3. विषय विवेचन :

1.3.1. वाचन कौशल का अर्थ एवं परिभाषा :

भाषा में चार मुख्य कौशलों को विकसित किया जाता है- भाषण, वाचन, लेखन एवं श्रवण कौशल। वाचन कौशल पर विचार विमर्श करने से पहले 'वाचन' के अर्थ को जान लेना अत्यन्त आवश्यक होगा। 'वाचन' शब्द का अर्थ पढ़ना या किसी पाठ को सस्वर या मौन रूप से उच्चारण करना और समझना है। यह 'वाक्य' धातु से बना है, जिसका अर्थ शब्द या वाणी होता है और इसमें शब्दों के उच्चारण के साथ अर्थग्रहण पर भी बल दिया जाता है। वाचन सस्वर (बोलकर) और मौन (बिना बोले) दोनों तरह से किया जा सकता है, और यह लिखित सामग्री को समझने की एक क्रिया है। वाचन से अभिप्राय 'लिपिबद्ध सामग्री को पढकर विचार एवं भाव ग्रहण करना' इसके अतिरिक्त उसका प्रयोग भी करना सिखाना इसकी उपयोगिता को बढ़ाता है।

वाचन कौशल में व्यक्ति पाठक की भूमिका निभाता है। यहाँ भाषा का लिखित रूप आधार का काम करता है। इसे शिक्षार्थी पढ़कर ग्रहण करता है। वस्तुतः अक्षरों के प्रत्यय हमारे मस्तिष्क में क्रमबद्ध होकर एक चित्र का निर्माण करते हैं। हम उसका मन ही मन या सस्वर उच्चारण करते हैं। वह क्रिया जिसमें शब्दों के साथ अर्थ ध्वनि भी निहित है, उसे वाचन कहलाती है। वाचन में मुख्यतः दो बातें होती है – एक, वर्णों और शब्दों को पहचानना और लिखित आधार पर अर्थ ग्रहण करना। लिपि-चिह्नों की पहचान होने पर ही शब्द की पहचान संभव होती है। वस्तुतः शब्दों के पारस्परिक संबंधों की जानकारी के आधार पर अर्थ ग्रहण संभव होता है।

वाचन कौशल वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति लिखित सामग्री को सही उच्चारण, गति, प्रवाह और समझ के साथ पढ़ता है। यह केवल शब्दों को पहचानने तक सीमित नहीं होता, बल्कि उनके अर्थ को समझने, विश्लेषण करने और सही अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करने की योग्यता को भी दर्शाता है। प्रभावी वाचन कौशल के लिए शब्दावली की समझ, भावात्मक अभिव्यक्ति, उचित विराम चिह्नों का प्रयोग और आलोचनात्मक सोच की आवश्यक होती है। यह शिक्षा, संचार और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वाचन कौशल की परिभाषा :

1) ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार वाचन कौशल लिखे या मुद्रित शब्दों को बोलने की प्रक्रिया है। एक अच्छा वक्ता ही सदैव वाक्यों और शब्दों को उचित तरीके से पढ़ एवं सुन सकता है। भाषा शिक्षण में वाचन का अत्यधिक महत्व है, वाचन एक ऐसी कला है, जो कि ज्ञानार्जन की कुंजी है। यदि मनुष्य की वाचन शक्ति प्रबल हुई तो वह जटिल से जटिल विषयों को पढ़कर समझ सकता है और पढ़े हुए अंश का सार समझकर बोल सकता है, वाचन ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ मनुष्य के मृत्यु तक का साथी है।

2) डॉ. राजेंद्र प्रसाद के अनुसार – वाचन कौशल वह क्षमता है जिसके द्वारा विद्यार्थी लिखित शब्दों को पहचानकर उनके अर्थ और भाव को समझता है।

3) डॉ. रमेश सिंह के अनुसार – वाचन केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि अर्थ, भाव और आशय को समझकर उसे ग्रहण करने की प्रक्रिया है।

4) डॉ. बालकृष्ण पांडेय के अनुसार – वाचन कौशल वह बौद्धिक क्रिया है जिसके माध्यम से पाठक लिखित भाषा को पढ़ते हुए अनुभव, विचार और ज्ञान प्राप्त करता है।

5) डॉ. नंदकिशोर तिवारी के अनुसार – वाचन एक समन्वित क्रिया है जिसमें दृष्टि, बुद्धि और भाव का संतुलन स्थापित होता है।

6) एन. एस. प्रभाकर के अनुसार – Reading skill is the ability to decode written symbols into meaningful comprehension. (वाचन कौशल वह योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति लिखित प्रतीकों को अर्थपूर्ण समझ में परिवर्तित करता है।)

7) ल्यूइस महोदय ने वाचन को इस प्रकार परिभाषित किया है वाचन एक साधन है जिसके माध्यम से बालक सम्पूर्ण मानवता की संचित ज्ञानराशि से परिचित होता है।

8) गैग के मतानुसार – शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण कर सकने की क्षमता ही वाचन कौशल है।

9) कैथरीन ओकानर के मतानुसार- वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, श्रव्यों सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है। लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन अथवा वाचन कहते हैं किंतु बिना अर्थ ग्रहण किए गए पढ़ने को पठन नहीं कहा जा सकता। अर्थ ग्रहण आवश्यक है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह पठनकर्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

१०) डिसेन्ट के अनुसार – वाचन लेखन द्वारा उद्दिष्ट सुलिखित/सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको सम्बन्धित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है वाचन में सर्वप्रथम ध्वनि के प्रतीक अक्षरों को पहचानना, लिपिबद्ध अक्षरों को होंठो से बोलना या मन में पढ़ना, अर्थ ग्रहण करना। यह सभी क्रियाएँ एक साथ मिलकर 'वाचन' कहलाती हैं।

वाचन कौशल के निम्नलिखित बिंदु उल्लेखनीय हैं-

1. प्रत्येक अक्षर का शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करना।
2. वाचन में प्रवाह बनाए रखना।
3. मधुरता, प्रभावोत्पादकता, तथा चमत्कारपूर्ण ढंग से आरोह-अवरोह के साथ वाचन होना अपेक्षित है।
4. प्रत्येक शब्द को अलग-अलग उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना होता है।
5. वाचन में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।
6. सस्वर वाचन ही सामाजिक रूप से व्यावहारिक होता है।
7. मौन वाचन केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही हो सकता है।

वाचन में पाठक दूसरे व्यक्ति के लिखित भावों एवं विचारों को परिस्थिति एवं प्रसंग से अनुरूप ग्रहण करता है। इस प्रकार लिखित संकेतों या वर्णों का उनसे सम्बद्ध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया वाचन कहलाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में वाचन सीखने का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इससे छात्रों को लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सरलता होती है और अर्थग्रहण की योग्यता विकसित होती है। अर्थ को समझने की योग्यता के बिना लिखित अथवा मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर समझ पाना सम्भव नहीं है। साहित्य के अमृत रस का पान केवल वही वाचक कर सकता है जो मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर अर्थग्रहण का सामर्थ्य रखता है। इसलिए भाषा शिक्षण में वाचन का विशेष महत्त्व है।

संक्षेप में लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक वाचन कहते हैं। पर बिना अर्थ ग्रहण किए गए पढ़ने को वाचन नहीं कहा जा सकता। वाचन की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो वाचक के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर है।

1.2 वाचन कौशल का महत्त्व :

वाचन भाषाई कौशल का एक महत्त्वपूर्ण कौशल है। इसके मूल में अर्थ ग्रहण की आवश्यकता अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। वाचन का महत्त्व ध्यान में आने के कारण साहित्य लिखा जाता है। वर्तमान युग में वाचन का महत्त्व और भी बढ गया है।

1. ज्ञानप्राप्ती :

वाचन कौशल ज्ञानोपर्जन का साधन है, क्योंकि पाठ्यपुस्तक पढने से तो केवल ज्ञान के दर्शन होते है किंतु संदर्भ ग्रंथ पढने से ज्ञान की पिपासा अधिकांश मात्रा में शांत होती है। ज्ञान हासिल करने से नए-नए विषयों की जानकारी मिलती है।

2. आनंद तथा मनोरांजन :

वाचन आनंद तथा मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण साधन है। घर में, उपवन में, यात्रा में, व्यक्ति, कहानी, कविता, नाटक, फिल्मी गीत पढकर आनंद तथा मनोरंजन की कामना पुरी करता है। नीरस जीवन को सरल करने का कार्य वाचन संस्कृति करती है।

3. सांस्कृतिक विकास :

सच्चे अर्थों में मनुष्य वाचन से विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। वाचन से ही मनुष्य अच्छी संस्कृति को बढावा देता है। संस्कृति के कारण ही विभिन्न प्रकार का ज्ञान मनुष्य को मिलता है।

4. व्यक्तित्व का विकास :

आत्मप्रकाशन मनुष्य की मुख्य आवश्यकता है। मनुष्य अपने भावों और अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर संतुष्टी प्राप्त करता है। अभिव्यक्ति करने से मनुष्य में विभिन्न प्रकार की कुंठाएँ निर्माण होती है। स्पष्ट है की वाचन से मनुष्य की व्यक्तिगत उन्नती बढती है।

5. भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करना :

वाचन से नए – नए शब्दों और वाक्यों का ज्ञान प्राप्त होता है। वाचन से ही सही उच्चारण का ज्ञान प्राप्त होता है। साथ ही साथ व्याकरणिक ढाँचा ध्यान में आता है। असल में वाचन से ही भाषा पर प्रभुत्व निर्माण होता है। साहित्य लेखन या साहित्य सृजन वाचन के बिना असंभव है। साहित्य पढने के उपरांत लिखने के भी भावना बढती है। लेखक अपने विचारों के अनुरूप विभिन्न साहित्यिक विधाओं में लेखन करता है। स्पष्ट है कि साहित्य पढने से ही साहित्यकार, साहित्य लिखता है।

6. समीक्षा या आलोचन :

वाचन करने वाला व्यक्ति ही किसी भी व्यक्ति, वस्तु की समीक्षा या आलोचना कर सकता है। वाचन से ही गुण दोष उजागर होते है। सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टीकोण हर मनुष्य में विकसित होना आवश्यक है।

7. मार्गदर्शन के लिए :

विभिन्न विषयों के ग्रंथ पढकर मनुष्य ज्ञानी होता है। ग्रंथ एक प्रकार से मार्गदर्शन ही करता है। कुल मिलाकर वाचन का महत्त्व अनन्यसाधारण है।

8. सामान्य तथा सूक्ष्म अर्थग्रहण के लिए :

वाचन का महत्त्व अर्थ ग्रहण करना है। सामान्य तथा सूक्ष्म अर्थ ग्रहण करने के लिए वाचन का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। सूक्ष्म अर्थ ग्रहण से व्यक्ति लाभान्वित होती है।

9. सामाजिक जीवन में योगदान :

सामाजिक जीवन में किसी का संदेश सुनाना, किसी का पत्र पढना, किसी का अभिनंदन वक्तव्य पढना महत्त्वपूर्ण होता है। सच यह है कि विभिन्न अवसरों पर वाचन की सामाजिक उपयोगिता सिद्ध होती है।

10. प्रजातंत्र में विशेष महत्त्व :

प्रजातंत्र में विभिन्न विषयों पर लिखने का मौका रचनाकारों को मिलता है। परिणाम स्वरूप पाठक को भी वाचन के कारण विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है।

निष्कर्ष: वाचन का महत्त्व ध्यान में आने के कारण मानव जीवन में क्रांति हुई है।
वाचन से मनुष्य को विभिन्न गलतियों का अहसास हो सकता है और सुधार की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। वाचन से स्वाध्याय की प्रवृत्ति में बढोत्तरी होती है। असल में वाचन शब्द भंडार में वृद्धि करता है।

1.3 वाचन कौशल की विशेषताएँ :

वाचन वाणी का आभूषण है। अभिव्यक्ति की संप्रेषणियता वाचन से ही मानी जाती है। वाचन का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वाचन की आवश्यकता होती है। वाचन की योग्यता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनंद नहीं ले पाता है। वाचन योग्यता के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की बाधाएँ खड़ी होती है। आज जहाँ प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का विस्फोट हो रहा है वहाँ पठन कौशल में पारंगत होना अनिवार्य है। वाचन कौशल की प्रणाली वाचन कौशल को दक्ष बनाती है। जिसकी विशेषताएँ निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है –

1. भाषा का ज्ञान :

वाचन कौशल के लिए भाषा का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे लिखित सामग्री को समझना, अर्थ निकालना, उचित उच्चारण और गति बनाए रखना संभव होता है। शब्दावली की समझ, व्याकरण के नियम, वाक्य संरचना, भावात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता और सही विराम चिह्नों का उपयोग करने का ज्ञान वाचन कौशल को बेहतर बनाता है, जिससे व्यक्ति पाठ्य सामग्री को प्रभावी ढंग से पढ़ और समझ सकता है।

2. ध्यान केंद्रित करना :

वाचन के दौरान छात्रों का ध्यान सामग्री पर पूरी तरह केंद्रित होना चाहिए। ध्यान केंद्रित करने से ही वे सामग्री के हर पहलू को गहराई से समझ सकते हैं। वाचन कौशल में ध्यान केंद्रित करने के लिए, पढ़ने के दौरान सभी बाहरी विकर्षणों को दूर करना, एक शांत और समर्पित स्थान बनाना, और पढ़ने के उद्देश्य को स्पष्ट करना महत्त्वपूर्ण है। जैसे – परीक्षा के प्रश्नपत्र को पढ़ते समय ध्यान केंद्रित करने से ही छात्र प्रश्नों को सही ढंग से समझ पाएंगे।

3. स्पष्ट उच्चारण और प्रवाह :

यदि वाचन स्वर वाचन के रूप में हो रहा है, तो उच्चारण और वाक्यों का प्रवाह स्पष्ट और सटीक होना चाहिए। यह विशेष रूप से छात्रों और वक्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण है। स्पष्ट एवं सटीक उच्चारण के लिए सही स्वर, गति, हाव-भाव और शब्दों के सही उच्चारण पर ध्यान दिया जाता है, जिससे विचारों की अभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण और विश्वसनीय बनती है। अच्छा प्रवाह ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी है, जिससे छात्र जटिल विषयों को भी पढ़कर समझता है।

4. साहित्य सृजन :

वाचन कौशल और साहित्य सृजन आपस में गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। एक अच्छा वाचक ही अच्छा लेखक बनने की काबिलियत रखता है। वाचन कौशल से भावों की गहराई और विविध साहित्यिक शैलियों की समझ विकसित होती है। अलग-अलग विषयों से संबंधित किताबों का वाचन उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए आवश्यक है। वाचन से शब्दों के अर्थ, पर्यायी शब्द और उनके उचित प्रयोग का ज्ञान बढ़ता है, जो लेखन के लिए आवश्यक है। अतः वाचन क्षमता साहित्य के प्रति एक विस्तृत दृष्टिकोण पैदा करती है।

5. आरोह-अवरोह :

आरोह-अवरोह वाचन का एक भाग है। वाचन कौशल लिखित सामग्री को सही उच्चारण, प्रवाह, और समझ के साथ पढ़ने की क्षमता है, जबकि आरोह-अवरोह वाचन के दौरान स्वर में उचित उतार-चढ़ाव लाने की कला है, जो पाठ के भावों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है। आरोह-अवरोह वाचन कौशल का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जो सस्वर वाचन में भावों और विचारों को श्रोताओं तक पहुँचाने में सहायता करता है।

6. अभिव्यक्ति क्षमता :

वाचन कौशल छात्र की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाता है। इससे वह सामग्री को दूसरों के सामने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। अभिव्यक्ति क्षमता अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से मौखिक रूप में व्यक्त करने की योग्यता है। प्रभावी वाचन से समझ बढ़ती है, जो अच्छे वक्ता और लेखक बनने का मूल आधार है, और यह ज्ञानार्जन व बौद्धिक विकास में महत्त्वपूर्ण है।

7. रचनात्मकता :

वाचन का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। यह छात्रों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को भी बढ़ावा देते हैं। वाचन कौशल से नित्य नए विचार विकसित होते हैं, जो रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। मौन वाचन विशेष रूप से चिंतन और कल्पना को बढ़ावा देकर रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है। कहानियाँ, उपन्यास और साहित्य की अन्य विधाएँ पढ़ने से व्यक्ति नई दुनिया, किरदारों और स्थितियों की कल्पना करता है, जिससे उसकी कल्पना शक्ति बढ़ती है।

8. आलोचनात्मक दृष्टिकोण :

वाचन कौशल वह क्षमता है जिससे आप किसी भी लिखित सामग्री को पढ़कर समझते हैं, जबकि आलोचनात्मक दृष्टिकोण उस समझ को गहराई से विश्लेषित करने, मूल्यांकन करने और उस पर तर्कपूर्ण विचार करने की प्रक्रिया है। वाचन कौशल के बिना आप केवल पाठ के सतही अर्थ को ही समझ पाते हैं, लेकिन आलोचनात्मक दृष्टिकोण आपको लेखक के उद्देश्य, तर्क, और विषय की वैधता का गहराई से पता लगाने में सहायता करता है, जिससे ज्ञान का वास्तविक अर्जन और सही राय बनाना संभव होता है। अतः एक कुशल छात्र सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। वह यह समझने की कोशिश करता है कि लेखक ने क्या कहा है, क्यों कहा है और उसका तात्पर्य क्या है।

9. समझने की क्षमता :

वाचन कौशल का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू सामग्री को सही ढंग से समझना है। इसमें शब्दों, वाक्यों और विचारों के गहरे अर्थ को ग्रहण करना शामिल है। जैसे – यदि किसी कहानी में लेखक गरीबी की समस्या को उजागर कर रहा है तो छात्र को न केवल कहानी का बाहरी कथानक समझना चाहिए, बल्कि इसके पीछे छिपे सामाजिक संदेश को भी ग्रहण करना चाहिए।

10. भावनात्मक जुड़ाव :

वाचन कौशल छात्रों को लिखित पाठ के गहरे अर्थ को समझने में सहायता करता है, जबकि भावनात्मक जुड़ाव पाठकों को पात्रों, घटनाओं और विचारों से जुड़ने और सहानुभूति महसूस करने में सक्षम बनाता है, जिससे छात्रों को अधिक यादगार और प्रभावशाली अनुभव प्राप्त होते हैं। संक्षेप में अच्छा वाचन कौशल पाठक को सामग्री से भावनात्मक रूप से जोड़ने में सहायता करता है। इससे वह पात्रों, घटनाओं और लेखक के उद्देश्यों को गहराई से समझ सकता है।

11. त्वरित वाचन :

वाचन में कई बार तेजी से पढ़ने की क्षमता भी आवश्यक होती है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होती है जब सामग्री बहुत अधिक हो और समझ कम हो।

निष्कर्ष: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर सफलतापूर्वक जीवनयापन करने के लिए प्रत्येक मनुष्य के लिए वाचन अत्यंत आवश्यक है। वाचन करते समय शब्दों का उच्चारण शुद्ध तथा स्पष्ट होना चाहिए। अवसरानुकूल वाचन करने की योग्यता को विकसित करना चाहिए। साथ ही वाचन में स्पष्टता, सशक्तता एवं सजीवता का ध्यान रखने की आवश्यकता है।

1.4 वाचन कौशल के प्रकार :

वाचन के दो प्रकार है सस्वर वाचन एवं मौन वाचन।

1. सस्वर वाचन :

स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने को सस्वर वाचन कहा जाता है। यह वाचन की आरम्भिक अवस्था होती है। वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान इसके द्वारा ही करायी जाती है। छात्रों को सर्वप्रथम सस्वर वाचन की शिक्षा दी जाती है। छात्र जब आवाज करते हुए पाठ्य सामग्री पढ़ते हैं तो इससे उन्हें आनंद की प्राप्ति होती है। सस्वर वाचन अभ्यास शुद्ध उच्चारण की शिक्षा में सहायक होता है। प्रायः देखा गया है कि, जो छात्र सस्वर वाचन में जितना निपुण होता है वह मौखिक अभिव्यक्ति में भी उतना ही कुशल और प्रभावी होता है। सस्वर वाचन करते समय छात्रों को नये-नये शब्दों का ज्ञान प्राप्त होता है। शब्द भंडार में वृद्धि होती है, नये-नये मुहावरे, लोकोक्तियों का ज्ञान प्राप्त होता है।

सस्वर वाचन में ध्यान रखने योग्य बातें

1) इस वाचन में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

2) यह वाचन भावानुकूल करना चाहिए।

3) इसका प्रयोग करते समय विरामचिन्हों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

4) वाचन करते समय शुद्धता एवं स्पष्टता का ध्यान रखना चाहिए।

5) अधिकांश मात्रा में इस में स्थानीय बोलियों का पुट नहीं होना चाहिए।

सस्वर वाचन के गुण

1) शुद्ध उच्चारण

2) उचित ध्वनि निर्गम

3) उचित बल विराम

4) उचित वाचन मुद्रा

5) प्रभोवोत्पदकता

6) स्वाभाविकता

7) ॐ स्वर माधुर्य

8) अंगसंचालन

9) अर्थ प्रतीति

10) स्वर में रसात्मकता

आदर्श वाचन

छात्रों के समक्ष अध्यापक स्वंय वाचन प्रस्तुत करता है उसे आदर्श वाचन कहते हैं। अध्यापक अपने वाचन को आरोह अवरोह, स्वरा-घात बला-घात, यति और गति को ध्यान में रखकर कक्षा में प्रस्तुत करता है।

अनुकरण वाचन

इसके अंतर्गत छात्रों द्वारा कक्षा में अनुकरण वाचन किया जाता है।

अनुकरण वाचन के उद्देश

१) वाचन करते समय अर्थग्रहण की योग्यता का विकास करना।

२) उच्चारण को शुद्ध बनाना।

३) गति एवं प्रवाह का ध्यान रखना।

४) भाव के अनुसार पाठ का वाचन करना।

वाचन कर्ता के अनुसार सस्वर वाचन का विभाजन

वैयक्तिक वाचन

जिसमें एक व्यक्ति द्वारा आवाज होता है। विशेषत: माध्यमिक कक्षाओं में इस प्रकार का वाचन होता है। छात्रों की उच्चारण संबंधी त्रुटियों का निवारण किया जाता है।

सामूहिक वाचन

इसे 'समवेत वाचन' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें स्वर सहित उच्चारण करते हुए वाचन का अभ्यास किया जाता है। सामूहिक वाचन तेरह, चौदह वर्ष की आयु तक के बालकों के लिए ही किया जाता है।

२. मौन वाचन :

लिपिबद्ध भाषा अर्थात् लिखित सामग्री को बिना ध्वनित किए हुए मन-ही-मन में पढ़ने और साथ-साथ अर्थ ग्रहण करने की क्रिया 'मौन वाचन' कहलाती है। मौन वाचन में नेत्र लिखित पाठ्य सामग्री को तीव्र गति से पढ़ते हैं और मस्तिष्क उस सामग्री के अर्थ को ग्रहण करते जाता है। मौन वाचन करते हुए छात्र के होंठ तक हिलते नहीं है। संक्षेप में लिखित सामग्री को चुपचाप बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन वाचन कहलाता है।

मौन वाचन के लाभ

१) नेत्र और मतिष्क दोनों सक्रिय।

२) वाचन की गति का विकास।

३) अर्थग्रहण के कौशल के विकास।

४) एकाग्रचित होकार पढ़ने का अभ्यास।

५) स्वाध्याय की रुचि जागृत करने में सहायक।

मौन वाचन के प्रकार

१) गंभीर वाचन

२) द्रुत वाचन

१) गंभीर वाचन

इसकी विषयवस्तु गंभीर स्वरूप की होती है। इसमें गहराई से मनन, चिंतन कर कथ्य को समझना होता है। निबंध का मौन वाचन गंभीर वाचन की श्रेणी में आता है।

गंभीर मौन वाचन के उद्देश्य

१) पाठ के केन्द्रिय भाव की खोज करना।

२) नई जानकारी इकट्ठा करना।

३) मध्य का विषयवस्तु पर अधिकार स्थापित करना।

४) शब्द और भाषा भंडार पर अधिकार करना।

२) द्रुत वाचन

द्रुत वाचन का संबंध सारग्रहण से अधिक होता है। इसमें कम समय में अधिकाधिक अध्ययन किया जाता है।

द्रुत वाचन के उद्देश्य

१) साहित्य का अध्ययन करना।

२) अवकाश काल का सदुपयोग करना।

३) नया ज्ञान अर्जित करना।

४) पूर्व की कक्षाओं में खींची हुई भाषा, लिपि का अभ्यास करना।

५) अध्ययन में आनंद की प्राप्ति करना।

मौन वाचन के उद्देश्य

१) छात्रों में ध्यान केंद्रित करने की क्षमता उत्पन्न करना।

२) छात्रों में आत्मनिर्भरता का गुण विकसित करना।

३) द्रुत गति से पठन का अभ्यास करना।

४) बोध शक्ति का विकास करना।

५) भाषा लिपि संबंधी नियमों का ज्ञान करना।

६) छात्रों में मुहावरे, लोकोक्तियाँ साथ ही साथ शब्द और भंडार का विकास करना।

७) छात्रों में सोच, मनन और तर्क करने की शक्ति बढाना।

८) छात्रों में स्वाध्याय की आदत विकसित करना।

निष्कर्षत- किसी पाठ को या पुस्तक का सस्वर अथवा मौन रूप से पढ़ना याने वाचन कहलाता है। पठित सामग्री का आशय वाचन से ध्यान में आता है।

१.४. स्वयं अध्ययन हेतु प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिरसे लिखिए।

१. वाचन का अभिप्राय क्या है?

अ) केवल लिखना
ब) पढ़कर विचार एवं भाव ग्रहण करना
क) केवल शब्द पहचानना
ड) मौखिक संवाद करना

२. वाचन कौशल का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

अ) रटना
ब) केवल उच्चारण करना
क) सही उच्चारण, समझ के साथ पढ़ना
ड) लिखित भाषा का प्रयोग रोकना

३. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार वाचन कौशल क्या है?

अ) सुनने की प्रक्रिया
ब) लिखने की प्रक्रिया
क) मुद्रित शब्दों को बोलने की प्रक्रिया
ड) कल्पना की प्रक्रिया

४. वाचन को ज्ञानार्जन की कुंजी किसने कहा है?

अ) डिसेन्ट
ब) ल्यूइस महोदय
क) कैथरीन ओकानर
ड) महात्मा गांधी

५. ल्यूइस महोदय के अनुसार वाचन क्या है?

अ) केवल बोलने की कला है
ब) मानवता की संचित ज्ञानराशि से परिचित कराने वाला साधन है
क) मनोरंजन का माध्यम है
ड) लेखन का आरंभिक रूप है

६. कैथरीन ओकानर के मतानुसार वाचन क्या है?

अ) एक सरल प्रक्रिया है
ब) जटिल अधिगम प्रक्रिया है
क) खेल का प्रकार है
ड) वाचन का विपरीत है

७. डिसेन्ट के अनुसार वाचन क्या है?

अ) मौखिक संवाद की कला
ब) प्रतीकों को अनुभव से जोड़कर अर्थ देने की प्रक्रिया
क) लेखन कौशल
ड) भाषण कौशल

८. वाचन में सर्वप्रथम क्या किया जाता है?

अ) लेखन करना
ब) ध्वनि प्रतीकों को पहचानना
क) सुनना
ड) बोलना

९. वाचन का वास्तविक उद्देश्य है

अ) केवल पढ़ना
ब) अर्थ ग्रहण करना
क) शब्द गिनना
ड) पाठ रटना

१०. वाचन कौशल के लिए कौन–सा तत्त्व आवश्यक नहीं है?

अ) शब्दावली की समझ ब) भावात्मक अभिव्यक्ति

क) आलोचनात्मक सोच ड) गणितीय गणना

११. भाषा शिक्षण में वाचन का महत्व है क्योंकि?

अ) यह मनोरंजन का साधन है

ब) यह लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सहायता करता है

क) यह केवल व्याकरण सिखाता है

ड) यह मौखिक संवाद सिखाता है

१२. वाचन कब सार्थक होता है?

अ) पाठक अर्थ ग्रहण करे ब) पाठक तेज़ी से पढ़े क) पाठक लिखे ड) पाठक मौन रहे

१३. वाचन में किसका सामंजस्य स्थापित किया जाता है?

अ) ध्वनि और वर्णों का ब) रंग और आकृति का

क) गति और विराम का ड) रचना और व्याकरण का

१४. मौखिक वाचन का अर्थ क्या है?

अ) मौन पढ़ना ब) ध्वन्यात्मक रूप से लिखित भाषा का पाठ करना

क) अर्थहीन बोलना ड) किसी को सुनाना नहीं

१५. वाचन का अर्थ केवल शब्द पहचानना नहीं बल्कि

अ) उनके अर्थ को समझना और अभिव्यक्त करना है ब) उन्हें याद करना है

क) उन्हें बदलना है ड) उन्हें गिनना है

ब) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१) वाचन से ही सही----------का ज्ञान प्राप्त होता है।

अ) उच्चारण ब) लेखन क) निर्माण ड) प्रवाह

२) वाचन------------का आभूषण है।

अ) ज्ञान ब) वाणी क) धर्म ड) विज्ञान

३) प्रत्येक मनुष्य के लिए-------------अत्यंत आवश्यक है।

अ) पठन ब) वाचन क) पढ़ाई ड) उपर्युक्त सभी

४) वाचन कौशल के--------------प्रकार है।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

५) निबंध का वाचन ---------------- वाचन की श्रेणी में आता है।

अ) द्रुत　　ब) अनुकरण　　क) गंभीर　　ड) वैयक्तिक

६) द्रुत वाचन का संबंध----------------से होता है।

अ) सारग्रहण　　ब) सूर्यग्रहण　　क) चंद्रग्रहण　　ड) मंगलग्रहण

७) वाचन-------------भंडार में वृद्धि करता है।

अ) अर्थ　　ब) धन　　क) शब्द　　ड) मुहावरें

८) मौन वाचन------------से किया जाता है।

अ) चुपचाप　　ब) जोर-जोर　　क) चिल्लाकर　　ड) गुप्तता

९) आदर्श वाचन में अध्यापक स्वयं-------------प्रस्तुत करता है।

अ) वाचन　　ब) लेखन　　क) चिंतन　　ड) मनन

१०) वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान------------वाचन के द्वारा की जाती है।

अ) द्रुत　　ब) सस्वर　　क) मौन　　ड) आदर्श

१.५. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- वाचन - पठन।
- वाचन कौशल - लिखित सामग्री को सही उच्चारण, गति, प्रवाह और समझ के साथ पढ़ने की क्षमता।
- लिपिबद्ध सामग्री- किसी भाषा में लिखी या मुद्रित अभिव्यक्ति।
- उच्चारण- शब्दों या ध्वनियों को स्पष्ट रूप से बोलने की प्रक्रिया
- प्रवाह - बिना रुकावट और उचित लय के साथ वाचन करने की योग्यता।
- अर्थग्रहण- पढ़ी गई सामग्री का अर्थ समझने की प्रक्रिया।
- विराम चिह्न - वाक्य में ठहराव, भावना और लय व्यक्त करने वाले संकेत (जैसे अल्पविराम, पूर्णविराम)।
- आलोचनात्मक सोच - विचारों, तथ्यों और तर्कों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने की मानसिक क्षमता।
- ज्ञानार्जन - अध्ययन, अनुभव या वाचन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया।
- संचार - विचारों, भावों या जानकारी का आदान प्रदान।
- दृश्य सर्किट - मस्तिष्क का वह भाग जो आँखों से प्राप्त संकेतों को संसाधित करता है।
- श्रव्य सर्किट - मस्तिष्क का वह भाग जो श्रवण (सुनने) से संबंधित सूचनाओं को संसाधित करता है।
- अधिगम (Learning)- अनुभव, अध्ययन या अभ्यास द्वारा ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया।
- लोकतंत्रात्मक प्रवृत्ति - लोकतंत्र के सिद्धांतों, स्वतंत्रता, समानता और विवेकशीलता से संबंधित दृष्टिकोण।
- संप्रेषण : प्रेषित करना।
- सस्वर वाचन : स्वर सहित किसी लेख, कविता अथवा पाठ को पढ़ना।
- द्रुत वाचन : तीव्र गति से मौन पाठ करना।
- अनुकरण वाचन : किसी आदर्श की नकल करके वाचन करना।

१.६. स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) १. ब २. क ३. क ४. ब ५. ब ६. ब ७. ब ८. ब ९. ब १०. ड
११. ब १२. अ १३. अ १४.ब १५.अ

ब) १. अ) उच्चारण २. ब) वाणी ३. ड) उपर्युक्त सभी ४. ब) दो ५. क) गंभीर
६. अ) सारग्रहण ७. क) शब्द ८. अ) चुपचाप ९. अ) वाचन १०.ब) सस्वर

१.७. सारांश :

वाचन कौशल भाषा के तीन प्रमुख कौशलों में से एक है, जिसके माध्यम से व्यक्ति लिखित शब्दों के अर्थ को समझते हुए सही उच्चारण, गति और प्रवाह के साथ पढ़ता है। यह केवल शब्दों की पहचान नहीं, बल्कि विचार और भाव ग्रहण करने की प्रक्रिया है।

वाचन शिक्षा, ज्ञानार्जन और बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है। इसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक रूप से जागरूक बनता है। वाचन न केवल अध्ययन और संवाद में सहायक है, बल्कि मनोरंजन का भी प्रमुख माध्यम है।

वाचन आलोचनात्मक सोच, विवेक और समझ विकसित करता है। इसलिए वाचन को ज्ञानार्जन की कुंजी कहा गया है।

वाचन से ही वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान करायी जाती है।

वाचन कौशल के लिए भाषा का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे लिखित सामग्री को समझना, अर्थ निकालना, उचित उच्चारण और गति बनाए रखना संभव होता है।

१.८. स्वाध्याय :

अ) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर ३०० से ४०० शब्दों में लिखिए।

१. वाचन कौशल का अर्थ एवं परिभाषाओं को स्पष्ट कीजिए।

२. वाचन कौशल के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

३. वाचन कौशल की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

आ) निम्नलिखित लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर १५० से २०० शब्दों में लिखिए।

१. वाचन कौशल का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

२. वाचन कौशल की परिभाषाएँ लिखिए।

३. वाचन कौशल के महत्त्व का विवेचन कीजिए।

४. वाचन का शैक्षिक, सामाजिक और बौद्धिक महत्त्व समझाइए।

५. वाचन एक कला है, जो ज्ञानार्जन की कुंजी है इस कथन की व्याख्या कीजिए।

१.९. क्षेत्रीय कार्य :

१. वाचन कला के अनुभवों को लिखिए।

२. आपने पठन की हुई विभिन्न रचनाओं का परिचय दीजिए।

३. उच्चारण शिक्षण का अध्ययन कीजिए।

१.१०. अतिरिक्त अध्ययन के लिए

१) अच्छी हिंदी कैसे सीखें - डॉ. हरदेव बाहरी

२) हिंदी भाषा शिक्षण - योगेन्द्र जीत

३) हिंदी उच्चारण और वर्तनी - भगवतीप्रसाद शुक्ल

४) हिंदी शिक्षण - डॉ. उमा मंगल

५) भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

६) हिंदी शिक्षण विधियाँ - श्रीमती. शशि बाला

❑ ❑ ❑

इकाई - II

हिंदी भाषा : वाचन कौशल

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

 2.3.1 वाचन कौशल की विधियाँ

 2.3.2 वाचन कौशल के गुण

 2.3.3 वाचन कौशल के दोष

 2.3.4 वाचन कौशल का उद्देश्य

2.4 स्वयं - अध्ययन हेतु प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं - अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ।

2.1 उद्देश्य:

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. वाचन कौशल के महत्त्व से परिचित होंगे।
2. वाचन कौशल के विभिन्न विधियों से परिचित होंगे।
3. वाचन कौशल के गुणों से परिचित होंगे।
4. वाचन कौशल के दोषों से परिचित होंगे।
5. वाचन कौशल के उद्देश्य से परिचित होंगे।
6. वाचन कौशल से अक्षर, उच्चारण, ध्वनि, बल, निर्गम, सस्वरता आदि का संस्कार प्राप्त होगा।

2.2 प्रस्तावना :

वाचन भाषा शिक्षण का व्यावहारिक रूप है। वाचन कौशल वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति लिखित सामग्री को सही उच्चारण, गति, प्रवाह और समझ के साथ पढ़ता है। यह केवल शब्दों को पहचानने तक सीमित नहीं होता, बल्कि उनके अर्थ को समझने, विश्लेषण करने और सही अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करने की योग्यता को भी दर्शाता है। प्रभावी वाचन कौशल के लिए शब्दावली की समझ, भावात्मक अभिव्यक्ति,

उचित विराम चिह्नों का प्रयोग और आलोचनात्मक सोच आवश्यक होती है। यह शिक्षा, संचार और बौद्धिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी भाषा शिक्षण में वाचन के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए श्रीधरनाथ मुखर्जी लिखते हैं- वाचन एक कला है। यह ज्ञानार्जन की कुंजी है, वाचन शक्ति ठीक होने पर ही मनुष्य जटिल से जटिल विषय को पढ़कर समझ लेता है तथा पढ़े हुए अंश का सार बोलकर या लिखकर व्यक्त कर सकता है। अच्छे वाचन के बिना न तो अच्छा वक्ता बन सकता है, न ही अच्छा लेखक बन पाता है। वाचन मनुष्य का मृत्यु पर्यन्त का साथी है। यदि आप अकेले घर में बैठे हैं या सफ़र में हैं या बीमार पड़े हैं तो ऐसे समय में कोई भी पुस्तक उठाइये और उसके पाठन का मजा ले सकते हैं। स्पष्ट है कि हिंदी भाषा शिक्षण में वाचन-पठन का अत्यधिक महत्त्व है।

हिंदी भाषा शिक्षण में वाचन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वाचन ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ मनोरंजन का भी साधन है। वाचन कौशल एक विद्यार्थी के शब्द संग्रह, कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता और संचार कौशल को विकसित करने में मदद् करता है। जब हमें लिखित बातों को स्वयं पढ़ना होता है अथवा किसी को वह बात पढ़कर सुनानी होती है तो, हम उस बात को प्रवाहपूर्ण, शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ मधुर वाणी में पढ़ने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी लिखित सामग्री को मन-ही-मन पढ़ने का भी अभ्यास करते हैं। इस प्रकार के वाचन को मौन वाचन के नाम से जाना जाता है। अतः वाचन में लिपि को पढ़ना ही आवश्यक नहीं, वरन पढ़कर उसे समझना भी आवश्यक है। मुख्यतः भाषा के चार मूलभूत कौशलों में सुनना (श्रवण), लिखना (लेखन), पढ़ना (पठन) और बोलना (कथन) क्रियाएँ आदि का समावेश है। जिनमें पठन या वाचन वह कला है जो शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक, सर्वग्राही, अधिगम प्रवण, अर्थबोध युक्त, स्वाध्याय से परिपूर्ण, महत्त्वपूर्ण स्थान धारी है। प्रस्तुत इकाई के अंतर्गत वाचन कौशल की विधियाँ, वाचन कौशल के गुण-दोष एवं उसके उद्देश्य का विस्तृत विवरण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है।

2.3 विषय विवेचन :

2.3.1 वाचन कौशल की विधियाँ :

छात्र अपने भाव एवं विचारों को मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने में दक्ष बने, निपुण बने इसके लिए उनमें वाचन कौशल का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। वाचन कौशल का विकास एक या दो दिन या एक महीने या एक साल में नहीं किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सतत प्रयास करना आवश्यक है। छात्रों में वाचन कौशल का विकास करने हेतु शिक्षक कई विधियों एवं प्रविधियों का सहारा लेते हैं। जिससे छात्र धीरे-धीरे वाचन कौशल में दक्ष एवं निपुण बनते हैं। छात्रों को वाचन कौशल में दक्ष बनाने से पहले छात्रों को भाषा की ध्वनि, ध्वनि समूह, शब्द एवं वाक्य की रचना का ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है। मूल ध्वनियों एवं शब्दों को उनके शुद्ध रूप में उच्चारण करने का अभ्यास करवाना आवश्यक है। बोलने के प्रति उनमें रुचि जागृत करनी चाहिए। छात्रों को इस बात का अभ्यास करवाना चाहिए कि वे जो कुछ भी बोलना चाहते हैं उसे बड़े ही आत्मविश्वास के साथ, धैर्य से, उचित स्वर एवं उचित गति में बोलना सीखें। बोलते समय कहाँ विराम, अर्ध विराम लेना है, कहाँ बलाघात का प्रयोग करते हुए उचित भाव का प्रदर्शन करना है इन सब की आदत छात्रों में विकसित करना आवश्यक है। वाचन कौशल की शिक्षा विधिवत होनी चाहिए। शिक्षा जगत में वाचन की शिक्षा हेतु कई विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से निम्नलिखित विधियों का प्रयोग करना हितकर है-

अ) संश्लेषणात्मक विधियाँ :

प्रस्तुत विधियों के अंतर्गत सर्वप्रथम स्वर, व्यंजन तथा मात्राओं का बोध कराया जाता है। उसके बाद शब्दों और वाक्यों का बोध कराया जाता है। यह विधि प्राचीन काल से प्रयुक्त हो रही है। यह तार्किक प्रणाली है अर्थात् इसमें वस्तु को तार्किक क्रम से प्रस्तुत किया जाता है। पहले वर्ण फिर शब्द और फिर वाक्य यह भाषा सीखने का तार्किक क्रम है। संश्लेषणात्मक प्रणाली में इसी क्रम को अपनाया जाता है। इस विधि के निम्न प्रकार है-

1) अक्षर बोध विधि :

वाचन शिक्षण की यह प्राचीनतम विधि है। इसके अंतर्गत सर्वप्रथम स्वर तथा व्यंजन को पढ़ाया जाता है। अर्थात् इसमें छात्र क्रमानुसार वर्णमाला के भिन्न-भिन्न अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जैसे- पहले हिंदी की पूर्ण वर्णमाला को याद कराकर फिर उनके योग से क+म+ल = कमल शब्द का ज्ञान कराया जाता है।

अक्षर बोध विधि के गुण :

i) देवनागरी भाषा को सिखाने के लिए यह विधि अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि हिंदी में अक्षरों का क्रम उच्चारण की दृष्टि से किया है। पहले स्वर, फिर व्यंजन, फिर संयुक्त अक्षर।

ii) इस विधि में प्रत्येक अक्षर का संबंध ध्वनि के साथ जोड़ा जाता है।

iii) अर्थ की अपेक्षा शब्दों की पहचान पर अधिक बल दिया जाता है।

iv) इस विधि से उच्चारण शुद्ध होता है।

v) इस विधि से व्याकरण तथा भाषा संबंधी नियमों का बोध सरलता से होता है।

अक्षर बोध विधि के दोष :

i) बच्चे निरर्थक शब्दों में रुचि नहीं लेते। यह विधि मनोवैज्ञानिक है। बच्चा वाक्यों तथा शब्दों में बोलना सीखता है अक्षरों में नहीं।

ii) इस विधि से अक्षर बोध कराने में समय लगता है। छात्रों का अधिकांश समय वर्णमाला के रटने में चला जाता है।

iii) अक्षर बोध विधि अरोचक तथा उत्साह विहीन है।

iv) एक-एक अक्षर को जोड़कर बनाने में कई बार छात्रों में अटक-अटक कर पढ़ने की आदत पड़ती है। जैसे- क-म-ल = कमल इससे उनके वाचन की गति में बाधा आती है।

2) ध्वनि साम्य विधि :

इस विधि के अंतर्गत अक्षरों के नाम के स्थान पर उनकी ध्वनि पर बल दिया जाता है। ध्वनि की समानता रखने वाले शब्दों को एक साथ सिखाया जाता है। पहले बच्चा ध्वनियाँ सीखता है। उसके बाद ध्वनियों को मिला कर शब्द बनाता है। संक्षेप में एक साथ उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाएं जाते हैं। जैसे- धार, पार, सार, भार, हार, राम, काम, नाम, धाम आदि। ध्वनि साम्य के कारण छात्र शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना तथा पढ़ना सीखते हैं।

ध्वनि साम्य विधि के गुण :

i) यह विधि समय की बचत करती है।

ii) साम्य ध्वनि वाले शब्दों को बच्चों के लिए बोलना आसान रहता है। अतः उन्हें सीखने में आसानी रहती है।

iii) बार-बार बोलने से छात्रों को ध्वनि के शुद्ध उच्चारण का बोध होता है।

iv) अक्षर बोलने की अपेक्षा बच्चों को शब्द बोलने में आनंद मिलता है। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा रोचक तथा आनंददायी बनता है।

ध्वनि साम्य विधि के दोष :

i) व्यावहारिक शब्दावली में समान ध्वनि वाले सार्थक शब्द नहीं मिल पाने के कारण निरर्थक शब्द गढ़ने पढ़ते हैं, जो बच्चों के समझ में नहीं आते हैं।

ii) इस विधि में शब्दों, वाक्य खण्ड़ों और उनके अर्थ पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना कि उनकी ध्वनियों पर दिया जाता है।

iii) इस विधि का प्रयोग सीमित शब्दों के उच्चारण सिखाने में ही किया जाता है। इससे रटन्त प्रणाली को उत्साह मिलता है।

iv) इस विधि से सभी ध्वनि-योगों का अभ्यास कराना अत्यंत कठिन कार्य है।

ब) विश्लेषणात्मक विधियाँ :

इस विधि के अंतर्गत छात्रों को सर्वप्रथम शब्द और वाक्य सिखायें जाते हैं। बाद में वर्णों तथा ध्वनियों का ज्ञान कराया जाता है। प्रस्तुत विधि मनोवैज्ञानिक एवं रुचिकर है। इस प्रणाली के विद्वानों का मानना है कि छात्रों की रुचि अक्षरों में नहीं बल्कि वाक्यों में होती है। इस विधि के निम्न प्रकार है-

1) देखो और कहो विधि :

इस विधि के अंतर्गत छात्रों को अक्षरों तथा ध्वनियों का ज्ञान कराने से पहले शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। शब्दों का ज्ञान कराने हेतु उन्हें शब्दों से संबंधित वस्तुएँ दिखाई जाती है, लेकिन सभी वस्तुओं को दिखाना संभव नहीं होता। जिस वस्तु का चित्र होता है उसके नीचे उसका नाम लिखा होता है। क्योंकि चित्र में दिखाई गई वस्तु छात्रों की जानी-पहचानी होती है। इसलिए छात्र नीचे लिखे शब्द का उससे संबंध स्थापित करते हैं। फिर शिक्षक उस शब्द का उच्चारण करता है और छात्र उसका अनुकरण करते हुए बोलते हैं। जैसे- 'अनार' का चित्र दिखाकर पहले 'अनार' शब्द पढ़ना सिखाया जाता है। फिर अ+ना+र अक्षर इस प्रकार विश्लेषण द्वारा वे अक्षरों का उच्चारण सीख जाते हैं।

देखो और कहो विधि के गुण :

i) यह मनोवैज्ञानिक विधि है क्योंकि इसमें पहले शब्द को लिया जाता है और फिर अक्षर बोध की ओर बढ़ा जाता है।

ii) 'शब्द' शिक्षा की इकाई होता है, अतः इसे मौखिक भाषा के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है।

iii) इस विधि में 'स्थूल' से सूक्ष्म की ओर 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' तथा 'सरल से कठिन की ओर' आदि सूत्रों का पालन किया जाता है।

iv) इस विधि में एक शब्द के अक्षरों के स्थान बदल कर नए सार्थक शब्द बनाएँ जा सकते हैं। जैसे कलम, कमल आदि। इस प्रकार अक्षरों के स्थान बदल कर नए शब्द बनाने के कारण यह रोचक खेल विधि का रूप लेती है।

v) वाचन में दृष्टि-विराम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह विधि दृष्टि विराम का प्रथम प्रशिक्षण प्रदान करती है।

देखो और कहो विधि के दोष :

i) इस विधि के सफल प्रयोग के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक वस्तु का चित्र बनाया जाए या प्रस्तुत किय जाए। परन्तु क्रियार्थक तथा भावार्थक शब्दों के लिए चित्र बनाना असंभव है।

ii) बालक स्वतंत्र रूप से पढ़ने में असमर्थ हो जाता है।

iii) यह विधि अंग्रेजी में उपयोगी साबित हो सकती है, किंतु हिंदी की वर्णमाला वैज्ञानिक है। अतः इसके लिए इतनी उपयोगी नहीं है।

2) वाक्य विधि :

वाक्य विधि यह प्रणाली अक्षर-बोध प्रणाली के विपरीत है। अक्षर-बोध प्रणाली में पहले अक्षर-ज्ञान, फिर शब्द-ज्ञान और अन्त में वाक्य-ज्ञान कराया जाता है। परन्तु इस प्रणाली में पहले वाक्य-ज्ञान, फिर शब्द-ज्ञान और अन्त में अक्षर-ज्ञान कराया जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक पहले अपनी दृष्टि पूर्ण वाक्य पर ही डालता है। पृथक शब्दों पर उसका ध्यान बाद में जाता है। इसलिए इस प्रणाली में शिक्षा का क्रम है वाक्य-शब्द-वर्णाक्षर।

वाक्य विधि के गुण :

i) यह विधि गैस्टाल्ट के 'सीखने के सिद्धांत' के अनुरूप है। गैस्टाल्ट के सिद्धांत के अनुसार मस्तिष्क पहले पूर्ण को देखता है और पूर्ण से अंश की ओर जाता है।

ii) यह विधि दृष्टि विराम के विकास में सहायक सिद्ध होती है।

iii) यह विधि बाल एवं क्रिया केंद्रित है और शिक्षण को रोचक खेल में परिणित करने की क्षमता रखती है।

iv) इस विधि द्वारा बच्चे एक साथ कई शब्दों का उच्चारण सीखते हैं।

वाक्य विधि के दोष :

i) इस विधि में ऐसे वाक्यों के निर्माण की आवश्यकता होती है, जो बच्चों की अनुभव-परिधि के भीतर हो। ऐसे वाक्यों के निर्माण से बच्चों का शब्द भंडार सीमित रहता है।

ii) इस विधि में बच्चों को वाक्य रटवाएँ जाते हैं। इससे रटन्त विधि को प्रोत्साहन मिलता है, जो स्वतंत्र वाचन में बाधक है।

iii) वाक्यों को प्रस्तुत करने वाले चित्र बनाना अत्यंत कठिन है।

3) कहानी विधि :

यह विधि वस्तुतः वाक्य विधि का परिवर्तित रूप है। बच्चों में कहानी सुनने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए 'कहानी विधि' का निर्माण किया है। इस विधि में छोटे-छोटे वाक्यों से निर्मित कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। शिक्षक इस कहानी को कक्षा

में कहता है। इसके बाद अध्यापक कहानी को श्यामपट्ट पर लिखता है व वाचन कराता है। विद्यार्थी अध्यापक का अनुकरण करते हैं। वाक्य के विश्लेषण के माध्यम से छात्र शब्द एवं वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

कहानी विधि के गुण :

i) यह वाक्य विधि का परिष्कृत रूप है।

ii) कहानी विधि से बाल शिक्षा में प्रगति होती है।

iii) यह विधि अत्यंत मनोरंजक है।

iv) इससे तथ्य का संपूर्ण वर्णन होता है।

v) मौन पाठ का भी अभ्यास किया जाता है।

कहानी विधि के दोष : इस विधि के वहीं दोष है, जो वाक्य विधि के हैं। यह विधि देखने में रोचक अवश्य लगती है, परंतु शिक्षा के दौरान रोचकता बनाएँ रखना अत्यंत कठिन है। वाक्यों को बार-बार दोहराने से रोचकता शिथिल पड़ती है।

क) अन्य विधियाँ :

वाचन कौशल विधि के अंतर्गत संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों के अतिरिक्त कुछ अन्य विधियों का भी प्रयोग किया जाता है। जिसका विस्तृत विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

1) अनुकरण विधि :

बच्चे अनुकरण विधि से ही सीखते हैं। इसमें अध्यापक पहले बोलता है और बच्चे उसका अनुकरण करते हैं। यह विधि हिंदी में विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रस्तुत विधि अंग्रेजी विधियों का अनुकरण मात्र है, क्योंकि हिंदी में प्रायः सभी वर्णों की ध्वनियाँ निश्चित हैं। यह विधि अंग्रेजी में अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकती है, क्योंकि उसमें वर्णों और शब्दों के उच्चारण बदलते हैं। जैसे- 'डी' का प्रयोग 'द' तथा 'ड' दोनों ध्वनियों के लिए होता है।

2) सामूहिक पठन विधि :

यह विधि अनुकरण का ही एक रूप है। इस विधि के अंतर्गत संपूर्ण कक्षा ही अध्यापक का अनुकरण सामुहिक रूप से करती है। यह विधि कविताओं एवं गीतों का पठन कराने की दृष्टि से उचित है। कठिन शब्दों को सामूहिक उच्चारण के अध्ययन से वाचन को भावपूर्ण तथा शुद्ध किया जा सकता है। संक्षेप में इस विधि से छात्रों का स्वर सधता है और वाचन संस्कार में मजबूती आती है।

3) साहचर्य विधि :

साहचर्य विधि का प्रतिपादन मान्टेसरी ने किया है। यह विधि प्रारंभिक कक्षाओं में ही प्रयुक्त की जाती है। इस विधि के द्वारा खिलौनों, चित्रों, विभिन्न प्रत्यक्ष वस्तुओं और शब्दों में साहचर्य स्थापित किया जाता है। जैसे- बालक को 'शेर' के चित्र के नीचे शेर लिखकर एक बार समझाया जाता है। बालक को समझने के बाद फिर उनसे कहा जाता है कि वे ढूंढ-ढूंढ कर नाम वाले कार्डों को सही चित्र अथवा वस्तु के आगे लगाएं। प्रस्तुत विधि का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बालक धीरे-धीरे अध्ययन करते-करते अनेक शब्दों तथा वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह विधि बालकों को अत्याधिक रूचिकर लगती है।

4) भाषा शिक्षण की तकनीकी विधि :

वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में 'शिक्षा तकनीकी' का अत्यधिक विकास हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा में मशीनों तथा यंत्रों का प्रयोग किया जा रहा है। आज भाषा प्रयोगशालाओं का विकास दिन-ब-दिन हो रहा है। इस प्रयोगशाला में वाचन तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण का विकास किया जाता है। इसके अतिरिक्त रेडियो, दूरदर्शन, ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर आदि के द्वारा भी वाचन तथा भाषा सीखी जाती है। दूरदर्शन पर प्रातःकाल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा क्रम आते हैं जिसे 'दूरवर्ती शिक्षा' कहा जाता है। कंप्यूटर सहायक अनुदेशन का प्रयोग भी भाषा शिक्षा में किया जाता है।

ड) संयुक्त विधि :

उपर्युक्त जिन विधियों का विवेचन प्रस्तुत किया है वे सभी विधियाँ अक्षर ज्ञान कराती है। अक्षर वाचन का प्रथम सोपान है। इस सोपान पर कदम रखनेवाली विधि सरल, स्वाभाविक तथा मनोविज्ञान होनी चाहिए। ताकि बच्चे खुशी-खुशी इसकी ओर बढ़ने के लिए उत्सुक हो जाएं। उपर्युक्त सभी विधियों के अपने गुण तथा दोष है। यदि संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों को संयुक्त रूप से अपनाया जाए तो उस शिक्षण को रोचक, उत्साहवर्धक तथा प्रभावोत्पादक बनाने में व्यापक सहायता मिलती है।

इस संयुक्त रूप को 'संयुक्त विधि' की संज्ञा दी गई है। जिसमें निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाती है। जो इस प्रकार है-

i) अक्षर-ज्ञान के प्राथमिक शिक्षण में 'देखो और कहो विधि' का प्रयोग करना चाहिए। फ़्लैश-कार्ड, चित्र, लकड़ी के ब्लॉक आदि के प्रयोग से बच्चों को पहले शब्दों से परिचित कराना चाहिए।

ii) शुद्ध उच्चारण तथा भिन्न-भिन्न शब्दों का परिचय कराते हुए 'ध्वनि-साम्य विधि' का प्रयोग करना आवश्यक है।

iii) विश्लेषण विधि द्वारा शब्दों के वर्णों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। वर्णों को मिलाकर शब्द बनाने चाहिए।

iv) सर्वप्रथम चुनें हुए वर्ण तथा मात्राएँ सिखाई जाएँ और भिन्न-भिन्न शब्द बनाएँ जाएँ। सभी वर्णों एवं मात्राओं को शुरू में सिखाने की आवश्यकता नहीं है।

वर्णों, मात्राओं तथा संयुक्त अक्षरों का ज्ञान कराने के पश्चात् खेल-खेल में वाक्यों को बोलना सिखाया जा सकता है। 'देखो और कहो विधि', 'अक्षर बोध विधि' तथा 'ध्वनि साम्य विधि' से अक्षर सीख जाने पर जब छात्रों से वाक्यों में विभिन्न अक्षरों की पहचान कराई जाती है तो 'वाचन' में उनकी रुचि का विकास होता है।

v) उत्तरोत्तर विकास करते हुए 'कहानी विधि' की ओर बढ़ना चाहिए। इस विधि से विद्यार्थियों को विभिन्न वाक्यों, शब्दों तथा वर्णों का ज्ञान एवं अभ्यास कराना चाहिए।

संक्षेप में 'संयुक्त विधि' अपने लचीलेपन के कारण सभी विधियों में अधिक उपयोगी है। प्रस्तुत विधि में सभी विधियों के गुण सम्मिलित हैं। इस विधि का प्रयोग करते हुए अध्यापक पूर्ण स्वतंत्र होता है। वह विभिन्न विधियों का सम्मिश्रण आवश्यकतानुसार करता है।

2.3.2 वाचन कौशल के गुण :

वाचन भाषाई कौशलों में से एक प्रमुख कौशल माना जाता है। मूलतः वाचन एक कला है। इस कला को सभी लोग समान रूप से आत्मसात नहीं कर पाते हैं। बल्कि कुछ लोग ही उसे अच्छी तरह से अर्जित कर पाते हैं। वाचन अर्थात पठन या पढ़ना। इसमें शब्दों को समझना, उनकी व्याख्या करना और अपनी समझ को प्रस्तुत करना आदि शामिल है। वाचन के कुछ मुख्य गुण है, जो इसे प्रभावी बनाते हैं। जिसका विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है-

1) स्पष्टता तथा शुद्धता :

वाचन में स्पष्टता तथा शुद्धता एक दुसरे से जुड़े हुए हैं और दोनों ही वाचन को प्रभावशाली बनाने में मदद करते हैं। वाचन में शुद्धता और स्पष्टता दोनों का होना अत्यंत आवश्यक है। वाचन में स्पष्टता का अर्थ है कि पाठक शब्दों और वाक्यों को स्पष्ट रूप से उच्चरित करता है। शब्दों को साफ और स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए, ताकि सुनने वाले को कोई भी शब्द समझने में कठिनाई न हो। शुद्धता से तात्पर्य है शब्दों का सही एवं सटीक उच्चारण हो। शब्दों को उचित ढंग से बोलना चाहिए। उच्चारण की थोड़ी-सी अशुद्धि भी अर्थ का अनर्थ कर सकती है। जैसे- गृह, गिरह, ग्रह। इसके अतिरिक्त उदाहरण रूप में समान, सामान और सम्मान।

2) स्वर माधुर्य :

वाचन कौशल के गुण में स्वर माधुर्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिससे वाचन सुंदर, स्पष्ट और प्रभावशाली बनता है। वाचन करते समय वाणी में मधुरता एवं मिठास होनी चाहिए। एक-एक स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई दे तथा स्वर का उतार-चढ़ाव बना रहे। संक्षेप में स्वर माधुर्य के साथ वाचन श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करता है और पाठ के अर्थ को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है।

3) उचित बल एवं विराम :

वाचन सामग्री में जिस प्रकार के भाव-विचार हों, उसी प्रकार के बल का प्रयोग करना आवश्यक है। कहाँ कम रुकना चाहिए, कहाँ अधिक, कहाँ प्रश्न सूचक ध्वनि का प्रयोग करना है, कहाँ विस्मयजनक आदि सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। अर्द्ध विराम या पूर्ण विराम का अशुद्ध प्रयोग अर्थ को परिवर्तित करते हैं।

4) उचित ध्वनि निर्गम :

मुख से जो भी अवयव ध्वनि-निर्गम से सक्रिय होते हैं। उनका सही प्रयोग करना अध्यापक सिखाता है। कंठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका आदि स्थानों से ध्वनि सही ढंग से किस प्रकार उच्चारित की जाती है, इसका ज्ञान भी वाचन से ही प्राप्त होता है।

5) उचित लय एवं गति :

वाचन में उचित लय और गति, वाचन कौशल का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इससे श्रोता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वाचन को अधिक आकर्षक बनाता है। यह सुनिश्चित करता है कि वाचन सहज और स्वाभाविक लगे, और श्रोता को सामग्री को समझने में मदद करे। पाठ्य सामग्री के भाव के अनुसार ही उचित लय, गति एवं प्रवाह का ध्यान रखते हुए वाचन करना आवश्यक है। कविता पढ़ते समय, उचित लय और गति का उपयोग करने से कविता का भाव और अर्थ श्रोता के मन में अधिक गहराई से उतरता है। वैसे ही समाचार पढ़ते समय, उचित लय और गति का उपयोग करने से श्रोता को समाचार की जानकारी अधिक आसानी से और प्रभावी ढंग से प्राप्त होती है। ना तो गति तीव्र होनी और ना ही मन्द होनी चाहिए ।

6) उचित हाव-भाव :

वाचन कौशल में हाव-भाव का बहुत महत्व होता है। वाचन करते समय पाठ्य सामग्री के भावों के अनुसार पाठक को उचित हाव-भाव का प्रदर्शन करना चाहिए। श्रृंगार भाव, क्रोध भाव, वात्सल्य भाव, वीरता भाव आदि के अनुसार ही हाव-भाव परिवर्तित होने चाहिए। हाव-भाव हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का महत्त्वपूर्ण तरीका है। उचित हाव-भाव हमें बिना बोले अपनी बात को व्यक्त करने में मद्द करते हैं।

7) उचित वाचन मुद्रा :

उचित वाचन मुद्रा वाचन को अधिक सहज, प्रभावी और आनंददायक बनाती है। यह वाचन के कौशल को भी बेहतर बनाने में मदद करती है। वाचन करते समय पाठक खड़े होकर या बैठकर जैसे भी पढ़ रहा हो, उसकी मुद्रा ठीक होनी चाहिए। किताब आँख से एक फिट दूर होनी चाहिए। श्रोताओं के मध्य वाचन करते हुए बीच-बीच में उनकी तरफ देखना चाहिए।

8) प्रभावोत्पादकता :

प्रभावोत्पादक वाचन एक कला है, जो नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण से विकसित होती है। वाचन में प्रभाव लाने हेतु पाठक की दृष्टि परिधि व्यापक होनी चाहिए। वाचन करते समय, शब्दों को स्पष्ट और सुस्पष्ट रूप से, उचित आरोह-अवरोह और भावों के साथ पढ़ा जाए, जिससे श्रोताओं का मन आकर्षित हो और वे पाठ्य सामग्री को आसानी से समझ सकें। पाठक की दृष्टि केवल पुस्तक पर न होकर धारा प्रवाह गति के वाचन के ऊपर होनी चाहिए। ऐसा करने से वाचन में प्रभावोत्पादकता आती है। अतः वाचन में इतनी प्रभावोत्पादकता हो कि श्रोता का मन मुग्ध हो जाय।

9) अंग संचालन :

वाचन कौशल में अंग संचालन का अत्याधिक महत्त्व है। यह वाचन को अधिक प्रभावी बनाता है और श्रोताओं को आकर्षित करता है। वाचन करते समय पाठक को अपने शारीरिक अंगों जैसे हाथ, पैर, सिर, आँख, भौंह आदि का स्वाभाविक रुप से अंग संचालन करना चाहिए। इससे वाचन प्रभावशाली बनता है तथा वाचन में सजीवता आती है। कविता पाठ में तो कविता के भावों को स्पष्ट करके उसके प्रभाव और प्रवाह में चार चाँद लगाता है।

10) स्वाभाविकता :

वाचन कौशल में स्वाभाविकता (Naturalness) का महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्वाभाविक वाचन से श्रोता को पाठ के प्रति अधिक लगाव होता है और वे आसानी से अर्थ ग्रहण करते हैं। स्वाभाविक वाचन में उच्चारण, गति, स्वर और हाव-भाव का उचित तालमेल होता है, जो पाठक को पाठ के प्रति आकर्षित करता है। पाठक को कृत्रिम स्वर में न बोलकर अपने स्वाभाविक ढंग से वाचन करना आवश्यक है। वाचन में कोई बनावटीपन नहीं होना चाहिए। स्वाभाविक वाचन कौशल का विकास भाषा शिक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही यह छात्रों को बेहतर तरीके से संवाद करने में मदद करता है।

निष्कर्षत: उपर्युक्त सभी गुण वाचन कौशल को सम्रद्ध बनाते हैं। वाचन का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्त्व है। बिना वाचन के मनुष्य पशु के समान है। वाचन संपूर्ण शिक्षा का आधार है। नये ज्ञान, नई रुचि, जिज्ञासा, आनंद प्राप्ति, व्यावहारिक एवं साहित्यिक योग्यता की संवृद्धि, भाषा के विविध कौशलों का विकास आदि वाचन के प्रभावी गुणों के द्वारा ही संभव है।

2.3.3 वाचन कौशल के दोष :

वाचन संबंधी समस्त विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए वाचन करना शिक्षक एवं छात्र दोनों के भाषा कौशल एवं भाषा के प्रति प्रेम को दर्शाता है। जिस प्रकार पाणिनीय शिक्षा के अंतर्गत वाचन संबंधी गुणों की चर्चा की गई है, ठीक उसी प्रकार पाणिनीय शिक्षा में वाचन संबंधी कुछ दोषों का उल्लेख किया गया है। महर्षि पाणिनि ने दोषों से युक्त वाचन करने वाले को अधम कोटि के अंतर्गत रखते हुए लिखा है–

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथालिखित पाठकः।

अनर्थज्ञोऽस्य कण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ।।

अर्थात् गाकर पढ़ना, शीघ्र से पढ़ना, सिर हिलाते हुए पढ़ना, चुपचाप पढ़ना, बिना अर्थ ग्रहण किये हुए पढ़ना, दबे स्वर में पढ़ना यह छः प्रकार से पठन करने वाले पाठक अधम कोटि में आते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी वाचन संबंधी कुछ दोषों का उल्लेख किया है। उनका मानना है कि भयभीत होकर पढ़ना, संशय से पढ़ना, चिल्लाते हुए पढ़ना, अनुनासिक (नासिका के स्वर) रूप से पढ़ना, अस्पष्ट पढ़ना, नीरस रूप से पढ़ना, आतुरता से पढ़ना, स्वरहीन पढ़ना, खींच–खींच कर पढ़ना, तालुहीन की तरह पढ़ना आदि। अतः शिक्षार्थी के वाचन में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ होती है, जिसका विस्तृत विवेचन निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है –

1) अशुद्ध उच्चारण :

किसी भी भाषा में उच्चारण का अत्यधिक महत्त्व होता है। भाषा सीखने तथा सिखानें में उच्चारण की अशुद्धियां बहुत बाधक होती है। शुद्ध उच्चारण ही भाषा–विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है। वाचन में अशुद्ध उच्चारण प्रायः सभी विद्वानों को अखरता है। शुद्ध उच्चारण के अभाव में हम उपहास के पात्र बनते हैं। उच्चारण में ध्वनियों का विशेष महत्त्व है। ध्वनियों के अभाव में शब्दों का अस्तित्व नहीं है और न ही भाषा का अशुद्ध उच्चारण भाषा का स्वरूप बिगाड़ता है। से, श और ष के उच्चारण में प्रायः अशुद्धि हो जाती है। जैसे– 'संकट' को 'शकट' और 'शासन' को 'शाशन' पढ़ते हैं। इसी प्रकार ड–ड़ और ढ–ढ़ के उच्चारण में भी त्रुटि हो जाती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 'क्ष' को 'छ' तथा पश्चिमी भाग में 'श' जैसा उच्चारण किया जाता है। जैसे– क्षमा–छमा–शमा। उसी प्रकार उर्दू तथा पंजाबी भाषी शिक्षार्थी हिंदी पढ़ते समय संयुक्ताक्षरों को असंयुक्त करते हैं। जैसे– 'स्कूल' को 'इस्कूल' या 'सकूल', 'प्रश्न' को 'प्रशन', 'धर्म' को 'धरम' पढ़ जातें हैं। वाचन में उच्चारण की अशुद्धियों को शुद्ध रूप देकर उसे बोलने का अभ्यास करना चाहिए। अशुद्ध रूप को दोहराना उचित नहीं है। यदि उच्चारण शब्द अर्थ में परिवर्तन ला दे तो उसके दोनों रूपों को लिखकर उनके प्रयोग में अंतर स्पष्ट किया जाना चाहिए। जैसे– और–ओर, शौक–शोक आदि। अतः वाचन में अशुद्ध उच्चारण को सुधारने के लिए कक्षाओं में कठिन शब्दों के उच्चारण का निरंतर अभ्यास करना चाहिए।

2) उपयुक्त बलाघात का अभाव :

उपयुक्त बलाघात का अभाव से तात्पर्य है सही या उचित बल का अभाव। यह भाषा या अभिव्यक्ति में किसी शब्द या वाक्यांश पर पर्याप्त बल या जोर न देना है। जब हम कोई बात कहते या लिखते हैं, तो कुछ शब्द या वाक्यांश दूसरों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। सही बलाघात (stress) लगाने का मतलब है कि इन महत्त्वपूर्ण शब्दों या वाक्यांशों पर उचित जोर देना। यदि सही बलाघात नहीं लगाया जाता है, तो वाक्य या वाक्यांश का अर्थ बदल सकता है या गलत समझा जा सकता है। जैसे– वह चला गया में वह पर बलाघात लगाने का मतलब है कि हम उस व्यक्ति पर जोर देना चाहते हैं, जो चला गया। वह चला गया में चला पर

बलाघात लगाने का मतलब है कि हम उस क्रिया पर जोर देना चाहते हैं। वह चला गया में गया पर बलाघात लगाने का मतलब है कि हम उस स्थान पर जोर देना चाहते हैं जहाँ वह गया। बलाघात का अभाव कुछ परिस्थितियों में गंभीर परिणाम दे सकता है, खासकर जब बात भाषा की समझ या संचार की स्पष्टता की हो। संक्षेप में पढ़ते समय हम शब्दों अथवा वाक्यांशों को उचित बलाघात के साथ बोलें तथा शिक्षार्थी को भी उसी प्रकार पढ़ने का अभ्यास कराएं।

3) विराम चिह्न अनुसार पढ़ना :

पठन में विराम चिह्न (जैसे कि अल्पविराम, पूर्णविराम, प्रश्नवाचक चिह्न, आदि) का अभाव, वाक्य संरचना और अर्थ को समझने में कठिनाई पैदा कर सकता है। विराम चिह्नों के बिना, पाठ के अर्थ को स्पष्ट करना मुश्किल होता है और पाठक यह नहीं समझ पाते कि वाक्य किससे संबंधित है। पढ़ते समय कुछ लोग विराम चिह्न पर उचित ठहराव दिए बिना सपाट गति से पढ़ते हैं। अल्प विराम, अर्ध विराम, पूर्ण विराम पर आवश्यकतानुसार रुकना आवश्यक है। इसी प्रकार प्रश्नवाचक वाक्य या विस्मयसूचक चिह्न के पूर्व उचित बल दिया जाना आवश्यक है। एकांकी के पाठ को पात्रानुसार पढ़ते समय विराम चिह्न को ध्यान में रखकर पढ़ें बिना प्रभाव की सृष्टि नहीं होती है। ऐसे अवसरों पर हमें आदर्श पाठ देकर अनुकरण पाठ के बीच आवश्यकतानुसार त्रुटि का सुधार करना चाहिए। अतः वाचन में विराम चिह्न का अभाव लेखन में अस्पष्टता और भ्रम पैदा कर सकता है।

4) वाचन में आरोह-अवरोह का अभाव :

वाचन में आरोह-अवरोह का अभाव का मतलब है वाचन करते समय स्वरों में ऊपर-नीचे या उच्च-निम्न स्तर का उतार-चढ़ाव न हो, बल्कि एक ही लय में बात कही जाए। यह वाचन को रूखा और बेजान बनाता है। भाव प्रधान रचनाओं, विशेष रूप से कविता का पाठ करते समय भावानुसार स्वर के उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन का विशेष महत्त्व है। यदि कविता की रसानुभूति करते हुए उसका पाठ किया जाए तो आरोह-अवरोह स्वाभाविक रूप से ही आते हैं। हमें चाहिए कि शिक्षार्थी द्वारा कविता पाठ के समय जहां भी, भावानुरूप वाचन या आरोह-अवरोह का अभाव लगे, उसका सुधार करने के लिए हम स्वयं भावानुरूप पाठ करें। शिक्षार्थी पाठ के ढंग का अनुकरण कर पाठ में अपेक्षित आरोह-अवरोह लाएंगे।

5) भाव तथा विचार-ग्रहण में कठिनाई :

किसी कविता या गद्य पाठ को पढ़कर शिक्षार्थी उसमें निहित भाव की अनुभूति, विचार का विश्लेषण तथा भाषा शैली को समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं। इसका कारण है भाव व्यंजना तथा सूक्ष्म विश्लेषण में शिक्षार्थी की समुचित पैठ न होना। ऐसे स्थलों की व्याख्या इस प्रकार से करें कि शिक्षार्थी पाठ में निहित भाव तथा विचार के साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर सकें।

6) अज्ञानता :

शुद्ध वाचन संबंधी अज्ञानता के कारण भी बहुधा वाचन संबंधी अशुद्धियां देखी जाती है जिनका निदान छात्र एवं शिक्षक के प्रयास द्वारा संभव है।

7) शुद्ध ज्ञान का अभाव :

भाषा संबंधी शुद्ध ज्ञान का न होना भी वाचन संबंधी दोषों को बढ़ावा देता है। इसमें शिक्षक का निर्देशन अत्याधिक सहायता पहुंचाता है।

8) उच्चारण में शीघ्रता :

कभी-कभी वाचन में दोषों की प्रचुरता उच्चारण में शीघ्रता के कारण भी देखें जाते हैं। इस दोष के निवारण के लिए शिक्षक द्वारा किया गया आदर्श वाचन अत्यधिक सहायता पहुंचाता है।

9) शुद्ध वातावरण का अभाव :

वाचन के लिए शुद्ध वातावरण का होना आवश्यक समझा जाता है। यदि चारों तरफ शुद्ध भाषा का वातावरण होगा तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव छात्र के वाचन पर भी देखा जा सकेगा।

10) प्रांतीय अभाव :

कभी-कभी वाचन संबंधी दोष का कारण प्रांतीय प्रभाव भी देखा जाता है। छात्र जब सामान्य बोलचाल में प्रांतीय भाषा का प्रयोग करता है तो उसमें अभ्यस्त होने के कारण वह वाचन में भी उसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग करता है जो वाचन को दोषपूर्ण बना देते हैं।

11) वाणी तथा स्नायु संबंधी दोष :

वाणी संबंधी दोष जैसे- हकलाना, तुतलाना, काँपते हुए बोलना, सिर हिलाते हुए वाचन करना इत्यादि ऐसे दोष देखें जाते हैं। जिनके कारण छात्र का वाचन दोषपूर्ण हो जाता है। इनके समाधान हेतु चिकित्सीय सलाह की आवश्यकता होती है।

12) वाचन संबंधी मार्गदर्शन का अभाव :

छात्रों में वाचन संबंधी मार्गदर्शन की कमी विभिन्न कारणों से हो सकती है, जैसे कि अध्यापक का ज्ञान, सामग्री की उपलब्धता और छात्र की व्यक्तिगत क्षमताएं। वाचन कौशल को विकसित करने के लिए, छात्रों को उचित मार्गदर्शन और समर्थन की आवश्यकता होती है, ताकि वे अपनी क्षमता को पहचान सकें और वाचन में सुधार कर सकें। वाचन कौशल को विकसित करना छात्रों के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें भाषा सीखने, समझ विकसित करने और अपने विचारों को व्यक्त करने में मदद करता है। इसलिए, छात्रों को वाचन संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करना आवश्यक है ताकि वे अपनी क्षमता को पहचान सकें और वाचन में सुधार कर सकें।

निष्कर्षत: छात्रों में वाचन कौशल को समृद्ध करने तथा वाचन कौशल के दोषों का निवारण करने के लिए अध्यापकों के द्वारा बार-बार आदर्श वाचन किया जाना चाहिए। छात्रों को विभिन्न प्रकार के कौशलों से व्यक्तिगत रूप से परिचित कराना चाहिए तथा ध्वनि के प्रतीक चिह्नों की पहचान कर वाचन करना आवश्यक है।

2.3.4 वाचन कौशल का उद्देश्य :

वाचन कौशल का उद्देश्य छात्रों में भाषा के सही उच्चारण, धारा प्रवाह और प्रभावी अभिव्यक्ति का विकास करना है। वाचन कौशल छात्रों को भाषा के साथ संवाद करने तथा ज्ञान प्राप्ति में मद्द करता है। मूलतः वाचन का शुद्ध तथा प्रभावोत्पादकता का होना आवश्यक है। वाचक के वाचन में शुद्धता तथा प्रभावोत्पादकता सही वाचन शिक्षण द्वारा ही आती है। वाचन शिक्षण करते समय अध्यापक को निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

1) शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देना :

शुद्ध उच्चारण की शिक्षा भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग है। यह न केवल भाषा कौशल में सुधार करता है, बल्कि संचार को भी प्रभावी बनाता है। किसी भी भाषा में उच्चारण का महत्त्व अत्यधिक होता है। भाषा सीखने तथा सिखाने में उच्चारण की अशुद्धियाँ बाधक होती है। शुद्ध उच्चारण ही भाषा-विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है। हिंदी भाषा उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है तथा इसके राष्ट्रभाषा के पद पर असीम होने के बाद इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। अतएव इसे शुद्ध, समृद्ध, सर्वप्रिय एवं सर्वाग्राह्य बनाने हेतु उच्चारण की शुद्धता की तरफ ध्यान देना आवश्यक है। कई बार शुद्ध उच्चारण न करने के कारण हम उपहास के पात्र बनते हैं। शिक्षार्थी पढ़ते समय प्रायः मिलती-जुलती ध्वनियों के उच्चारण में अशुद्धि करते हैं जैसे - ए - ऐ, ओ - औ, घ - ध, ड़ - ढ़, स - ष - श, आदि अगर कोई व्यक्ति 'मैं स्टेशन पर शास्त्री जी को छोड़ने जा रहा हूं' के स्थान पर 'मैं स्टेशन पर सास्त्री जी को छोड़ने जा रहा हूं' कहें तो यह वाक्य कर्णकटु प्रतीत होता है। इसी प्रकार संयुक्ताक्षरों के उच्चारण में भी त्रुटि हो जाती है। जैसे - गृह, ग्रह, उद्धार, उद्योग, परिस्थिति, प्रतीक्षा, अंतरराष्ट्रीय आदि। इन त्रुटियों का यथासमय सुधार आवश्यक है। इसमें शुद्ध ध्वनियों के उच्चारण की शिक्षा के लिए शिक्षकों को उचित तकनीक और शिक्षा विधियों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही छात्रों को अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

2) अभिव्यक्ति में शुद्धता एवं स्पष्टता लाना :

वाचन मनुष्यों के संवैगों, भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। अभिव्यक्ति में शुद्धता एवं स्पष्टता को लाना वाचन कौशल का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयोजन है। शुद्ध एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति का सुननेवाले पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अशुद्धता एवं अस्पष्टता के अभाव में वाचन का अपेक्षित प्रभाव नहीं पड़ता और उसके संप्रेषणता में भी कमी आती है। मूलतः वाचन कौशल की सार्थकता उसकी सहजता, स्वाभाविकता एवं स्पष्टता में है। यदि पठन कौशल में यह गुण नहीं होगा तो हम अपनी बात अच्छी तरह से संप्रेषित नहीं कर सकते। संक्षेप में वाचन कौशल से छात्रों के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करने में सहायता मिलती है।

3) यति, गति, लय, आरोह-अवरोह एवं बलाघात आदि का ज्ञान कराना :

यति, गति, लय, आरोह-अवरोह एवं बलाघात साहित्य वाचन के महत्त्वपूर्ण पहलू है। किसी गद्य एवं पद्य का पठन करते समय विषय वस्तु को उचित लय एवं गति के अनुसार पढ़ना आवश्यक है। वाचन न तो तीव्र गति से होना चाहिए और न ही मन्द गति से होना चाहिए। वाचन करते समय छात्रों को इस बात की जानकारी देनी चाहिए की कहाँ कम रूकना है, कहां अधिक, कहां विराम चिह्न का प्रयोग करना है, कौन-से विराम चिह्न का प्रयोग करना है। साहित्य में ध्वनि अनुतान, बलाघात, आरोह-अवरोह, भाव के अनुरूप स्वर, लय, ताल, यति, गति आदि के समावेशन का अद्भुत एवं प्रभावी संयोजन होता है। उपर्युक्त सभी तत्त्वों का उचित ज्ञान किसी भी साहित्य या वाचन को और अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4) लिपि के प्रतीकों का ज्ञान कराना :

भाषा की उत्पत्ति के साथ मनुष्य को अभिव्यक्ति का माध्यम तो मिला है किंतु उसके संचय एवं संरक्षण की सुविधा उसे हजारों वर्ष बाद लेखन एवं लिपि के आविष्कार द्वारा ही प्राप्त हुई है। लिपि का अविष्कार मानव समाज को एक नई दिशा देने वाले क्रांतिकारी आविष्कारों में से एक है। लिपि के आविर्भाव ने मानव सभ्यता के विकास में कई अति महत्त्वपूर्ण आयाम जोड़े हैं। प्रायः भाषा के दृश्य प्रतीकों की यादृच्छिक व्यवस्था को लिपि

कहते हैं। वस्तुत: लिपि वर्णों तथा चिह्नों के संयोजन की एक विशिष्ट प्रणाली है। इसे यह भी कह सकते हैं कि भाषा की लेखन व्यवस्था, लिपि भाषा का दृश्य प्रतिरूप है जो भाषा को एक स्थूल या मूर्त सांकेतिक स्वरूप प्रदान करती है। लिपि कुछ निर्धारित चिह्नों की सहायता से भाषा का प्रतिनिधित्व करती है। लिपि द्वारा ही मानव अपने, अनुभवों, कल्पनाओं, और विचारों को मूर्त और स्थायी रूप देने में सक्षम हुआ है। लिपि के द्वारा ही मानव के लिए ज्ञान का सर्जन, संरक्षण, संवर्धन और सातत्य बनाए रखना संभव हो सका है। पाठक को वाचन कौशल से लिपि के प्रतीकों का ज्ञान होता है जिसमें वर्ण, अक्षर, मात्राएं, संयुक्ताक्षर, लिपि की दिशा, लिपि की संरचना आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। लिपि के प्रतीकों का ज्ञान भाषा, संस्कृति और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह ज्ञान हमें भाषा को समझने, लिखने और व्यक्त करने में सहायता प्रदान करता है।

5) भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करना :

वाचन से नए-नए शब्द, मुहावरे तथा वाक्य का सैद्धांतिक ज्ञान हमें प्राप्त होता है। भाषा में शब्द उच्चारण महत्त्वपूर्ण होने के कारण उसे सही रूप से उच्चारण करना वाचन कौशल सिखाता है, जो व्यक्ति अपने शब्द एवं उच्चारण पर प्रभुत्व निर्माण कर सकता है ऐसा व्यक्ति दुनिया की किसी भी भाषा पर अपना अधिकार तथा प्रभुत्व बना सकता है। जैसे फिल्म स्टार महानायक अमिताभ बच्चन ने केवल वाचन के माध्यम से ही हिंदी भाषा पर सर्वश्रेष्ठ प्रभुत्व स्थापित किया है।

6) ज्ञान की प्राप्ति कराना :

वाचन का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है ज्ञान की प्राप्ति कराना। कोई भी पाठक जब पठन करता है, तो उसका मूल उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना होता है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए पाठक विभिन्न विषयों से संबंधित किताबों को पढ़ता है। वाचन से ही नए-नए विषयों की जानकारी प्राप्त होती है। कुछ छात्र ग्रंथों को ही अपना गुरु मानते हैं, क्योंकि ग्रंथ भी गुरु के समान ज्ञान देने का महान कार्य करते हैं। संक्षेप में वाचन का मूल उद्देश्य पाठक अपने जीवन में ज्ञान प्राप्ति के लिए करता है।

7) सुक्ष्म अर्थ ग्रहण की क्षमता विकसित करना :

वाचन का उद्देश्य अर्थग्रहण करना भी है। वाचन के माध्यम से पाठक अर्थग्रहण के साथ ही सामान्य से सामान्य तथा सुक्ष्म से लेकर सुक्ष्म तक विषय का अर्थग्रहण करना चाहता है। कइयों का मानना है कि मनुष्य ज्ञान प्राप्ति एवं मनोरंजन के लिए वाचन करता है। लेकिन मनुष्य कभी-कभी छोटी से छोटी बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए भी वाचन करता है। अर्थात् वाचन का महत्त्व मनुष्य के जीवन में सामान्य तथा सुक्ष्म विषय वस्तु का अर्थग्रहण करने के लिए किया जाता है। संक्षेप में वाचन के माध्यम से ही पाठक में शब्दों के अर्थसंचय एवं अर्थग्रहण करने की क्षमता विकसित होती है।

8) रोजगार प्राप्त करना :

वाचन का महत्त्व मनुष्य के जीवन में रोजगार प्राप्त करने के लिए होता है। किसी भी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करना है, तो उसे वाचन सबसे महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि रोजगार के क्षेत्र में वाचन को अत्याधिक महत्त्व प्रदान किया है। वाचन के माध्यम से ही किसी दफ्तर में छोटी-बड़ी नौकरी मिल सकती है। वाचन के बिना नौकरी प्राप्त करना बड़ा मुश्किल कार्य है। इसलिए रोजगार के क्षेत्र में वाचन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

9) आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करना :

वाचन पाठकों में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वाचन पाठकों को अपने ज्ञान और क्षमताओं पर विश्वास करने में मदद करता है। जिससे उन्हें अन्य गतिविधियों में भी सफलता प्राप्त करने में मदद मिलती है।

10) सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक वृद्धि करना :

वाचन के माध्यम से पाठक नए विचारों और अवधारणाओं को विकसित करने के लिए प्रेरित होते हैं। जिससे उनकी सृजनात्मकता विकसित होती है। इसके साथ ही वाचन कौशल पाठकों में विभिन्न प्रकार की जानकारियों और विचारों का विश्लेषण करने और उनकी समीक्षा करने की क्षमता विकसित करते हैं। जिससे उनकी समीक्षात्मक सोच विकसित होती है।

निष्कर्षत: भारत में छात्रों में पठन कौशल को विकसित करना अध्यापकों और अभिभावकों के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य है। मेरा मानना है कि अध्यापक और अभिभावक छात्रों को कुशल पाठक बनने में मदद कर सकते हैं। संक्षेप में उपर्युक्त सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए वाचन कौशल को पाठक एवं छात्रों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कौशल माना जाता है, जो उनके व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक विकास में अहम् भूमिका निभाता है।

2.4 स्वयं – अध्ययन हेतु प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

1) छात्रों में वाचन कौशल का विकास करने हेतु अध्यापक प्रयोग करते हैं?

अ) विधियों ब) वाचन क) श्रवण ड) भाषण

2) वाचन कौशल की शिक्षा कैसी होनी चाहिए?

अ) ज्ञानात्मक ब) विधिवत् क) प्रयोगात्मक ड) दोषगत्

3) संश्लेषणात्मक विधि किस काल से प्रयुक्त हो रही है?

अ) अतिप्राचीन ब) प्राचीन क) मध्यकालीन ड) आधुनिक

4) किस विधि में छात्र क्रमानुसार वर्णमाला के भिन्न–भिन्न अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते हैं?

अ) अक्षर विधि ब) ध्वनि साम्य विधि

क) वाक्य विधि ड) कहानी विधि

5) कौन–सी विधि अक्षर बोध प्रणाली के विपरित है?

अ) वाक्य विधि ब) कहानी विधि क) अनुकरण विधि ड) साहचर्य विधि

6) मान्टेसरी ने किस विधि का प्रतिपादन किया है?

अ) सामूहिक पठन विधि ब) अनुकरण विधि

क) साहचर्य विधि ड) कहानी विधि

7) वाचन के लिए किन गुणों की आवश्यकता है?

अ) स्पष्टता तथा शुद्धता ब) प्रभावोत्पादकता

क) उचित बल एवं विराम ड) उपर्युक्त सभी

8) वाचन कौशल में कौन-सी त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए?

अ) अशुद्ध उच्चारण	ब) बलाघात का अभाव

क) आरोह-अवरोह का अभाव	ड) उपर्युक्त सभी

9) प्रभावी वाचन कौशल के लिए किसकी आवश्यकता है?

अ) शब्दावली की समझ	ब) भावात्मक अभिव्यक्ति

क) उचित विराम चिह्नों का प्रयोग	ड) उपर्युक्त सभी

10) अपने लचीलेपन के कारण कौन-सी विधि सभी विधियों में अधिक उपयोगी है?

अ) अन्य विधियाँ ब) संयुक्त विधि क) संश्लेषणात्मक ड) विश्लेषणात्मक

ब) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) भाषा के मुख्यतः----------मूलभूत कौशल है।

अ) एक	ब) दो	क) तीन	ड) चार

2) हिंदी भाषा शिक्षण में वाचन के महत्त्व को---------ने प्रतिपादित किया है।

अ) श्रीधरनाथ मुखर्जी	ब) नगेंद्र

क) महावीर प्रसाद द्विवेदी	ड) श्यामसुंदर दास

3) वाचन ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ----------का भी साधन है।

अ) फिल्म	ब) मनोरंजन	क) भोजन	ड) सौंदर्य

4) ---------ही भाषा विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है।

अ) शब्द उच्चारण ब) लेखन	क) अभिव्यक्ति	ड) मनोवैज्ञानिकता

5) ----------का अविष्कार मानव समाज को एक नई दिशा देने वाले क्रांतिकारी अविष्कारों में से एक है।

अ) लिपि	ब) किताब	क) पेन	ड) पठन

6) महानायक अमिताभ बच्चन ने-----------के माध्यम से ही हिंदी भाषा पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया है।

अ) लेखन	ब) वाचन	क) मनोरंजन	ड) गायन

7) ----------शिक्षा के अंतर्गत वाचन संबंधी गुणों एवं दोषों का उल्लेख किया है।

अ) पाणिनीय	ब) विज्ञान	क) मनोविज्ञान	ड) तक्षशिला

8) ----------प्रणाली के विद्वानों का मानना है कि छात्रों की रुचि अक्षरों में नहीं बल्कि वाक्यों में होती है।

अ) संश्लेषणात्मक ब) विश्लेषणात्मक क) अन्य विधि ड) संयुक्त विधि

9) 'देखो और कहो विधि'----------में उपयोगी साबित हो सकती है।

अ) मराठी ब) हिंदी क) उर्दू ड) अंग्रेजी

10) विद्यार्थी-----------का अनुकरण करते हैं।

अ) कवियों ब) शिक्षकों क) राजनीतिज्ञों ड) कलाकारों

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- वाचन : पठन
- कौशल : निपुणता, कुशलता, नैपुण्य
- प्रवाहपूर्ण : निरंतर, प्रवाहमय
- विधियाँ : प्रणाली, तरीका, प्रकिया
- अशुद्धियाँ : गलतियां, अशुद्धताएं, त्रुटियां
- संप्रेषित : प्रेषित, सूचित, भेजा हुआ
- बलाघात : बल, स्वराघात
- ध्वनि अनुतान : किसी ध्वनि या आवाज में उतार-चढ़ाव, लहज़ा
- लिपि : अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न
- अर्थग्रहण : अभिप्राय या मतलब समझना, भाव ग्रहण, आशय, अर्थबोध
- सृजनात्मकता : रचनात्मकता, मौलिकता, सृजन, अविष्कार
- संरचना : रचना विन्यास, गठन, बनावट
- माधुर्य : मधुरता, आकर्षक, संगीतमय
- संचालन : प्रबंधन, नीति, परिचालन
- संश्लेषणात्मक : मिश्रण, संयोजन
- अक्षर बोध : अक्षरों का ज्ञान
- विश्लेषणात्मक : तर्क संगत, विधिवत्, वैज्ञानिक, व्यवस्थित
- अनुकरण : अनुसरण, अनुकृति, नकल
- साहचर्य : जुड़ाव, मिलाप, मेलजोल, सहचरता
- सामूहिक : दल, समूह

2.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) 1) अ - विधियों 2) ब - विधिवत् 3) ब - प्राचीन 4) अ - अक्षर विधि 5) अ - वाक्य विधि 6) क - साहचर्य विधि 7) ड - उपर्युक्त सभी 8) ड - उपर्युक्त सभी 9) ड - उपर्युक्त सभी 10) ब - संयुक्त विधि

ब) 1) ड - चार 2) अ - श्रीधरनाथ मुखर्जी 3) ब - मनोरंजन 4) अ - शुद्ध उच्चारण 5) अ - लिपि 6) ब - वाचन 7) अ - पाणिनीय 8) ब - विश्लेषणात्मक 9) ड - अंग्रेजी 10) ब - शिक्षकों

2.7 सारांश :

वाचन एक कला है। यह ज्ञानार्जन की कुंजी है। वाचन मनुष्य का मृत्यु पर्यंत का साथी है। वाचन ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ मनोरंजन का भी साधन है।

वाचन कौशल एक विद्यार्थी के शब्द संग्रह, कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता और संचार कौशल को विकसित करने में मदद करता है। वाचन कौशल का विकास एक या दो दिन या एक महीने या एक साल में नहीं किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सतत प्रयास करना आवश्यक है।

छात्रों में वाचन कौशल का विकास करने के लिए शिक्षक कई विधियों एवं प्रविधियों का सहारा लेते हैं। जिनमें प्रमुख हैं- संश्लेषणात्मक विधियां इसके अंतर्गत अक्षर बोध विधि, ध्वनि साम्य विधि, विश्लेषणात्मक विधियां इसके अंतर्गत देखो और कहो विधि, वाक्य विधि, कहानी विधि। अन्य विधियों के अंतर्गत अनुकरण विधि, सामूहिक विधि, साहचर्य विधि, भाषा शिक्षण की तकनीकी विधि एवं संयुक्त विधि आदि का प्रयोग किया जाता है।

शब्दों को समझना, उसकी व्याख्या करना और अपनी समझ को प्रस्तुत करना प्रमुख कौशल है। वाचन कौशल के गुणों में स्पष्टता एवं शुद्धता, स्वर माधुर्य, उचित बल एवं विराम, उचित ध्वनि निर्गम, उचित लय एवं गति, उचित हाव भाव, उचित वाचन मुद्रा, प्रभावोत्पादकता , अंग संचालन, स्वाभाविकता आदि प्रमुख हैं।

महर्षि पाणिनि ने शिक्षा में वाचन संबंधी दोषों का उल्लेख किया है। उन्होंने दोषों से युक्त वाचन करने वाले को अधम कोटि के अंतर्गत रखा है। वाचन कौशल के दोषों में अशुद्ध उच्चारण, उपयुक्त बलाघात का अभाव, वाचन में आरोह-अवरोह का अभाव, भाव तथा विचार-ग्रहण में कठिनाई, अज्ञानता, शुद्ध ज्ञान का अभाव, उच्चारण में शीघ्रता, शुद्ध वातावरण का अभाव, वाणी तथा स्नायु संबंधी दोष, वाचन संबंधी मार्गदर्शन का अभाव आदि प्रमुख हैं।

वाचन कौशल मानवीय जीवन का अभिन्न अंग है। शुद्ध उच्चारण की शिक्षा देना, अभिव्यक्ति में शुद्धता एवं स्पष्टता लाना, यति, गति, लय, आरोह-अवरोह एवं बलाघात का ज्ञान कराना, लिपि के प्रतीकों का ज्ञान कराना, भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करना, ज्ञान की प्राप्ति करना, सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक वृद्धि करना एवं आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करना आदि वाचन कौशल के प्रमुख उद्देश्य है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) निम्नलिखित लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर 150 से 200 शब्दों में लिखिए।

1. संश्लेषणात्मक विधियों का परिचय दीजिए।
2. विश्लेषणात्मक विधियों का परिचय दीजिए।
3. वाचन कौशल के किन्हीं पांच गुणों पर प्रकाश डालिए।
4. वाचन कौशल के किन्हीं पांच दोषों को स्पष्ट कीजिए।

आ) निम्नलिखित दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर 300 से 400 शब्दों में लिखिए।

1. वाचन कौशल के विधियों का विवेचन कीजिए।
2. वाचन कौशल के गुणों पर प्रकाश डालिए।
3. वाचन कौशल के दोषों का विवेचन कीजिए।
4. वाचन कौशल के उद्देश्य का विस्तृत विवेचन कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. लेखन कौशल का अध्ययन कीजिए।
2. श्रवण कौशल का अध्ययन कीजिए।
3. भाषण कौशल का अध्ययन कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन हेतु संदर्भ :

1. हिंदी भाषा शिक्षण - भाई योगेन्द्र जीत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
2. माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी शिक्षण - निरंजन कुमार सिंह, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
3. हिंदी शिक्षण - शिखा चतुर्वेदी, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ
4. हिंदी शिक्षण विधियाँ - भाटिया व शर्मा, टण्डन पब्लिकेशन, लुधियाना
5. हिंदी शिक्षण विधि - रघुनाथ सफाया, पंजाब किताबघर, जालंधर
6. हिंदी भाषा शिक्षण - जसपाल सिंह वरवाल, गुरूसर बुक डिपो, लुधियाना
7. हिंदी शिक्षण - डॉ. उमा मंगल, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
8. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण - हरिदेव बाहरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

❑ ❑ ❑

इकाई I

हिंदी भाषा : श्रवण कौशल्य

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 श्रवण कौशल : अर्थ एवं परिभाषा

1.3.2 श्रवण कौशल के प्रकार

1.3.3 श्रवण कौशल की विशेषताएँ

1.3.4 श्रवण कौशल का महत्त्व

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई लेखन एवं अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है -

❖ छात्रों को श्रवण कौशल सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष से परिचित करना।

❖ छात्रों में श्रवण कौशल की समझ को विकसित करना।

❖ छात्रों को श्रवण कौशल की उपयोगिता को समझाना

❖ छात्रों को श्रवण कौशल के विभिन्न विशेषताओं से परिचित करना।

❖ छात्रों को श्रवण कौशल के विभिन्न प्रकारों से परिचित करना।

1.2 प्रस्तावना :

मानवी जीवन में भाषा का अनन्यसाधारण महत्त्व है। भाषा के माध्यम से ही हमारी अभिव्यक्त होते हैं और हमारे विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं। जन्म के बाद बालक का अपने पारिवारिक माहौल में भाषा सीखना शुरू होता है और यह प्रक्रिया अनायास होती है। भाषा कौशल ही व्यक्ति को भाव, विचार और सूचनाओं को ग्रहण

करके उनकी सार्थक अभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करता है। बच्चे के भाषिक कौशल्यों को सीखने की प्रक्रिया सुनने अर्थात् श्रवण से ही होती है। बालक प्रारंभ में अपनी माँ और परिवार के सदस्यों की भाषा ग्रहण करने लगता है। वह माँ के संपर्क में ही सबसे ज्यादा होने के कारण उसके द्वारा बोली गई ध्वनियों को वह लगातार सुनता है और उसके मुँह से पहला शब्द 'माँ' निकलता है। लेकिन भाषिक कौशलों को आत्मसात करने के लिए बालक को विधिवत शिक्षा लेना जरूरी होता है। भाषा शिक्षण की प्रक्रिया श्रवण - भाषण - पठन - लेखन इस क्रम से आगे बढती है। विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता को सक्षम बनाने के लिए 'सुनना-बोलना-पढना-लिखना' इन चारों क्षमताओं का संतुलित विकास करना जरूरी होता है। विद्वान, बच्चे के भाषा शिक्षण में श्रवण कौशल और भाषण कौशल को सबसे महत्त्वपूर्ण मानते हैं। श्रवण कौशल पूर्ण रूप से ग्रहणात्मक कौशल के श्रेणी में आता है। इसे भाषा शिक्षण की नींव माना जाता है क्योंकि बालक जितना अधिक श्रवण (सुनना) करेगा, उतनी उसकी भाषिक अभिव्यक्ति की क्षमता बढती है। इस इकाई में हम श्रवण कौशल का शाब्दिक अर्थ, उसकी परिभाषा, श्रवण कौशल के प्रकार, श्रवण कौशल की विशेषताएँ और श्रवण कौशल के महत्त्व का सर्वंकष अध्ययन करेंगे।

1.3 विषय विवरण

1.3.1 श्रवण कौशल - अर्थ एवं परिभाषा :

*** 'श्रवण कौशल' शाब्दिक अर्थ:**

'श्रवण' का संबंध मनुष्य के सुनने की क्रिया से होता है। 'श्रवण कौशल' यह शब्द 'श्रवण' और 'कौशल' इन दो शब्दों के योग से बना है।। 'श्रवण' शब्द संस्कृत भाषा के 'श्रु' धातु से बना है जिसका अर्थ है सुनने की क्रिया अथवा ध्यानपूर्वक सुनना। अतः श्रवण शब्द का अर्थ सही ढंग से सुनने की क्रिया हो जाता है। 'कौशल' का अर्थ है ठीक तरह से काम करने की योग्यता या दक्षता। इस प्रकार श्रवण कौशल का अर्थ सही ढंग से सुनने की क्षमता से हो जाता है। अंग्रेजी में इसे 'Listening Skill' शब्द का प्रयोग किया जाता है। बालक किसी ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनकर ग्रहण करता है और बाद में उसका उच्चारण करता है, यह प्रक्रिया श्रवण कौशल कहलाती है।

*** श्रवण कौशल की परिभाषा :**

1) नालंदा विशाल शब्द सागर कोश :

''सुनने की क्रिया, ध्यान पूर्वक सुनना, ध्यानपूर्वक अधिगम करने की कला, सही ढंग से सुनने की क्रिया।''

2) भाषाविद डिसेंट :

''श्रवण कौशल तब घटित होता है, जब बालक यह व्यवस्थित करते हैं और याद करते हैं कि क्या सुना गया है।''

3) रोनाल्ड एडलर :

''श्रवण कौशल दूसरे लोगों के संदेशों को प्राप्त करने और उनका जवाब देने की एक संवादात्मक प्रक्रिया है।'' उपरोक्त शब्द कोशीय अर्थ और विद्वानों की परिभाषा के आधार पर कह सकते हैं कि, उच्चारित ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनने व सुनकर उसके भाव को समझने की क्रिया ही श्रवण कौशल कहलाती है। ध्वनियों को कानों द्वारा ग्रहण किया जाता है और मस्तिष्क से उसका अर्थबोध करना ही 'श्रवण कौशल' है। लेकिन भाषिक

कौशल में श्रवण का अर्थ होता है कि मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त भाव एवं विचारों को सुनकर समझना। इस कारण जब कोई मौखिक भाषा के माध्यम से अपने भाव एवं विचार हमारे सामने रखता है तो, सबसे पहले हम उसे कानों द्वारा श्रवण (सुनते) हैं और बाद में उसका अर्थबोध कराते हैं। कानों द्वारा सुनकर अर्थग्रहण करने की क्रिया 'श्रवण' कहलाती है। सुनने की गुणवत्ता के प्रभाव पर हमारा 'श्रवण कौशल' अच्छा या निकृष्ट श्रेणी में आता है। श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क की एकाग्रत और इंद्रियों का संयमित होना बहुत जरूरी होता है।

1.3.2 श्रवण कौशल के प्रकार :

श्रवण कौशल के उद्देश्य और स्वरूप के आधार पर श्रवण के विभिन्न प्रकार किए जाते हैं। श्रवण का अर्थ के औपचारिक सुनना नहीं है अपितु यह एक शारीरिक एवं मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें अवधान (ध्यान) की जरूरत होती है। सुनने, ग्रहण करने, उसकी प्रतिक्रिया देने की पूरी शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों पर श्रवण की प्रक्रिया निर्भर होती है। अत: विद्वानों ने श्रवण के मूलत: तीन प्रकार माने हैं – 1) अवधानात्मक श्रवण 2) रसात्मक श्रवण और 3) विश्लेषणात्मक श्रवण। इसके साथ ही अंतरक्रिया के आधार पर भी श्रवण के दो प्रमुख प्रकार होते हैं– 1) परस्पर संवादात्मक श्रवण 2) अपरस्पर संवादात्मक श्रवण ।

श्रवण के प्रकार

- 1.अवधानात्मक श्रवण
- 2. रसात्मक श्रवण
- 3. विश्लेषणात्मक श्रवण
- 4. श्रोता-वक्ता की अंतरक्रिया पर आधारित
  - अ) परस्पर संवादात्मक श्रवण
  - ब) अपरस्पर संवादात्मक श्रवण

श्रवण कौशल के प्रमुख प्रकारों का विवेचन इस प्रकार हैं

1. अवधानात्मक श्रवण :

'अवधानात्मक श्रवण' का अर्थ है, ध्वनियों को सुनने और उन्हें समझने की क्षमता। इसमें श्रुत सामग्री को ध्यानपूर्वक सुनकर उसके मुख्य तत्वों, विचारों, आदेशों-निर्देशों तथा वार्तालाप के संकेतों को ग्रहण करना पड़ता है। अवधानात्मक श्रवण के विकास के लिए अध्यापक छात्रों को श्रुत सामग्री के मुख्य बिंदु सुनाने के लिए कह सकते हैं, अथवा उन्हें श्यामपट्ट पर या कापियों में लिखने के लिए कह सकते हैं। अवधानात्मक श्रवण, श्रवण के अन्य दो प्रकारों की आधारशिला है। इस श्रवण को 'गहन श्रवण' भी कहा जाता है। किसी बात को ध्यानपूर्वक याद करने या समझने के लिए सुनना ही गहन श्रवण कहलाता है। इसमें श्रोता के अवधान अर्थात एकाग्र चित्त को महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जैसे – कक्षा में चपरासी किसी नोटिस का रजिस्टर लेकर आता है और शिक्षक उस नोटिस को पढकर सुनाने लगते हैं, तो शिक्षक की बातों को सुनने के लिए छात्र अपना पूरा अवधान लगा देते हैं कि वे कौनसी सूचना दे रहे हैं।

2. रसात्मक श्रवण –

'रसात्मक श्रवण' में उचित स्वर, अनुतान, गति, भाव भंगिमा एवं लहजे के साथ सुनाई गई अथवा पढ़ी गई श्रुत सामग्री में श्रोता द्वारा आनंदानुभूति करता है, इसे ही 'रसात्मक श्रवण' कहा जाता है। इसमें श्रोता श्रुत सामग्री में अभिव्यक्त विचारों, भावों आदि पर विचार करता है और अपने अनुभव के आधार पर इसका मूल्यांकन करता है। जैसे- कक्षा में अध्यापक द्वारा एक अच्छी कविता या कहानी को उचित स्वर और गति के साथ पढना और छात्रों द्वारा उसे आत्मसात किया जाए, यह 'रसात्मक श्रवण' का अच्छा उदाहरण है। भाषा-शिक्षण में रसात्मक श्रवण योग्यता के विकास के लिए कविता सर्वोत्तम साधन है । रसात्मक श्रवण में श्रुत सामग्री में भाव व्यंजना को महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। रसात्मक श्रवण से श्रोता को आनंद एवं मनोरंजन प्राप्त होता है। श्रोता के ज्ञान एवं समझ में वृद्धि होती है। श्रोता का भावनात्मक विकास होता है। श्रोता विभिन्न भावों एवं अनुभव प्राप्त कर लेता है। जैसे- छत्रपति शिवाजी महाराज जी के चरित्र पर आधारित वीर रस से ओत-प्रोत भरा 'पोवाड़ा गीत' सुनने से श्रोता आनंद और गौरव का अनुभव करता है।

3. विश्लेषात्मक श्रवण –

'विश्लेषणात्मक श्रवण' एक महत्त्वपूर्ण श्रवण शैली है जिसमें श्रुत सामग्री का सूक्ष्मता एवं गहराई के साथ विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषणात्मक श्रवण श्रुत सामग्री के समझने, मूल्यांकन करने और पूर्व जानकारी पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता को दर्शाता है। इसलिए श्रुत सामग्री पर श्रोता तुलनात्मक दृष्टि से विचार करता हुआ अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उनका मूल्यांकन करके निष्कर्ष निकलता है। भाषिक कौशल में विश्लेषणात्मक श्रवण के प्रति भाषा के अध्यापक को अधिक सतर्क रहना पड़ता है, क्योंकि प्रभावी सामाजिक संचार एवं संप्रेषण के लिए विश्लेषणात्मक श्रवण बहुत जरूरी होता है। विश्लेषणात्मक श्रवण में ही श्रुत सामग्री का गहन विश्लेषण, आलोचनात्मक मूल्यांकन, पूर्व अनुभव पर निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेने की क्षमता निर्माण होती है और समस्या का समाधान होता है। इससे श्रोता की समझ बेहतर होती है। उसे श्रुत सामग्री पर आधारित उचित निर्णय लेने में सहायता होती है। सुनी हुई सामग्री के आधार पर निष्कर्ष निकालने में मद्द होती है और वह अपनी समस्या को प्रभावी ढंग से हल करने में सक्षम हो जाता है।

फिर भी भाषा शिक्षण में श्रवण के उपरोक्त प्रकारों की उपयोगिता को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद हैं। शिक्षा विद्वानों का मानना है कि अवधानात्मक और रसात्मक श्रवण की प्रक्रिया के दौरान जब सस्वर वाचन किया जाता है तो केवल वक्ता के हाथ में ही किताब होनी चाहिए, श्रोता ध्यानपूर्वक सुनता रहे। इससे श्रवण के प्रति उचित अवधान निर्माण होकर श्रवण का उद्देश्य सफल हो जाएगा। श्रोता के हाथ में भी किताब होने के कारण वह वक्ता की श्रुत सामग्री और उसकी भाव-व्यंजना से उचित ताल-मेल बिठा नहीं पाएगा। श्रवण की उपरोक्त दो प्रकारों में वक्ता और श्रोता के बीच कोई भी व्यवधान उत्पन्न करने वाले साधन नहीं होने चाहिए। लेकिन विश्लेषणात्मक श्रवण में श्रोता को भी वक्ता के साथ-साथ स्वयं भी पुस्तक पढना जरूरी होता है क्योंकि साथ-साथ पढने से वह विषय सामग्री में वर्णित तथ्य, विचार और भावों का सही तरीके से मूल्यांकन कर पाएगा। इससे श्रोता उच्चरित और लिखित दोनों रूपों से परिचित होगा।

श्रवण के उपरोक्त मुख्य प्रकारों साथ ही श्रोता और वक्ता के अंतरक्रिया के आधार पर भी श्रवण कौशल के दो उप प्रकार होते हैं- 1. परस्पर संवादात्मक श्रवण और 2. अपरस्पर संवादात्मक श्रवण। उनका संक्षिप्त विवेचन इसप्रकार है-

1. परस्पर संवादात्मक श्रवण–

'परस्पर संवादात्मक श्रवण' को अंग्रेजी में Interactive Listening कहा जाता है। इसमें वक्ता और श्रोता संवादात्मक अंतरक्रिया होती है। इसमें श्रोता भी बोलता है ताकि वक्ता तक अपने विचार पहुँचा सके, ऐसे श्रवण को परस्पर संवादात्मक श्रवण कहा जाता है। इसमें सभी व्यक्ति अपने विचार प्रकट करते हैं और दूसरों को भी सुनते हैं। जैसे- कक्षा में दोस्तों की बातचीत, किसी के साथ मोबाईल पर गपशप करना आदि।

2. अपरस्पर संवादात्मक श्रवण–

'अपरस्पर संवादात्मक श्रवण' को अंग्रेजी में इसके लिए इसके लिए Non Interactive Listening कहा जाता है। इसमें श्रोता अपनी बात को वक्ता तक पहुँचा नहीं पाता, ऐसे श्रवण को अपरस्पर संवादात्मक श्रवण कहा जाता है। जैसे- रेडियो कार्यक्रम सुनना, टी.वी. पर महान व्यक्ति का साक्षात्कार सुनना, संगोष्ठियों में विद्वानों का व्याख्यान सुनना आदि।

1.3.3 श्रवण कौशल की विशेषताएँ :

भाषा शिक्षण में श्रवण कौशल पहली सीढी है। बालक के भाषा आत्मसात करने की प्रक्रिया ही 'श्रवण' से होती है। श्रवण की प्रक्रिया ऊपरी तौर से देखे, तो बहुत ही सहज लगती है लेकिन वह बहुत ही उलझी हुई है। इसमें श्रोता की शारीरिक एवं मानसिक क्रिया महत्त्वपूर्ण होती है। इसकारण प्रभावी श्रवण कौशल के लिए उसमें कुछ विशेषताओं का होना जरूरी है। प्रभावी श्रवण एक प्रक्रिया है, जिसके लिए श्रोता का सजग और समग्र रूप से अवधान स्थापित करना आवश्यक होता है। श्रवण की इस प्रभावी प्रक्रिया के कारण ही उसकी कुछ विशेषताएँ इसप्रकार है–

1. श्रवण कौशल में श्रोता की श्रवणेंद्रिय (कान) का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है :

श्रवण कौशल पूर्ण रूप से शारीरिक एवं मानसिक उचित अवधान पर निर्भर प्रक्रिया है। इसलिए श्रवण कौशल में 'कान' यह ज्ञानेंद्रिय सबसे प्रमुख हैं। इसलिए बालक के जन्म के बाद डॉक्टर बच्चे के रोने को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। यदि बच्चा रोता नहीं तो उसके श्रवण में कुछ समस्या होने का निदान चिकित्सक करते हैं। बालक के कान में यदि कोई समस्या है तो वह ध्वनियों को सुन ही नहीं पाएगा और इससे वह भाषा सिखने की पहली अवस्था में ही असफल रहेगा। ऐसे कर्णबधीर बालकों को सिखने के लिए विशेष स्कूलों में जाना पड़ता है। बिना कानों के हम किसी की बातों को सुन ही नहीं सकते हैं। सुने बिना किसी बात का हमें ज्ञान नहीं होगा और हम उसकी प्रतिक्रिया भी नहीं दे सकेंगे। ग्रीक विद्वान के अनुसार हम एक मुँह और दो कान लेकर पैदा हुए हैं। अर्थात् व्यक्ति को बोलने से दोगुना सुनना चाहिए। एक सर्वे के अनुसार यह सिद्ध हुआ है कि मनुष्य रोजाना अपने क्रियाशील अवस्था में 32 प्रतिशत समय बोलने में खर्च करता है जबकि 42 प्रतिशत समय श्रवण करने में खर्च करता है। मिनेसोटा विश्वविद्यालय के शास्त्रज्ञ निकोलस राल्प के मतानुसार मनुष्य कान के माध्यम से जो कुछ भी श्रवण करता है इसमें से 50 प्रतिशत ही उसके स्मरण में रहता है। अर्थात् श्रवण के लिए कानों का होना बहुत जरूरी है।

2. श्रोता को ध्वनि एवं भाषा का ज्ञान होना जरूरी होता है :

श्रवण कौशल में श्रोता श्रृत सामग्री को किसी-न-किसी भाषा की सार्थक ध्वनियों के द्वारा ग्रहण करता है। इसलिए श्रोता को उस भाषा एवं उसकी ध्वनियों की समझ होना जरूरी है। अज्ञात भाषा और उसकी ध्वनियाँ श्रोता के लिए केवल शोर साबित होगी। जैसे- मराठी भाषी व्यक्ति जो अंग्रेजी नहीं जानता है और वह विदेश

चला जाएगा तो वहाँ की अंग्रेजी भाषा उसके लिए केवल एक ध्वनियों का शोर हो जाएगा क्योंकि वह मराठी भाषा एवं उसकी ध्वनियों का ज्ञाता होता है और अंग्रेजी भाषा उसके लिए अंजान होती है।

3. श्रोता में मूल ध्वनि एवं ध्वनि समूहों में अंतर करने की योग्यता होनी आवश्यक है :

श्रवण कौशल में श्रोता को मूल ध्वनि एवं ध्वनि समूहों में अंतर करने की योग्यता होना आवश्यक है। मराठी में स्वर और व्यंजन यह सब मूल ध्वनियाँ हैं। इन स्वर और व्यंजनों की ध्वनि समूह से शब्द बनते हैं। उसी तरह अंग्रेजी में 26 वर्ण उसकी मूल ध्वनियाँ हैं और इससे ही शब्द बनते हैं। जैसे- हिंदी भाषा का उदाहरण ले तो 'क' यह एक ध्वनि है जिसे व्यंजन कहा जाता है लेकिन इस ध्वनि से 'कमल' यह शब्द बनेगा जो एक संज्ञावाचक शब्द है। 'कमल' फूल का नाम भी है और किसी लड़की का भी हो सकता है। अत: श्रोता को 'क' अर्थात् ध्वनि और 'कमल' अर्थात् ध्वनिसमूह के बीच के अंतर जानने की योग्यता हो तभी वह इसका सही अर्थ ग्रहण कर सकता है। इसलिए प्रभावी श्रवण प्रक्रिया के लिए श्रोता को ध्वनि चिन्ह और ध्वनिसमूह से बनने वाले सार्थक शब्दों की समझ होना जरूरी है।

4. श्रोता को सुनने में रूचि एवं अवधान होनी जरूरी है :

श्रवण कौशल के लिए सुनने में रूचि एवं अवधान का होना बहुत जरूरी होता है। सुनते समय ध्यान देना श्रवण प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण इकाई मानी जाती है। लेकिन यह सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य है। सुनने में रूचि एवं अवधान प्राप्त करने के लिए वक्ता और श्रोता को सजग रहकर प्रयास करने पड़ते हैं। बहुत बार श्रवण अवधान श्रोता के रूचि पर भी निर्भर होता है। श्रवण के दौरान विचलित करने वाले विचारों और श्रोता का आंतरिक संवाद को अनदेखा करना होता है। जब कोई विषय पसंद का ना हो या समझने में दुर्बोध हो तो ध्यान केंद्रित करना चुनौती का काम होता है। पूर्ण अवधान के लिए वक्ता के भाषण के दौरान टिप्पणी बनाने से बचे, स्वयं के श्रवण पर ध्यान दे भले ही मन भटक रहा है अपना ध्यान पुन: वक्ता पर लगाने की कोशिश करे, अपनी आँखे वक्ता पर जमाए रखे और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रहकर श्रोता उचित अवधान प्राप्त कर सकते हैं। श्रोता सुनते समय अगर स्थिर चित्त और एकाग्र नहीं होता तो उसके द्वारा निरर्थक अर्थ ग्रहण किया जा सकता है जो श्रवण कौशल में बाधा पहुँचा सकता है। इसलिए अच्छा वक्ता बनने के लिए पहले एक अच्छा श्रोता होना जरूरी है और यह श्रवण में रूचि एवं अवधान से संभव हो पाता है।

5. श्रोता में संयम एवं अपनी इच्छा से सुनने की क्षमता होना आवश्यक है :

श्रवण कौशल यह प्रक्रिया बहुत ही श्रमसाध्य एवं जटिल होती है। श्रोता को श्रवण कौशल को प्राप्त करने के लिए संयम एवं अपनी इच्छा से सुनने की क्षमता होना जरूरी है। आज किसी भी समारोह में वक्ता को संयम के साथ सुनना चुनौतीपूर्ण कार्य बन गया है। इतना ही नहीं तो मोबाईल एवं इंटरनेट के जमाने में छात्र भी उचित अवधान स्थापित करने में कमजोर पड़ जाते हैं। कक्षाओं में बच्चों का उचित अवधान बनाए रखने के लिए अध्यापकों के साथ छात्रों में भी धैर्य एवं इच्छाशक्ति होना जरूरी है। श्रोता में अगर सुनने की क्षमता या फिर संयम नहीं है तो उसका श्रवण निष्कृष्ट हो जाता है। इसकारण वह ज्ञान सामग्री को ठिक तरीके से समझ नहीं पाता। इसलिए श्रोता को किसी भी श्रवण सामग्री को सुनने की आदत होनी जरूरी है। इसके लिए उसमें धैर्य और अपनी खुद की इच्छा होना जरूरी है।

6. श्रोता को श्रवण सामग्री के अर्थ एवं भाव को समझने का ज्ञान होना जरूरी है :

श्रोता को सुनी हुई सामग्री का अर्थ एवं उसके भाव को समझने की क्षमता होना चाहिए। यह मूलत: श्रोता के मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता से जुड़ा हुआ होता है। मानसिक संतुलन खोए हुए व्यक्ति को अगर हम कुछ सुनाने लगेंगे तो उसके लिए हमारा कहना महज एक आवाज होगी क्योंकि उस व्यक्ति की श्रवण क्षमता बौद्धिक एवं मानसिक संतुलन से जुड़ी हुई नहीं होती। इसकारण वह सुनी हुई सामग्री के अर्थ एवं उसके भाव को समझ नहीं पाएगा। अत: श्रवण कौशल को आत्मसात करने के लिए श्रोता में अर्थ एवं उसके भावों को समझने की योग्यता का होना जरूरी है।

7. श्रोता में वक्ता के भावाभिव्यक्ति के अनुसार अर्थबोध होने की क्षमा होना जरूरी है:-

श्रवण प्रक्रिया मूलत: श्रोता और वक्ता की अंतरक्रिया पर निर्भर होती है। प्रभावी श्रवण के लिए श्रोता और वक्ता दोनों भी महत्त्वपूर्ण इकाई होते हैं। कभी-कभी एक वक्ता हजारों श्रोताओं के सामने बोलता है। वक्ता के हाव-भाव के अनुसार श्रोता को श्रवण सामग्री के अर्थ एवं भाव समझने की योग्यता होनी जरूरी होती है। एक वक्ता अपने एक घंटे के भाषण में सुख, दु:ख, हँसी-मजाक, गंभीर आदि कई प्रकार के भावों के प्रसंगों को श्रोताओं के सामने रखता है। अत: वक्ता के हर भाव के अनुसार उस घटना एवं प्रसंग का अर्थबोध करना प्रभावी श्रवण के लिए जरूरी होता है। जैसे- वक्ता अगर किसी दु:खावेग में कोई बात बता रहा है तब श्रोताओं में सन्नाटा छा जाएगा। अगर ऐसे पलों में भी अगर कोई बोलता या हँसता है तो, उसे वक्ता के हाव-भाव का ज्ञान नहीं है, ऐसा समझ सकते हैं। इसलिए श्रवण कौशल में श्रोता के हाव-भाव के अनुसार श्रवण सामग्री को आत्मसात करने की योग्यता होनी जरूरी है।

1.3.4 श्रवण कौशल का महत्त्व :

भाषा शिक्षण में श्रवण का स्थान सबसे पहला आता है इसलिए भाषिक कौशल में श्रवण कौशल का स्थान महत्त्वपूर्ण है। बालक जन्म के बाद रोता है अर्थात् वह श्रवण की प्रक्रिया से गुजरता है। अगर वह रोएगा नहीं, तो उसके श्रवण में कुछ तो समस्या होती है। बालक अपने पारिवारिक परिवेश में सुनता रहता है और बाद वह बोलना सिखता है। मनुष्य के भाषिक अभिक्षमता का विकास श्रवण कौशल से शुरू होता है। बच्चे के जन्म के बाद यदि श्रवण यंत्र में दोष होगा तो भाषा शिक्षण के सभी चरण लडखड़ा जाएँगे और बालक भाषा सिख ही नहीं पाएगा इसलिए श्रवण कौशल को भाषा कौशल अध्ययन की आधारशिला कहा जाता है। भाषा के चारों कौशलों के विकास के लिए बालक के आस-पास का परिवेश उसके अनुकूल होना जरूरी होता है। बालक सबसे पहले अपने परिवार के सदस्यों की बातचीत को श्रवण से ग्रहण करता है। यह ध्वनियाँ उसके मन-मस्तिष्क में अंकित हो जाती है। यही प्राथमिक ध्वनियाँ बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती है और बालक बोलना सिखता है। इसके बाद प्राथमिक शिक्षा द्वारा उसके औपचारिक भाषिक कौशलों को आत्मसात करने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इससे स्कूल में, जीवन के अन्य क्षेत्र में वह सुनकर अर्थ ग्रहण करना शुरू करता है। अच्छी तरह से सुनने के कारण ही बालक ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को समझने की क्षमता प्राप्त करता है। सुनने के पश्चात ही वह अन्य क्रियाएँ यानी बोलना, पढ़ना व लिखना क्रमशः करता है। श्रवण कौशल का महत्त्व श्रोता के श्रवण करने के उद्देश्य पर ही निर्भर होता है। वह इसप्रकार है-

1. भाषाई कौशल प्राप्त करने की पहली सीढी के रूप में महत्त्वपूर्ण–

किसी भी बच्चे के भाषा के ज्ञान का सफर श्रवण से ही शुरू होता है। इसलिए श्रवण को भाषा ज्ञान की प्रारंभिक सीढी कहा जाता है। इसलिए प्राचीन ऋषि–मुनियों ने गर्भसंस्कार का विधान किया है। गर्भ में ही बच्चे की श्रवण प्रक्रिया शुरू हुई होती है। वह गर्भ के भीतर ही विभिन्न आवाजों को महसूस करता है। माँ के गर्भ में शिशु होने के कारण ही वह माँ की आवाज को पहचानता है। इसलिए घर के बड़े–बुजुर्ग हमेशा गर्भसंस्कार के रूप में अच्छा चिंतन–मनन करनी सलाह देते थे। इस संदर्भ में महाभारत के 'अभिमन्यु' को गर्भ के दौरान चक्रव्यूह की कथा सुनाने का किस्सा प्रसिद्ध है। अर्थात् गर्भ से ही बच्चे की श्रवण प्रक्रिया शुरू हुई होती है। बच्चे का जन्म होने के बाद वह बाहर की विभिन्न आवाजें सुनकर रोने लगता है, तब वैद्यकीय क्षेत्र में ऐसे बालक को मानसिक रूप से स्वस्थ्य माना जाता है। अगर बच्चा जन्म के बाद नहीं रोता तो उसके श्रवण यंत्र में दोष होने की पुष्टि की जाती है। इसलिए जन्म के बाद बच्चे की श्रवण–भाषण इंद्रियाँ स्वस्थ होना जरूरी है, वरना उसके भाषाई कौशल सिखने के प्रारंभिक स्थिति में ही समस्या पैदा हो जाएगी। भाषाई ज्ञान को आत्मसात करने की दृष्टि से श्रवण पहली सीढी के रूप में बेहद महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

2. श्रवण कौशल से ध्वनियों में अंतर कर पाने की क्षमता आती है–

श्रवण प्रक्रिया के पहले चरण में बालक गर्भ से ही केवल अपनी माँ की ध्वनियों को सुनता है, महसूस करता है। जन्म के बाद बालक विभिन्न ध्वनियाँ सुनने लगता है, यह श्रवण प्रक्रिया का दूसरे चरण होता है। धीरे–धीरे वह अपनी माँ की आवाज के साथ–साथ अन्य ध्वनियों को सुनता है और उनमें अंतर कर पाने में सक्षम हो जाता है। जैसे– नवजात शिशु के पास परिवार का अन्य सदस्य बोलता है तो वह रोने लगता है लेकिन जब वह माँ की आवाज सुनता है, तो वह रोना बंद कर देता है। लेकिन धीरे–धीरे वह परिवार के अन्य सदस्यों की आवाज सुनकर समझने में अभ्यस्त हो जाता है। बालक इन विभिन्न ध्वनियों को अपने मन–मस्तिष्क में अंकित करके उनमें अंतर कर पाने में सक्षम हो जाता है।

3. श्रवण कौशल से संभाषण को प्रेरणा मिलती है–

भाषा शिक्षण में श्रवण के बाद संभाषण या बोलना यह कौशल आता है। नवजात शिशु समय के साथ–साथ अपने श्रवण कौशल की क्षमता को विकसित करता है। वह परिवार में माँ के साथ परिवार के अन्य सदस्य का बोलना, विशिष्ट खिलौनों की आवाज आदि का अभ्यस्त हो जाता है। माता या पिता के सान्निध्य में निरंतर रहने के कारण उसके मुँह से सबसे पहले 'माँ' या 'पापा' ये शब्द आते हैं। श्रवण कौशल से वह विभिन्न ध्वनियों को अंतर करना सीखता है और यह प्रक्रिया सहज हो जाती है। वह माँ के साथ परिवार के अन्य सदस्यों की ध्वनियों को समझकर उसके अनुसार प्रतिक्रिया देना शुरू कर देता है। वह परिवार के सदस्यों के ही बोलने का अनुकरण करते हुए तुतली जुबान में बोलने का प्रयास करता है। धीरे–धीरे वह स्पष्ट शब्द उच्चारण करता है और संभाषण कौशल की अनौपचारिक शुरुआत हो जाती है। इसलिए श्रवण कौशल संभाषण कौशल के विकास के लिए आद्य प्रेरणा के रूप में काम करता है।

4. श्रवण से वाचन कौशल विकसित होता है–

बालक के जन्म के बाद परिवार में ही बच्चे के श्रवण और संभाषण इन दो कौशलों की अनौपचारिक शिक्षा शुरू हो जाती है। यह प्रक्रिया बहुत ही सहज और अनायास होती है। श्रवण से बच्चा धीरे–धीरे बोलना शुरू करता है और बोलने–सुनने की सक्षमता के कारण ही बच्चे की औपचारिक शिक्षा शुरू करने का फैसला

किया जाता है। बच्चे को औपचारिक शिक्षा देने के लिए आंगनवाड़ी और बाद में प्राथमिक स्कूल में दाखिल किया जाता है। श्रवण और संभाषण की क्षमता पर आंगनवाड़ी में बच्चा के श्रवण और संभाषण कौशल को विधिवत सक्षम करके उसे वाचन कौशल के लिए प्रेरित किया जाता है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चा वाचन कौशल को आत्मसात करने का प्रयास करता है। प्राथमिक कक्षाओं में अधिक तर श्रवण सामग्री पर बल दिया जाता है। बच्चा अपने अध्यपकों द्वारा उच्चारित ध्वनियों को दोहराते हुए श्रृत सामग्री को ग्रहण करता है। इससे उसका मन-मस्तिष्क नई-नई ध्वनियों के भाव एवं अर्थ को समझने लगता है। वह कक्षा में अध्यापकों से नए-नए- शब्दों को श्रवण कौशल द्वारा अवगत करता है और इससे धीरे-धीरे उसका पठन/वाचन कौशल भी विकसित होने लगता है।

5. श्रवण से लेखन कौशल विकसित होता है –

श्रवण कौशल की कामयाबी बालक के लेखन कौशल तक निरंतर चलती रहती है। श्रवण कौशल के कारण ही बच्चा नई-नई ध्वनियों को आत्मसात करके बोलना शुरू करता है। प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षिकों से स्पष्ट उच्चारण के कारण वे नए-नए शब्दों को उनके अर्थ एवं भाव के साथ ग्रहण करता है। इसके बाद वह वाचन और लेखन इन कौशलों को साथ-साथ ग्रहण करने लगता है। प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापको बच्चों को वर्णाक्षर और अंक को पढते-पढते लिखने और बार-बार दुहराने को सिखाते हैं। निरंतर श्रवण के कारण बालक का वाचन और लेखन दोनों कौशलों का विकास हो जाता है। धीरे-धीरे बच्चे में सभी भाषिक कौशलों को संतुलित विकास होता है तब बच्चा अध्यापक द्वारा पाठ पढाते समय महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को अपने बही में लिखने की क्षमता तक प्राप्त करता है। पाठ में आए कठिन और नए-नए शब्दों एवं उनके अर्थों को बही में लिखने के कारण उसके लेखन कौशल का भी समुचित विकास हो जाता है।

6. पारिवारिक सहजीवन को खुशहाल बनाना–

पारिवारिक जीवन में संवादों को महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवार यदि संयुक्त हो तो संवाद एवं श्रवण यह दो चीजें बेहद महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। परिवार के सदस्यों में बात का बतगंड बनाकर और गलत अर्थ निकालकर झगड़े किए जाते हैं। श्रवण की क्षमता उचित न होने के कारण ही बहुत से झगड़े होते हैं। झगड़ों के कारण रिश्तों में मनमुटाव आता है और घर का माहौल अशांत हो जाता है। परिवार में एक-दूसरे को सम्मान देकर सभी की बातों एव मतों को शांत बैठकर सुनना जरूरी है। उचित संभाषण और श्रवण के कारण सदस्यों के बीच भावनिक एवं वैचारिक बातों का आदान-प्रदान होता है और रिश्तों में प्रेम एवं सम्मान बढता है। परिवार के सभी सदस्यों ने इकट्ठा बैठकर रेडियो, दूरदर्शन आदि के कार्यक्रमों को श्रवण करने के कारण विभिन्न कलाओं का रस्वादन करने के साथ-साथ सदस्यों में सौंदर्यानुभूमि बढने में सहायता होती है। श्रवण कौशल पारिवारिक जीवन को खुशहाल बनाने में सहायक होता है।

7. श्रवण कौशल से व्यक्तित्व विकास होता –

श्रवण कौशल के द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को निखार सकता है। सभी भाषिक कौशल मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के लिए बेहद जरूरी होते हैं। व्यक्ति अपने अभिप्राय एवं मतों को श्रवण कौशल के कारण ही योग्य तरीके से पेश कर सकता है। सर्वश्रृत है कि जो अच्छा श्रोता होता है वही एक अच्छा वक्ता बन सकता है। हमारे कान जितना भी अच्छा सुनेंगे वह हमारे संभाषण एवं लेखन में उतर आएगा। इसलिए तो भारतीय संस्कृति

में गर्भसंस्कार में माता को अच्छा सुनने को कहा जाता रहा है। व्यक्ति ने अगर अच्छा सुनकर कुछ ग्रहण ही नहीं किया हो, तो उसे समाज के सामने अच्छी बातें रखना भी नहीं आएगा। श्रवण अच्छा न होने के कारण ही बहुत से लोग समाज के सामने आत्मविश्वास से अपना पक्ष नहीं रख पाते। श्रवण के कारण ही व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि हो जाती है। जैसे- किसी संगोष्ठी में आए विद्वान का एक मार्गदर्शनपूर्ण भाषण सुनने से हम 50 किताबों के पढने-समझने का ज्ञान हासिल करके अपने व्यक्ति के विकास में उसका उपयोग कर सकते हैं। इसकारण व्यक्तित्व विकास एवं ज्ञान की वृद्धि के लिए अच्छा एवं सार्थक श्रवण बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

8. श्रवण कौशल से सामाजिक सौहार्द का विकास होता है -

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और इसी कारण ही उसका भाषिक शिक्षण सफल होता है। श्रवण कौशल सामाजिक सौहार्द निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस प्रकार बुरी संगत और बुरे श्रवण के कारण हमारा अहित होता है उसी प्रकार से अच्छी संगत और अच्छे श्रवण से समाज को जीने का सही मार्गदर्शन मिलता है। जैसे- किसी विद्वान का मार्मिक भाषण सुनकर करोड़ों लोगों का प्रबोधन हो जाता है और वे जीवन के गलत मार्ग को छोड़ देते हैं। इससे सामाजिक संबंधों में दृढता आ जाती है। सामाजिक दंगे-फसादों के समय गलत खबरों एवं अफवाहों से समाज में संकट निर्माण होता है तब सामाजिक सद्भाव रखने वाले नेता लोगों को अमन-शांति की दुहाई देकर मानवता की सिख देते हैं। नेता के सामाजिक सहिष्णुता एवं सौहार्द की बातों को सुनने का प्रभावी असर होता है और दंगे-फसाद बंद करके लोग शांतिपूर्वक रहने लगते हैं। भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई तो श्रवण और सामाजिक सौहार्द का बहुत बड़ा उदाहरण माना जा सकता है। स्पष्ट है कि श्रवण के कारण ही समाज में परस्पर साहचर्य और भाईचारा बढता है।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

(अ) सही विकल्प चुनिए्।

1. **भाषिक शिक्षण के लिए छात्रों को कितने भाषिक कौशलों को सीखना होता है?**

   अ) पाँच ब) चार क) दो ड) तीन

2. **श्रवण की प्रक्रिया में एक वक्ता होता है तो, दूसरा व्यक्ति कौन होता है?**

   अ) श्रोता ब) शिक्षक क) विद्यार्थी ड) चपरासी

3. **श्रवण कौशल में शरीर का कौनसा ज्ञानेंद्रिय काम करता है?**

   अ) आँख ब) सिर क) कान ड) हाथ

4. **श्रवण कौशल तब घटित होता है, जब बालक यह व्यवस्थित करते हैं और याद करते हैं कि क्या सुना गया है।'' यह श्रवण कौशल की परिभाषा किसकी है?**

   अ) डिसेंट ब) बेझेंट क) डॉ. भोलानाथ तिवारी ड) वाई. ए. अय्यर

5. **भाषा विद्वानों के अनुसार मनुष्य रोजाना अपने क्रियाशील अवस्था में कितने प्रतिशत समय श्रवण करने में खर्च करता है?**

   अ) 52 ब) 42 क) 32 ड) 22

6. एक अच्छा वक्ता बनने के लिए पहले एक अच्छा क्या होना जरूरी है।

अ) गायक ब) शिक्षक क) श्रोता ड) नायक

7. श्रोता और वक्ता की अंतरक्रिया पर आधारित श्रवण के कितने भेद होते हैं?

अ) दो ब) तीन क) चार ड) पाँच

8. श्रुत सामग्री को ध्यानपूर्वक सुनकर उसके मुख्य तत्वों, विचारों, आदेशों-निर्देशों तथा वार्तालाप के संकेतों को ग्रहण करना, यह श्रवण का कौनसा प्रकार है?

अ) अवधानात्मक श्रवण ब) रसात्मक श्रवण

क) विश्लेषणात्मक श्रवण ड) अंतरक्रियात्मक संबंध

9. वक्ता और श्रोता की अंतरक्रियात्मक संबंध पर आधारित बातचीत दौरान होने वाली श्रवण प्रक्रिया कौनसे श्रवण प्रकार में आती है?

अ) अवधानात्मक श्रवण ब) रसात्मक श्रवण

क) विश्लेषणात्मक श्रवण ड) परस्पर संवादात्मक श्रवण

10. रेडियो या टेलीवीजन पर संगीत कार्यक्रम सुनना, श्रवण का कौनसा प्रकार है।

अ) अपरस्पर संवादात्मक श्रवण ब) रसात्मक श्रवण

क) विश्लेषणात्मक श्रवण ड) परस्पर संवादात्मक श्रवण

(आ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. 'श्रवण' शब्द संस्कृत भाषा के ...... धातु से बना है।

अ) श्र ब) श्रव क) श्रृति ड) श्रण

2. 'श्रवण कौशल' को अंग्रेजी में...........कहा जाता है।

अ) Noice Skill ब) Shravan Skill क) Listing Skill ड) Reading Skill

3. श्रवण कौशल दूसरे लोगों के संदेशों को प्राप्त करने और उनका जवाब देने की एक संवादात्मक प्रक्रिया है।'' श्रवण कौशल की यह परिभाषा विद्वान...........की है।

अ) डिसेंट ब) रोनाल्ड एडलर क) डॉ. भोलानाथ तिवारी ड) सीफ्रेडरिक

4. -------- के मतानुसार मनुष्य कान के माध्यम से जो कुछ भी श्रवण करता है इसमें से 50 प्रतिशत ही उसके स्मरण में रहता है।

अ) डिसेंट ब) रोनाल्ड एडलर क) निकोलस राल्प ड) सी. फ्रेडरिक

5. बालक के भाषिक शिक्षण की पहली सीढी-------- कौशल होता है।

अ) श्रवण ब) वाचन क) संभाषण ड) लेखन

6. श्रवण कौशल की सफलता-------- पर निर्भर होती है।

अ) श्रोता के अवधान ब) श्रोता के सुंदरता

क) श्रोता की शिक्षा ड)श्रोता की आयु

7. श्रवण कौशल के प्रमुख -------- भेद है।

अ) पाँच ब) तीन क) चार ड) दो

8. गर्भसंस्कार श्रवण के संदर्भ में महाभारत के --------पात्र की कथा सर्वपरिचित है।

अ) अर्जुन ब) अभिमन्यु क) अश्वत्थामा ड) कर्ण

9. कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक ----- है तो विद्यार्थी ------होता है।

अ) वक्ता, श्रोता ब) अमीर,गरीब क) याचक,दाता ड) श्रोता, वक्ता

10. कक्षा में अध्यापक द्वारा लयबद्ध तरीके कविता सुनना, यह .. श्रवण का प्रकार है।

अ) अवधानात्मक श्रवण ब) रसात्मक श्रवण

क) विश्लेषणात्मक श्रवण ड) परस्पर संवादात्मक श्रवण

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

* श्रवण कौशल सुनकर अर्थ ग्रहण करना

* **अन्योन्याश्रित-** एक-दूसरे पर निर्भर

* **अवधान** - एकाग्र चित्त

* **रसात्मक** - रसयुक्त, आनंदायी, सुंदर

* **श्रुत सामग्री-** सुनी जाने वाली सामग्री

* **ज्ञानेंद्रिय-** कान, नाक, त्वचा, आँखे, मस्तिष्क आदि।

* **श्रुतलेख-** सुने हुए को लिखना

* **विश्लेषणात्मक -** विश्लेषण प्रक्रिया के अनुरूप

* **परस्पर -** एक-दूसरे के साथ

* **स्वाध्याय -** विषय का अध्ययन

* **प्रयुक्त -** प्रयोग किया गया, काम में लगाया हुआ

* **संप्रेषण -** भेजना, पहुँचाना

* **अवधान -** ध्यान, मनोवेग

* **संवादात्मक** - संवाद के रूप में

* **सारांश -** सार तत्त्व

* **चरण -** सीढी (Step)

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) सही विकल्प चुनिए प्रश्न के उत्तर–

1) ब) चार

2) अ) श्रोता

3) क) कान

4) अ) डिसेंट

5) ब) 42

6) क) श्रोता

7) अ) दो

8) अ) अवधानात्मक श्रवण

9) ड) परस्पर संवादात्मक श्रवण

10) अ) अपरस्पर संवादात्मक श्रवण

आ) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए प्रश्न के उत्तर–

1) अ) श्रृ

2) क) Listing Skill

3) ब) रोनाल्ड एडलर

4) क) निकोलस राल्प

5) अ) श्रवण

6) अ) श्रोता के अवधान

7) ब) तीन

8) ब) अभिमन्यु

9) अ) वक्ता, श्रोता

10) ब) रसात्मक श्रवण

1.7 सारांश :

1) 'श्रवण' शब्द संस्कृत भाषा के 'श्रु' धातु से बना है जिसका अर्थ है सुनने की क्रिया अथवा ध्यानपूर्वक सुनना। अतः श्रवण शब्द का अर्थ सही ढंग से सुनने की क्रिया हो जाता है। 'कौशल' का अर्थ है ठीक तरह से काम करने की योग्यता या दक्षता। इस प्रकार श्रवण कौशल का अर्थ सही ढंग से सुनने की क्षमता से हो जाता है। अंग्रेजी में इसे 'Listening Skill' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

2) श्रवण कौशल के उद्देश्य और स्वरूप के आधार पर श्रवण के विभिन्न प्रकार किए जाते हैं। विद्वानों ने श्रवण के मूलत: तीन प्रकार होते हैं – 1) अवधानात्मक श्रवण 2) रसात्मक श्रवण और 3) विश्लेषणात्मक श्रवण। इसके साथ ही अंतरक्रिया के आधार पर भी श्रवण के दो प्रमुख प्रकार होते हैं– 1) परस्पर संवादात्मक श्रवण 2) अपरस्पर संवादात्मक श्रवण ।

3) 'अवधानात्मक श्रवण' का अर्थ है, ध्वनियों को सुनने और उन्हें समझने की क्षमता। इसमें श्रुत सामग्री को ध्यानपूर्वक सुनकर उसके मुख्य तत्वों, विचारों, आदेशों-निर्देशों तथा वार्तालाप के संकेतों को ग्रहण करना पड़ता है। 'रसात्मक श्रवण' में उचित स्वर, अनुतान, गति, भाव भंगिमा एवं लहजे के साथ सुनाई गई अथवा पढ़ी गई श्रृत सामग्री में श्रोता द्वारा आनंदानुभूति करता है, इसे ही 'रसात्मक श्रवण' कहा जाता है। जैसे- कविता में अध्यापक द्वारा कविता का सस्वर वाचन।

4) 'विश्लेषणात्मक श्रवण' एक महत्त्वपूर्ण श्रवण शैली है जिसमें श्रृत सामग्री का सूक्ष्मता एवं गहराई के साथ विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषणात्मक श्रवण श्रृत सामग्री के समझने, मूल्यांकन करने और पूर्व जानकारी पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता को दर्शाता है। इसलिए श्रुत सामग्री पर श्रोता तुलनात्मक दृष्टि से विचार करता हुआ अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उनका मूल्यांकन करके निष्कर्ष निकलता है।

5) श्रोता और वक्ता के अंतरक्रिया के आधार पर भी श्रवण कौशल के दो उप प्रकार होते हैं- १. परस्पर संवादात्मक श्रवण और २. अपरस्पर संवादात्मक श्रवण। 'पररस्पर संवादात्मक श्रवण' को अंग्रेजी में Interactive Listening कहा जाता है। इसमें वक्ता और श्रोता संवादात्मक अंतरक्रिया होती है। जैसे- कक्षा में शिक्षक और छात्र के बीच शिक्षण की प्रक्रिया होना। 'अपरस्पर संवादात्मक श्रवण' को अंग्रेजी में इसके लिए इसके लिए Non Interactive Listening कहा जाता है। इसमें श्रोता अपनी बात को वक्ता तक पहुँचा नहीं पाता, ऐसे श्रवण को अपरस्पर संवादात्मक श्रवण कहा जाता है। जैसे- रेडियो कार्यक्रम सुनना, टी.वी पर महान व्यक्ति का साक्षात्मकार सुनना, संगोष्ठियों में विद्वानों का व्याख्यान सुनना आदि।

6) प्रभावी श्रवण एक प्रक्रिया है, जिसके लिए श्रोता का सजग और समग्र रूप से अवधान स्थापित करना आवश्यक होता है। श्रवण की इस प्रभावी प्रक्रिया के कारण ही उसकी कुछ विशेषताएँ दृष्टिगत होती है- श्रवण कौशल में श्रोता की श्रवणेन्दिय (कान) का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। श्रोता को ध्वनि एवं भाषा का ज्ञान होना जरूरी होता है । श्रोता में मूल ध्वनि एवं ध्वनि समूहों में अंतर करने की योग्यता होनी आवश्यक है। श्रोता को सुनने में रूचि एवं अवधान क्षमता (एकाग्रचित्त होकर संयम से सुनना) होनी जरूरी है। श्रोता को श्रवण सामग्री के अर्थ एवं भाव को समझने का ज्ञान होना जरूरी है। श्रोता में वक्ता के भावाभिव्यक्ति के अनुसार अर्थबोध होने की क्षमता होना जरूरी है।

7) श्रवण कौशल का महत्त्व श्रोता के श्रवण करने के उद्देश्य पर ही निर्भर होता है। वह इस प्रकार है- श्रवण कौशल भाषा शिक्षण की पहली सीढी होता है। श्रवण कौशल के कारण संभाषण, वाचन और लेखन इन भाषिक कौशलों के विकास में सहायता मिलती है। श्रवण कौशल से व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलती है। श्रवण कौशल से पारिवारिक जीवन सुखी एवं खुशहाल रखने में मदद मिलती है। इससे सामाजिक सौहार्द एवं भाईचारा बढने में मदद मिलती है।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1) श्रवण कौशल का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

2) श्रवण कौशल के प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

3) अवधानात्मक श्रवण क्या है?

4) रसात्मक श्रवण किसे कहा जाता है?

5) विश्लेषणात्मक श्रवण किसे कहा जाता है?

6) श्रोता और वक्ता के अंतरक्रिया पर आधारित श्रवण कौशल के प्रकारों का विवेचन कीजिए।

7) श्रवण कौशल की विशेषताओं के मुख्य मुद्दे लिखिए।

8) श्रवण कौशल के महत्त्व के मुख्य मुद्दे लिखिए।

आ) दीर्घोत्तर प्रश्न :

1) 'श्रवण कौशल' का अर्थ, परिभाषा स्पष्ट करके श्रवण कौशल के प्रमुख प्रकारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

2) 'श्रवण कौशल' का अर्थ, परिभाषा स्पष्ट करके श्रवण कौशल की विशेषताओं का सविस्तर विवेचन कीजिए।

3) 'श्रवण कौशल' का अर्थ, परिभाषा स्पष्ट करके श्रवण कौशल के महत्त्व का सविस्तर विवेचन कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. अपने परिसर की आंगनवाड़ी में बच्चों के श्रवण कौशल विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों पर परियोजना बनाएँ।
2. अपने परिसर की किसी माध्यमिक स्कूल की कक्षाओं में जाकर हिंदी कविताओं का सस्वर वाचन कीजिए और श्रवण के प्रभावों पर निष्कर्ष निकाले।
3. अपने महाविद्यालय में आयोजित किसी भी पाँच कार्यक्रमों के प्रमुख अतिथि के भाषण के आधार पर विश्लेषणात्मक श्रवण पर परियोजना तैयार कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) डॉ. हरदेव बाहरी - अच्छी हिंदी कैसे सीखे, अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022 ई.

2) योगेंद्र जीत - हिंदी भाषा शिक्षण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, हॉस्पिटल रोड, आगरा, सं. 2014 ई.

3) भगवतीप्रसाद शुक्ल - हिंदी उच्चारण और वर्तनी, आर्या बुक्स पब्लिकेशन, दिल्ली, सं. 1986 ई

4) डॉ. उमा मंगल - हिंदी शिक्षण, बुकमैन प्रकाशन- दिल्ली, सं. 2018 ई.

5) डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषा विज्ञान, किताब महाल प्रकाशन-इलाहाबाद, सं. 2012 ई.

6) डॉ. अंबादास देशमुख - प्रयोजनमूलक हिंदी आधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, सं. 2018 ई.

❑ ❑ ❑

इकाई II

हिंदी भाषा : श्रवण कौशल्य

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 श्रवण कौशल विकसित करने की विधि

1.3.2 श्रवण कौशल विकास की प्रणाली / प्रक्रिया

1.3.3 श्रवण कौशल के गुण और दोष

1.3.4 श्रवण कौशल का उद्देश्य

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

१.१ उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है-

1. छात्रों को श्रवण कौशल विकसित करने की विधियों से परिचित करना।
2. छात्रों को श्रवण कौशल विकास की प्रक्रिया या प्रणाली से परिचित करना।
3. छात्रों को श्रवण कौशल के गुणों से परिचित करना।
4. छात्रों को श्रवण कौशल के दोषों से परिचित करना।
5. छात्रों को श्रवण कौशल के उद्‌देश्यों से परिचित करना।

1.2 प्रस्तावना :

भाषिक शिक्षण में श्रवण कौशल पहला एवं महत्त्वपूर्ण चरण है। इसलिए श्रवण कौशल को मनुष्य के भाषा शिक्षण की आधारशिला माना जाता है। इसके पूर्व हमने श्रवण के अर्थ एवं उनके प्रकारों का सैद्धांतिक विवेचन का अध्ययन किया है। इस इकाई में श्रवण कौशल को विकसित करने वाली विभिन्न विधियाँ, श्रवण कौशल के विकास की प्रणाली या प्रक्रिया, श्रवण कौशल के गुण, श्रवण कौशल के दोष और श्रवण कौशल के उद्देश्यों का अध्ययन करने वाले हैं। एक अध्यापक के लिए भाषिक कौशलों की सैद्धांतिक जानकारी होना जरूरी होता है। इन कौशलों के अंतरक्रियात्मक संबंधों और प्रक्रिया की जानकारी के बाद ही हम शिक्षार्थियों के अंदर भाषिक कौशलों का विकास करने में सफल हो सकेंगे। शिक्षार्थियों को एक अच्छा श्रोता बनाने के लिए अध्यापक को श्रवण की विधियाँ एवं प्रणालियों का प्रर्याप्त ज्ञान होना जरूरी है।

1.3 विषय विवरण :

1.3.1 श्रवण कौशल विकसित करने की विधि :

श्रवण कौशल में सामने वाले व्यक्ति की भाषा को सुनकर उसके अर्थ एवं भाव को समझने की योग्यता एवं निपुणता महत्त्वपूर्ण होता है। बालकों में इस कौशल के विकास हेतु विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। बालक में श्रवण कौशल का विकास अर्थात् उसे मौखिक भाषा सुनकर उनके अर्थ एवं भाव को समझने की क्रिया में निपुण करना। इसलिए उसके सुनने के संदर्भ में आवश्यक तत्त्वों को विकास करना जरूरी होता है। श्रवण कौशल का विकास एक-दो दिन, महीने या वर्ष का कार्य नहीं बल्कि यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक के साथ संबंधित शिक्षार्थियों को भी निरंतर प्रयास करना जरूरी होता है। श्रवण कौशल का विकास बच्चों में प्राथमिक शिक्षा से शुरू हो जाता है । अध्यापक बच्चे के श्रवण कौशल के विकास के लिए श्रवण की विभिन्न विधियों का प्रयोग करता है। अत: शिक्षक या अध्यापक द्वारा शिक्षार्थी के श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए जिन-जिन पद्धतियों का इस्तेमाल किया जाता है, उन्हें श्रवण कौशल विकास की विधियाँ कहा जाता है। विद्यालय में श्रवण कौशल का विकास सीमित रूप में होता है। लेकिन शिक्षक बालकों को सुनने में निपुण बनाने के कारण वह समाज में अपने श्रवण कौशल का समुचित विकास करने में सक्षम बन जाता है। विद्वानों ने श्रवण कौशल विकास की प्रमुख छह विधियाँ बताई है्। वह इसप्रकार है-1. सस्वर पाठ 2. प्रश्नोत्तर विधि 3. वाद-विवाद विधि 4. भाषण विधि 5. कहानी कहना या सुनना 6. श्रुत लेख विधि।

श्रवण कौशल (शिक्षण) के विकास में सहायक विधियों का विस्तृत विवेचन इसप्रकार है

1. सस्वर वाचन :

श्रवण कौशल को विकसित करनेवाली विधियों में सर्वप्रथम स्थान सस्वर वाचन या सस्वर पाठ विधि का है। अंग्रेजी में इसे Recitation Method कहा जाता है। इस विधि में अध्यापक कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय स्वयं किसी कहानी या कविता का आदर्श वाचन करते हैं। शिक्षक के सस्वर और लयबद्ध वाचन का शिक्षार्थी के श्रवण पर अच्छा प्रभाव पडता है। शिक्षक जब पाठ सामग्री का सस्वर वाचन करते हैं तो सभी बच्चे शब्दों एवं उनकी ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण, स्वरों के उतार-चढाव, बलाघात, पढने की गति आदि को ध्यानपूर्वक सुनते हैं तथा समझते है्। इसके बाद वे खुद उस तरह उच्चारण करना भी सीखते हैं। जैसे- प्राथमिक कक्षाओं में

बच्चों को शिक्षक द्वारा किसी कविता को बार–बार दोहराने के लिए कहा जाता है या गणित के पहाडे स्वयं बार–बार कहकर बच्चों को दुहराने के लिए कहते हैं। छात्रों को सस्वर वाचन द्वारा सुनाना और फिर छात्रों को पढने के लिए कहना आदि की प्रक्रिया से छात्रों में श्रवण कौशल का संतुलित विकास होता है।

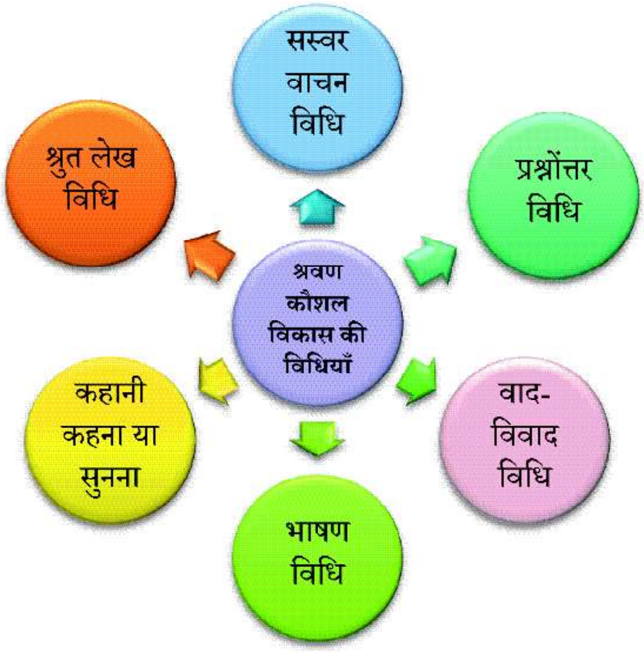

2. प्रश्नोत्तर विधि :

श्रवण कौशल विकास की दूसरी विधि है, प्रश्नोत्तर विधि। इसे अंग्रेजी में Question-Answer Method कहा जाता है। भारतीय शिक्षा परंपरा में प्राचीन काल से गुरूकुल शिक्षा पद्धति या आज की आधुनिक शिक्षा पद्धति में भी प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग हो रहा है। शिक्षक शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थियों के उचित अवधान स्थापित करने और पाठ के ऊपर उन्हें एकाग्रचित्त करने के लिए बच्चों को पाठ पर आधारित छोटे–छोटे प्रश्न पूछते हैं। इससे सभी विद्यार्थी अध्यापक की बातों को बहुत ही ध्यानपूर्वक सुनते हैं। छात्र हमेशा सावधान रहते हैं कि अध्यापक उनसे भी सवाल पूछ सकते हैं। जैसे–गुरूकुल शिक्षा पद्धति में गुरू के सामने बैठकर शिष्य उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनते और जिज्ञासा होने पर उनसे प्रश्नोत्तर करते। उपनिषदों का निर्माण इसका ही एक उदाहरण है। प्रश्नोत्तर विधि छात्रों में श्रवण कौशल विकसित करने की बहुत पुरानी और प्रभावी विधि मानी जाती है।

3. श्रुति लेख विधि :

श्रुति लेख का अर्थ है, सुनकर लिखना। श्रुति लेख विधि श्रवण कौशल का विकास करने वाले सबसे प्रचलिए एवं उपयोगी विधि मानी जाती है। अंग्रेजी में इसके Dictation Method कहा जाता है। इस विधि में छात्र अध्यापक द्वारा बताए जा रहे शब्दों एवं वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर लिखते हैं। अध्यापक की बातों को

ध्यान पूर्वक सुनने के बाद ही छात्र संबंधित शब्दों एवं वाक्यों को ठिक ढंग से लिख पाएंगे। ठिक ढंग से बिना सुने शब्द और वाक्य लिखेंगे तो उसमें वर्तनी और अर्थ के स्तर पर बहुत गलतियाँ हो जाती है। इसलिए श्रुति लेख के प्रभाव के कारण छात्र अगली बार शिक्षक जब श्रुतिलेख लिखवाते हैं तो वह शिक्षक की बातों को बहुत ही ध्यान से सुनते हैं जिससे उनका लेखन सही और शुद्ध हो जाता है।

4. भाषण / व्याख्यान विधि :

भाषण मूलत: संभाषण कौशल को विकसित करने का साधन है किंतु यह श्रवण कौशल का प्रशिक्षण देने में भी प्रयुक्त होता है। भाषण विधि को 'व्याख्यान विधि' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए Lecture Method शब्द प्रचलित है। इसमें अध्यापक व्याख्यान शुरू होने से पूर्व ही निर्देशित करते हैं कि सभी छात्र इसे ध्यानपूर्वक सुन क्योंकि इससे संबंधित उनसे प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनका उन्हें सही-सही उत्तर देना है। ऐसी स्थिति में छात्र शिक्षक के भाषण या व्याख्यान को एकाग्र चित्त होकर सुनते है। भाषाण की समाप्ति के बाद जब शिक्षक उनसे प्रश्ने पूछेंगे तो प्रश्नों के सही-सही जवाब पर भाषण या व्याख्यान विधि की सफलता को निर्धारित किया जाता है।

5. वाद-विवाद विधि :

वाद-विवाद विधि छात्रों के श्रवण कौशल विकास के साथ-साथ संभाषण कौशल विकास के लिए भी एक कारगर विधि मानी जाती है। इसे अंग्रेजी में Descussion Method कहा जाता है। छात्र जब वाद-विवाद में सहभाग लेता है तो वह दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनता है क्योंकि उसे विपक्ष के प्रश्नों के जवाब देना होता है। वाद-विवाद विधि में कक्षा के दो गुट में शामिल छात्रों के साथ-साथ उन्हें सुन रहे सभी बच्चों के श्रवण कौशल विकास का अभ्यास हो जाता है। यदि शिक्षक वाद-विवाद के समाप्त होने के बाद पूरी कक्षा को प्रश्न पूछता है तो उनके जवाब पर वाद-विवाद विधि के प्रभाव का परीक्षण किया जा सकता है।

6. कहानी विधि / कहानी कथन विधि :

प्राथमिक कक्षा से लेकर माध्यमिक कक्षाओं तक बच्चों को कहानी सुनना बहुत पसंद होता है। इसलिए अध्यापक बच्चों के श्रवण कौशल विकास के लिए कहानी विधि या कहानी कथन विधि का प्रयोग करते हैं। इसे अंग्रेजी में Story Telling Method कहा जाता है। बच्चों को कहानी सुनना बहुत आनंद देता है इसलिए शिक्षक अपने पाठ्यक्रम में शामिल पाठ्य सामग्री को कहानी कथन विधि में रूपांतरीत करते हैं जिससे छात्र उसे बहुत ही ध्यानपूर्वक सुनते हैं। कहानी समाप्त होने के बाद शिक्षक उसपर प्रश्न पूछकर उसकी प्रतिक्रिया को जान सकते हैं या किसी एक छात्र को उस कहानी को दोहराने के लिए कह सकते हैं। कक्षा का ही अपना मित्र कहानी सुनाता है तब सभी बच्चे उस कहानी को फिर से ध्यानपूर्वक सुनते हैं। इससे पता चलता है कि छात्रों ने कहानी ध्यानपूर्वक सुनी है या नहीं। शिक्षक द्वारा शुद्ध उच्चारण, गति-यति, बलाघात, भावपूर्ण तरीके से शिक्षार्थियों को कहानी, कविता आदि सुनाए जाने पर शिक्षार्थी इन साहित्यिक विधाओं का रस लेना सीखता है उसे आनंद मिलता है, एक बार सुनकर वह बारम्बार सुनाने का अनुरोध करता है। उससे श्रवण कौशल, भाव ग्रहण क्षमता, एकाग्रता का विकास होता है ।

7. श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग :

मूलत: यह श्रवण कौशल विकास की कोई स्वतंत्र विधि नहीं है। उपरोक्त छह विधियों को ही केवल श्रव्य-दृश्य माध्यमों की सहायता से छात्रों के श्रवण कौशलों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। इसमें

अध्यापक पॉवर पाईंट प्रेझेंटेशन स्क्रिन पर कविता, कहानी सुनाते हैं। जैसे- ग्रामोफोन पर कविता सुनाना, टेप रिकॉर्डर पर कहानी सुनाना, दूरदर्शन पर बालकों से संबंधित कार्यक्रम दिखाना। श्राव्य-दृश्य सामग्री के द्वारा बच्चों को पाठ्य सामग्री पढाई जाए तो बच्चे अधिक ध्यानपूर्वक उस सामग्री को ग्रहण करेंगे और बच्चों के श्रवण कौशल विकास में सहायता मिलेगी।

1.3.2 श्रवण कौशल विकास की प्रणाली/ प्रकिया :

श्रवण कौशल की प्रणाली या प्रक्रिया अर्थ है सुनने की चरण बद्ध प्रक्रिया से है। श्रवण कौशल का विकास प्रमुख रूप से हमारे सुनने की अंतरप्रक्रिया से संबंधित है जिसमें हमारे कान एवं मस्तिष्क की बहुत बड़ी भूमिका होती है। वस्तुत: श्रवण एक बहुत ही उलझी हुई और जटिल प्रक्रिया होती है। ध्यानपूर्वक सुनने पर ही श्रवण विकास की पूरी प्रक्रिया निर्भर होती है। समाज में अधिकांश लोग गुणवत्तापूर्ण श्रवण करते हैं। भाषा कौशल के विद्वानों का कहना है कि 42 प्रतिशत लोग ही अच्छा सुन सकते हैं अर्थात् वे श्रवण प्रक्रिया की गुणवत्ता से न्याय करते है्। श्रवण प्रक्रिया की निश्चित जानकारी न होने वाले लोगों का श्रवण बहुत ही निकृष्ट होता है और उसमें कई दोष पाए जाते हैं। प्रकृति को इंसान को कान एवं स्वर यंत्र तो दिया है लेकिन श्रवण एवं संभाषण कौशल को मनुष्य को प्रयासपूर्वक विकसित करना पड़ता है। श्रवण की कई स्तरों की प्रक्रिया से व्यक्ति का श्रवण कौशल विकसित हो पाता है। बेहरे व्यक्ति को छोड़कर सभी सुन सकते हैं लेकिन वे सभी अच्छे श्रोता नहीं हो सकते हैं। श्रवण कौशल की एक शास्त्रशुद्ध प्रक्रिया होती है, इसे प्रयोगों द्वारा भी सिद्ध किया जा चुका है। जैसे- एक कतार में सभी व्यक्तियों को खड़ा करके पहले व्यक्ति को कुछ बताया जाता है। पहले व्यक्ति के कान में कही गई श्रुत सामग्री अंतिम व्यक्ति तक आते हुए पूर्ण रूप से बदल चुकी होती है। अर्थात् श्रवण की प्रक्रिया सदोष होने के कारण पहले व्यक्ति ने जो सुना था वह अंतिम व्यक्ति तक पहुँच नहीं पाता। इसकारण श्रवण कौशल में श्रवण प्रक्रिया के सैद्धांतिक पक्ष को जानना बेहद जरूरी होता है। विद्वानों श्रवण कौशल की प्रक्रिया को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया है- 1. पूर्व श्रवण प्रक्रिया 2. मध्यम श्रवण प्रक्रिया और 3. पश्च श्रवण प्रक्रिया। इन तीनों का ज्ञान होने के बाद ही व्यक्ति के श्रवण कौशल का संतुलित विकास हो पाता है। व्यक्ति को इसके लिए निरंतर प्रयास करने होते हैं।

श्रवण कौशल विकास की प्रक्रिया

1. पूर्व श्रवण प्रक्रिया | **2. मध्य श्रवण प्रक्रिया** | **3. पश्च श्रवण प्रक्रिया**

- श्रोता के ज्ञान की पूर्व जाँच
- श्रोता की रूचि का ध्यान
- नए शब्दों की व्याख्या
- श्रोता के पूर्व श्रवण प्रभाव की जाँच

श्रवण प्रक्रिया तीन चरणों को निम्नांकित मुद्दों के आधार पर समझते हैं-

1. पूर्व श्रवण प्रक्रिया–

'पूर्व श्रवण' से तात्पर्य है– सुनने के पूर्व की स्थिति। श्रोता के सामने सुनाई जाने वाले सामग्री की प्रस्तावना करके उसका ध्यान आकर्षित करने की क्रिया को 'पूर्व श्रवण प्रक्रिया' कहा जाता है। वक्ता के सामने यह चुनौती होती है कि विभिन्न भागों में बँटा श्रोता का ध्यान उसकी श्रुत सामग्री की ओर लाना होता है। पूर्व श्रवण प्रक्रिया के पहले चरण पर ही श्रवण की सफलता या असफलता निर्धारित हो जाती है। इसकारण श्रवण कौशल विकास की प्रक्रिया में पूर्व श्रवण प्रक्रिया को अनन्यसाधारण महत्त्व दिया जाता है। अत: पूर्व श्रवण प्रक्रिया में निम्नांकित बातों को ध्यान वक्ता को रखना पड़ता है–

⁎ श्रोता के ज्ञान की पूर्व जाँच :

श्रवण प्रक्रिया पूर्ण रूप से वक्ता और श्रोता के बीच होने वाली अंतरक्रिया पर निर्भर होती है। इसलिए पूर्व श्रवण प्रक्रिया में वक्ता उसके सामने बैठे श्रोता के आयु, लिंग एवं उनके सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए अपने श्रुत सामग्री का नियोजन करना पड़ता है। श्रोता के ज्ञान के पूर्व जांच के लिए वह श्रोताओं से कुछ प्रश्न पूछता है और उनके उत्तर पर श्रोता वर्ग के ज्ञान की पूर्व जाँच कर लेता है। श्रोता वर्ग के पूर्व ज्ञान की जाँच होने पर वक्ता अपने श्रुत सामग्री को प्रभावी ढंग से श्रोता तक पहुँचाने की प्रारंभिक स्थिति को पूरा करता है।

⁎ श्रोता वर्ग की रूचि का ध्यान रखना–

पूर्व श्रवण प्रक्रिया में वक्ता को हमेशा श्रोता को क्या पसंद है? और क्या पसंद नहीं ? इसका ध्यान रखना पड़ता है। वक्ता के सामने बैठे श्रोता वर्ग की आयु, लिंग और सामाजिक स्तर के अनुसार वक्ता को उनकी रूचि का अंदाजा बाँधकर ही बोलना पड़ता है। जैसे– एखाद जगह पर किसानों का सम्मेलन आयोजित किया गया है और वहाँ वक्ता कृषि संबंधी बातें न करके यदि वेदांत दर्शन की बातें करेगा तो वहाँ श्रवण की उचित प्रक्रिया नहीं हो पाएगी क्योंकि किसान वर्ग के पास वेदांत दर्शन के ज्ञान को समझने की परिपक्वता नहीं होगी। अत: श्रोता की रूचि का ध्यान श्रवण की प्रक्रिया का प्रभावी कारक माना जाता है।

⁎ नए शब्दों को समझाने की कोशिश करना–

पूर्व श्रवण प्रक्रिया में वक्ताओं द्वारा बताए जा रहे नए–नए और कठिन शब्दों की सरल और सुबोध व्याख्या करना बहुत आवश्यक होता है क्योंकि कठिन और नए–नए शब्दों का अर्थबोध न होने के कारण श्रोता की श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है और उसका ध्यान भटक जाता है। श्रोता को यदि नए शब्द समझाए नहीं जाएंगे तो वह उनमें ही उलझकर रह जाएगा। जैसे– कक्षा में अध्यापक कोई भी पाठ पढाते समय नए और कठिन शब्दों की अर्थ के साथ व्याख्या करते हैं। क्योंकि कठिन शब्दों के अर्थ को जानने के बाद छात्र का व्यवधान बना रहे। इसलिए वक्ता को हमेशा कठिन एवं नए शब्दों को सरल अर्थों में श्रोता को समझाने की कोशिश करनी चाहिए जिससे श्रोता का ध्यान उनके बातों में निरंतर बना रहे।

⁎ श्रोता के पूर्व श्रवण प्रभाव की जाँच –

पूर्व श्रवण प्रक्रिया की अंतिम स्थिति में वक्ता श्रोताओं के बोध को जाँचने के लिए उन्हें बीच–बीच में सवाल पूछता रहता है जिससे उनके बोध की जाँच की जा सके। कुछ सवालों के द्वारा वक्ता श्रोता के बोध का ज्ञान करते हुए उन्हें श्रवण की मध्य प्रक्रिया तक पहुँचाता है। जैसे– किसी प्रवचन या कीर्तन में महाराज बार–बार लोगों को खड़ा करके सवाल पूछते हैं जिससे उनके श्रवण के प्रभाव को जाने का उद्देश्य होता है।

2. मध्य श्रवण प्रक्रिया :

श्रवण प्रक्रिया की यह दूसरी स्थिति होती है। मध्य श्रवण प्रक्रिया में वक्ता श्रोताओं को श्रुत सामग्री से जोड़ने में सफल हो जाता है। श्रवण प्रक्रिया की मध्य स्थिति में वक्ता बोलता है और श्रोता केवल सुनता है। यहाँ वक्ता और श्रोता के बीच कोई अंतरक्रिया नहीं होती। इसमें ध्वनि तरंगें श्रोताओं के बाहरी कान से अंदर जाना शुरू होती हैं, मध्य कान की हड्डियों से होते हुए फिर आंतरिक कान में विद्युत संकेतों में बदल दी जाती है।, जिन्हें मस्तिष्क के द्वारा संसाधित किया जाता है।

मध्य श्रवण प्रक्रिया

3. पश्च श्रवण प्रक्रिया–

पश्च श्रवण प्रक्रिया से तात्पर्य हैं– सुनने के बाद की स्थिति या सुनने के बाद की प्रभावक स्थिति। श्रवण प्रक्रिया के अंतिम आवस्था को ही पश्च श्रवण प्रक्रिया कहा जाता है। इसमें श्रोता के श्रवण कौशल के परिणामों की वक्ता जाँच करता है। समस्त विषय वस्तु की पुनरावृत्ति द्वारा प्रश्नों के आधार पर उनकी उपलब्धि की जांच करना, साथ ही सन्देश या कठिनाई की स्थिति में उसका स्पष्टीकरण दिया जाता है। जैसे– कक्षा में अध्यापक द्वारा सस्वर वाचन करते हुए कविता या कहानी सुनाने के बाद छात्रों को विविध सवाल पूछे जाते हैं। सवालों के उत्तरों पर शिक्षिक छात्रों के श्रवण कौशल की जाँच का परीक्षण करता है।

1.3.3 श्रवण कौशल के गुण और दोष :

गुवत्तापूर्ण और अच्छे तरीके से सुनने के कारण बच्चा ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को समझ पाता है। श्रवण कौशल भाषा के अन्य कौशलों को सुधारने का प्रमुख आधार है। इससे ध्वनियों को समझने की, उनमें अंतर कर पाने की और अर्थबोध करने की क्षमता का विकास होता है। इसलिए श्रवण को भाषा शिक्षण की आधारशिला भी कहा जाता है। इसलिए श्रवण कौशल के सर्वंकष अध्ययन के लिए उसके गुण और दोषों की जानकारी लेना भी बहुत जरूरी है। अत: श्रवण कौशलों के गुण इसप्रकार है।

⁕ श्रवण कौशल के गुण :

बच्चे पैदा होते ही उसके श्रवण कौशल से जुड़ी संरचना कार्यरत हो जाती है। बच्चा यदि जन्म के बाद तुरंत रोता है तो उसकी श्रवण की यंत्रणा ठीक होने की बात चिकित्सक कहते हैं। विज्ञान के अनुसार बच्चा जन्म के बाद ही सुनना शुरू करता है लेकिन हमारे समाज में प्राचीन काल से गर्भस्थ शिशु के भी सुनने और गर्भसंस्कार की बात कही जाती है। बच्चा धीरे–धीरे ध्वनियों के अंतर को समझने लगता है और जो उसे मन मस्तिष्क पर संसाधित होती है। ये ध्वनियाँ ही धीरे–धीरे बच्चे के भाषा के ज्ञान का आधार बनती है। अत: श्रवण के कुछ गुण इस प्रकार है–

1. श्रवण कौशल भाषा शिक्षण की आधारशिला होता है जिसके कारण भाषा कौशल के संभाषण, वाचन और लेखन इन अन्य तीन कौशलों का विकास होता है। इसकारण श्रवण को भाषा शिक्षण के अन्य कौशलों की आधारशीला माना जाता है।
2. श्रवण कौशल से बच्चे में ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को पहचानने की क्षमता निर्माण होती है। जैसे- जन्म के बाद बच्चा केवल माँ और परिवार के सदस्यों की ध्वनियों को जानता-समझता है। यह उसके श्रवण कौशल के विकास की प्राथमिक सीढी होती है। लेकिन आँगनबाड़ी से प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा में अनौपचारिक रूप में बच्चा विभिन्न ध्वनियों एवं उनके अंतर को समझने लगता है। विभिन्न शब्दों एवं उनके अर्थ को समझने लगता है।
3. श्रवण कौशल के विकास के कारण शिक्षार्थी नए-नए शब्दों एवं उनके अर्थबोध से परिचित हो जाता है। जिससे उसकी शब्द संपदा बढती है और सुने हुए विषय को समझने में उसे श्रवण कौशल की सहायता मिलती है।
4. श्रवण कौशल की प्रकिया से शिक्षार्थी में क्रम से समझने की योग्यता निर्माण होती है। उसमें स्मरण योग्यता एवं क्रम को समझने की क्षमता का विकास होता है।
5. श्रवण कौशल के कारण शिक्षार्थी का अभिव्यक्ति कौशल भी बढता है। जो अच्छा श्रोता होता है वही कल अच्छा वक्ता बनता है। श्रवण सामग्री को ठिक ढंग से आत्मसात करने के कारण बच्चे में प्रश्नों के उत्तर देने या प्रश्न पूछने की क्षमता निर्माण हो जाती है।
6. श्रवण कौशल के संतुलित विकास के कारण हम दूसरों के दृष्टिकोण एवं विचार को समझने लगते हैं।
7. श्रवण कौशल हमारे संचार एवं संप्रेषण की क्षमता का विकास करता है जिससे व्यक्तियों के बीच विश्वास निर्माण होता है।
8. श्रवण कौशल के कारण गलत धारणाओं को दूर करके रिश्तों को सुधारने में मदद होती है।
9. श्रवण कौशल आत्मसात करने के कारण सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक क्षेत्रों में दूसरों की बातों को सुनना, उन्हें सम्मान देने से सामाजिक माहौल भी अच्छा बनता है।
10. श्रवण कौशल के कारण ही गलतफहमियाँ दूर होकर सामाजिक सौहार्द एवं सामाजिक सद्भाव में बढोतरी होती है।

*** श्रवण कौशल के दोष :**

श्रवण कौशल की प्रक्रिया वक्ता और श्रोता के बीच होती है। दोनों के बीच संवाद होने के लिए श्रवण की प्रक्रिया प्रभावी होना जरूरी है। श्रवण कौशल पूर्ण रूप से श्रोता के अवधान पर निर्भर होने वाली प्रक्रिया है। अत: श्रवण कौशल के विकास की प्रक्रिया को बाधित करने वाले सभी तथ्य या बातें श्रवण कौशल के लिए दोष के रूप देखी जाती है। ध्वनि का उचित वहन में समस्या, शब्दों के भाव एवं अर्थ बोध के समस्या आदि से प्रभावी श्रवण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। अत: श्रवण कौशल विकास को बाधित करने वाले दोष इसप्रकार है-

1. ध्वनि या तरंगों के वहन में बाधा निर्माण होना। श्रवण की प्रक्रिया मूल रूप से ध्वनि के वहन पर आधारित होती है। वक्ता और श्रोता के बीच यदि ध्वनि का ही वहन उचित तरीके से नहीं हो रहा है, तो श्रवणप्रक्रिया

में बाधा पहुँचती है। जैसे- कक्षा में अध्यापक बच्चों को पढा रहे हैं और इतने में स्कूल के परिसर से बहुत गाजे-बाजे के साथ किसी की शादी की बारात जा रही है तो अध्यापक की आवाज अर्थात् ध्वनि छात्रों के कानों तक ठिक तरीके से पहुँच नहीं पाएगी। इससे श्रवण प्रक्रिया में बाधा निर्माण हो जाती है।

2. वक्ता के बोलने की गलत पद्धति भी श्रवण कौशल प्रक्रिया में एक दोष माना जाता है। श्रोता का श्रवण पूर्ण रूप से वक्ता के मुख से उच्चरित ध्वनियों पर निर्भर होता है। इसलिए श्रवण प्रक्रिया में वक्ता के बोलने की पद्धति बेहद जरूरी है। वक्ता को बहुत ही तेज, अस्पष्ट या बहुत ही धीमा नहीं बोलना चाहिए। वक्ता को भाषा की ध्वनियाँ, शब्द, अर्थ एवं भाव आदि का अच्छा ज्ञान होना जरूरी है। बोलते समय भाषा की लयता, स्वराघात, बलाघात, उतार-चढाव आदि का ध्यान वक्ता को रखना पड़ता है।

3. श्रोता की अरूचि श्रवण कौशल प्रक्रिया को पूर्ण बाधित कर देते है। क्योंकि श्रोता का श्रवण प्रक्रिया से पूरे लगन और रूचि के साथ जुड़ना महत्त्वपूर्ण माना जाता है। श्रोता को अगर अरूचि हो तो वह वक्ता की बातों पर शारीरिक एवं मानसिक रूप से एकाग्रचित्त नहीं हो पाता। इससे वह श्रवण प्रक्रिया से पूर्ण रूप से टूट जाता है। श्रोता की अरूचि के कारण वह वक्ता की बातों की ओर पूर्ण रूप से अनदेखा करता है जिससे श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है।

4. वक्ता की श्रुत सामग्री से ज्यादा अन्य बातों का मूल्यमापन करना। जैसे श्रोता के हाव-भाव, वेशभूषा, उसकी शारीरिक अंग विक्षेप आदि पर श्रोता का ज्यादा ध्यान देने से श्रवण प्रक्रिया बाधित होती है। वक्ता के अधकचरे विचारों एवं तथ्यों से भी श्रोता उसकी बातों को अनसुना करते हैं और श्रवण बाधित हो जाता है।

5. श्रोता के अति संवेदनशील होने से वह अपने विचारों में खो जाता है। वक्ता के बातों से भावनिक ताल-मेल न बिठाने के कारण उसकी श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है। श्रोता आत्ममग्न होकर सोचने लगता है कि वक्ता मेरी बातों को तवज्जो क्यों नहीं दे रहा है। क्या मेरे विचार आऊटडेटेड है? ऐसे भावुक प्रश्नों से घीरने से श्रोता का श्रवण ठिक तरीके से नहीं हो पाता और श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है।

6. श्रोता की शब्द, उनके अर्थबोध और विचारों को लेकर सीमित समझ से भी श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है। वक्ता के विचारों से उचित ताल-मेल न बिठाने के कारण उसे यह बातें बोझिल लगने लगती है और उसका ध्यान टूट जाता है।

7. वक्ता के बातों की टिप्पणियों का लेखन करने से श्रोता व्याख्यान के दौरान पीछे रहता है, इससे श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है। लेखन में मग्न होने के कारण वक्ता के हर बातों का वह ठिक तरीके से श्रवण नहीं कर पाता इससे श्रवण प्रक्रिया बाधित हो जाती है। वक्ता के हर शब्द को लिपिबद्ध करना असंभव होता है फिर कुछ श्रोता ऐसा करने का असफल प्रयास करते हैं जिससे उनका श्रवण निकृष्ट दर्जे का होता है।

8. छोटे- छोटे कारणों से श्रवण क्रिया भंग होना भी श्रवण प्रक्रिया का एक दोष माना जाता है। जैसे- सभागार में वक्ता के व्याख्यान के दौरान लोगों का आना-जाना, माईक की आवाज की बिगडती ध्वनियाँ, किसी कोने के पंखे की विचित्र आवाज, सभागार में बंद-चालू होती बिजली, आपस में कानाफुसी करने वाले लोग आदि मामूली कारणों से कुछ श्रोताओं का अवधान भंग हो जाता है। इससे श्रवण प्रक्रिया में बाधा पहुँचती है।

9. वक्ता के प्रक्षोभक बातों से श्रोता विचलित हो जाते हैं। वे वक्ता की कुछ बातों एवं विचारों से असहमत हो जाने के कारण उनके मन में गुस्सा या क्रोध निर्माण हो जाता है। इससे श्रवण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। भले ही वक्ता के लिए प्रक्षोभक विचार सामान्य हो लेकिन श्रोता के मन में इससे हलचल मच जाती है। इससे श्रवण प्रकिया से वे ठिक तरीके से जुड़ नही पाते और सभागार में शोरगुल बढ जाता है।

*** श्रवण-कौशल सुधारने के उपाय -**

श्रवण कौशल एवं उसकी प्रकिया के सैद्धांतिक विवेचन से ज्ञात होता है कि श्रवण एक बहुत ही उलझी हुई और जटिल प्रक्रिया है। वक्ता और श्रोता के बीच गुणवत्तापूर्ण उचित अवधान एवं अंतरक्रिया से ही श्रवण प्रक्रिया को सफल बनाया जा सकता है। उपरोक्त विवेचन से तो हम श्रवण प्रक्रिया के सकारात्मक और नकारात्मक तथ्यों से परिचित हुए है। इसकारण श्रवण कौशल को सुधारने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसका ज्ञान हमें हो जाता है। श्रवण के दोषों को दूर करके श्रवण के गुणों को बढाना ही श्रवण कौशल को विकसित करने के उपाय है। वह उपाय इसप्रकार है-

1. श्रोता में अवधान (ध्यान) केंद्रीत करने के लिए निरंतर प्रयास करना।
2. श्रोता ने वक्ता के प्रकटीकरण के शैली से ज्यादा वक्ता के श्रुत सामग्री या विषय पर ज्यादा जोर देना और उसे समझना।
3. श्रोता ने अरूचिकर विषयों में भी रूचि निर्माण करके सुनने की क्षमता का विकास करना।
4. श्रोता ने वक्ता के शारीरिक गठन, हावभाव, वेशभूषा के बजाए वक्ता के विषय का मूल्याकंन करना।
5. श्रोता ने वक्ता के विचार एवं कथनों को भावनावश न हुए श्रवण करना और उसे व्यावाहारिक स्तर पर स्वीकारना।
6. श्रोता ने वक्ता के विषय की टिप्पणी लिखने के सही ढंग का इस्तेमाल करना।

1.3.4 श्रवण कौशल का उद्देश्य :

बालकों की सुनने के कौशलों को बढाना ही श्रवण कौशल शिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है। बच्चों के सामने श्रुत सामग्री को रखते हुए उनके अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया में निपुण करना। इसके लिए बच्चों में श्रवण के आवश्यक तत्वों का विकास करना जरूरी होता है। बच्चे अपने परिवार में ही मातृभाषा के श्रवण कौशलों को आत्मसात करते हैं। यह उनके श्रवण कौशल शिक्षण की औपचारिक प्रारंभिक स्थिति होती है। लेकिन उन्हें धीरे-धीरे आँगनबाड़ी या प्राथमिक शिक्षा में अनौपचारिक तरीके से श्रवण कौशलों को सीखाया जाता है। इस स्कूली शिक्षा के दौरान बच्चों को श्रवण योग्य सामग्री को सुनकर अर्थ ग्रहण करना, भाषा सामग्री सुनाकर अर्थ ग्रहण कराना, भाषा-शिक्षण देना आदि कुछ उद्देश्य होते हैं। इसके अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं -

1. छात्र में अनुकूल शैली को समझने की योग्यता विकसित करना। दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालना।
2. ध्वनियों का विभेदीकरण करने की क्षमता विकसित करना। स्वराघात, बलाघात के उतार चढ़ाव के अनुसार अर्थ ग्रहण करने की योग्यता का विकास करना।
3. दूसरों के द्वारा किये गए उच्चारण को सुनकर शुद्ध उच्चारण का अनुकरण करना।
4. शुद्ध सामग्री का अर्थ समझने की योग्यता विकसित करना।

5. वक्ता के मनोभावों को समझने में निपुण बनना।
6. छात्रों में शब्द भंडार की वृद्धि करना।
7. समाज, व्यवहार, जीवन संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना।
8. श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।
9. धैर्यपूर्वक सुनना, सुनने के शिष्टाचार का पालन करना। ग्रहणशीलता की मन:स्थिति बनाये रखना। व्यक्ति द्वारा कही गयी बातों व प्रसंगानुकूल भावों को समझना। शब्दों , उक्तियों, मुहावरों का अर्थ ग्रहण करना।
10. छात्रों में भाषा व साहित्य के प्रति रुचि पैदा करना। छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना और भावों, विचारों को उचित ढंग से समझने की शक्ति का विकास करना।
11. छात्रों की मौलिकता में वृद्धि करना तथा श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) सही विकल्प चुनिए ।

1) भाषा शिक्षण में कौनसे कौशल को अन्य कौशलों के विकास की आधारशिला माना जाता है?

अ) श्रवण ब) संभाषण क) वाचन ड) लेखन

2) श्रवण कौशल विकास की विद्वानों ने कितनी विधियाँ बताई हैं?

अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) छह

3) श्रवण कौशल की प्रक्रिया कितने भागों में विभाजित की जाती है?

अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) छह

4) कौनसी श्रवण प्रक्रिया में वक्ता श्रोताओं को श्रुत सामग्री से जोड़ने में सफल होता है?

अ) पूर्व श्रवण ब) मध्य श्रवण क) पश्च श्रवण ड) अंत श्रवण

5) श्रवण की कौनसी प्रक्रिया में श्रवण के प्रभावों का परीक्षण होता है।

अ) अंत श्रवण ब) पूर्व श्रवण क) पश्च श्रवण ड) मध्य श्रवण

6) कौनसी विधि में शिक्षक पाठ्य सामग्री को सुर-ताल में पठन करके छात्रों को सुनाते हैं।

अ) वाद-विवाद विधि ब) श्रुति लेख विधि
क) सस्वर वाचन विधि ड) कहानी कथन विधि

7) शिक्षक द्वारा श्रुत सामग्री को लिखने के लिए छात्र ध्यानपूर्वक श्रवण करते हैं, यह श्रवण की कौनसी विधि है?

अ) वाद-विवाद विधि ब) श्रुति लेख विधि
क) सस्वर वाचन विधि ड) कहानी कथन विधि

8) कक्षा में छात्रों के दो गुटों में एक विषय पर चर्चा हो रही है और बाकी छात्र श्रवण करते हैं, यह श्रवण की कौनसी विधि है?

अ) वाद-विवाद विधि ब) श्रुति लेख विधि

क) सस्वर वाचन विधि ड) कहानी कथन विधि

9) पॉवरपाईंट प्रझेंटेशन पर छात्रों को श्रुत सामग्री सुनाना यह, श्रवण की कौनसी विधि है?

अ) वाद-विवाद विधि ब) श्रुति लेख विधि

क) वाचन विधि ड) श्रव्य-दृश्य माध्यम विधि

10) भाषा शिक्षण में श्रवण के साथ-साथ कौनसे भाषा कौशल का विकास होता है?

अ) संभाषण ब) लेखन क) वाचन ड) संचार

आ) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1) श्रवण कौशल की प्रक्रिया के लिए कम से कम..................लोगों की जरूरत होती है।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

2) श्रवण कौशल की प्रक्रिया में..................ज्ञानेंद्रिय सबसे ज्यादा प्रमुख होता है।

अ) कान ब) नाक क) आँखें ड) मुँह

३) श्रवण कौशल की प्रक्रिया में..................श्रवण सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

अ) पूर्व श्रवण ब) मध्य श्रवण क) पश्च श्रवण ड) अंत श्रवण

4) कविता का आदर्श वाचन..................श्रवण विकास विधि में आता है।

अ) वाद-विवाद ब) सस्वर वाचन क) श्रुतिलेख ड) श्रव्य-दृश्य माध्यम

5) शिक्षक द्वारा पाठ पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछना..................श्रवण विधि में आता है।

अ) वाद-विवाद ब) सस्वर वाचन क) श्रुतिलेख ड) प्रश्नोत्तर

6) किसी पाठ को पढाते समय शिक्षक द्वारा बच्चों को कठिन शब्दों के अर्थ लिखने को कहना..................श्रवण विधि है।

अ) वाद-विवाद ब) सस्वर वाचन क) श्रुतिलेख ड) प्रश्नोत्तर

7) भाषण देने से पूर्व बच्चों को सुनने के लिए एकाग्र चित्त करना और बाद में प्रश्न पूछना..................श्रवण विधि है।

अ) वाद-विवाद ब) व्याख्यान क) श्रुतिलेख ड) प्रश्नोत्तर

8) श्रवण प्रकिया कान से शुरू होकर..................में संसाधित होकर पूरी होती है।

अ) दूसरे कान ब) कान की हड्डी क) कान के पर्दे ड) मस्तिष्क

9) वक्ता के भाषण के हर वाक्य पर टिप्पण बनाने से..................की प्रक्रिया बाधित हो जाती है।

अ) श्रवण ब) संभाषण क) श्रवण ड) लेखन

१०) ग्रामोफोन पर छात्रों को पाठ्यक्रम की कविता को सुनना..................श्रवण विधि है।

अ) वाद-विवाद ब) सस्वर वाचन क) श्रुतिलेख ड) श्रव्य-दृश्य माध्यम

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

* श्रवण कौशल विधि - सुनने की क्षमता को सक्षम बनानेवाली पद्धतियाँ
* अवधान - ध्यान
* सस्वर वाचन - उचित लय, ताल, बलाघात, उतार-चढाव का ध्यान रखकर किया गया वाचन/ पठन
* श्रुति लेखन - सुनकर लिखना
* मस्तिष्क - दिमाग
* पूर्व श्रवण - सुनने से पहले की स्थिति
* पश्च श्रवण- सुनने के बाद की स्थिति
* वक्ता- बोलने वाला
* श्रोता - सुनने वाला
* श्रुत सामग्री- सुनने योग्य बातें

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

अ) सही विकल्प चुनिए प्रश्न के उत्तर

1) अ) श्रवण
2) ड) छह
3) अ) तीन
4) ब) मध्य श्रवण
5) क) पश्च श्रवण
6) क) सस्वर वाचन विधि
7) ब) श्रुति लेख विधि
8) अ) वाद-विवाद विधि
9) ड) श्रव्य-दृश्य माध्यम विधि
10) अ) संभाषण

आ) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति प्रश्न के उत्तर :

1) ब) दो
2) अ) कान
3) ब) मध्य श्रवण
4) ब) सस्वर वाचन
5) ड) प्रश्नोत्तर
6) क) श्रुतिलेख
7) ब) व्याख्यान
8) ड) मस्तिष्क
9) क) श्रवण
10) ड) श्रव्य-दृश्य माध्यम

1.7 सारांश :

1) भाषिक शिक्षण में श्रवण कौशल पहला एवं महत्त्वपूर्ण चरण है। इसलिए श्रवण कौशल को मनुष्य के भाषा शिक्षण की आधारशिला माना जाता है। शिक्षक या अध्यापक द्वारा शिक्षार्थी के श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए जिन-जिन पद्धतियों का इस्तेमाल किया जाता है, उन्हें श्रवण कौशल विकास की विधियाँ कहा जाता है। विद्वानों ने श्रवण कौशल विकास की प्रमुख छह विधियाँ बताई हैं। वह इसप्रकार है-1. सस्वर पाठ 2. प्रश्नोत्तर विधि 3. वाद-विवाद विधि 4. भाषण विधि 5. कहानी कहना या सुनना 6. श्रुत लेख विधि।

2) श्रवण कौशल को विकसित करनेवाली विधियों में सर्वप्रथम स्थान सस्वर वाचन या सस्वर पाठ विधि का है। अंग्रेजी में इसे Recitation Method कहा जाता है। इस विधि में अध्यापक कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय स्वयं किसी कहानी या कविता का आदर्श वाचन करते हैं।

3) श्रवण कौशल विकास की दूसरी विधि है, प्रश्नोत्तर विधि। इसे अंग्रेजी में Question-Answer Method कहा जाता है। शिक्षक शिक्षण कार्य के दौरान विद्यार्थियों के उचित अवधान स्थापित करने और पाठ के ऊपर उन्हें एकाग्रचित्त करने के लिए बच्चों को पाठ पर आधारित छोटे-छोटे प्रश्न पूछते हैं।

4) श्रुति लेख का अर्थ है, सुनकर लिखना। श्रुति लेख विधि श्रवण कौशल का विकास करने वाले सबसे प्रचलित एवं उपयोगी विधि मानी जाती है। अंग्रेजी में इसके Dictation Method कहा जाता है। इस विधि में छात्र अध्यापक द्वारा बताए जा रहे शब्दों एवं वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर लिखते हैं।

5) भाषण मूलत: संभाषण कौशल को विकसित करने का साधन है किंतु यह श्रवण कौशल का प्रशिक्षण देने में भी प्रयुक्त होता है। भाषण विधि को 'व्याख्यान विधि' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए Lecture Method शब्द प्रचलित है। इसमें अध्यापक व्याख्यान शुरू होने से पूर्व ही निर्देशित करते हैं कि सभी छात्र इसे ध्यानपूर्वक सुने।

6) वाद-विवाद विधि छात्रों के श्रवण कौशल विकास के साथ-साथ संभाषण कौशल विकास के लिए भी एक कारगर विधि मानी जाती है। इसे अंग्रेजी में Descussion Method कहा जाता है। छात्र जब वाद-विवाद में सहभाग लेता है तो वह दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनता है क्योंकि उसे विपक्ष के प्रश्नों के जवाब देना होता है।

7) शिक्षक बच्चों के श्रवण कौशल विकास के लिए कहानी विधि या कहानी कथन विधि का प्रयोग करते हैं। इसे अंग्रेजी में Story Telling Method कहा जाता है। बच्चों को कहानी सुनना बहुत आनंद देता है इसलिए शिक्षक अपनी पाठ्य सामग्री को कहानी कथन विधि में रूपांतरीत करते हैं जिससे छात्र उसे बहुत ही ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

8) श्रवण एक बहुत ही उलझी हुई और जटिल प्रक्रिया होती है। ध्यानपूर्वक सुनने पर ही श्रवण विकास की पूरी प्रक्रिया निर्भर होती है। श्रवण कौशल में श्रवण प्रक्रिया के सैद्धांतिक पक्ष को जानना बेहद जरूरी होता है। विद्वानों श्रवण कौशल की प्रक्रिया को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया है- १. पूर्व श्रवण प्रक्रिया २. मध्यम श्रवण प्रक्रिया और ३. पश्च श्रवण प्रक्रिया। इन तीनों का ज्ञान होने के बाद ही व्यक्ति के श्रवण कौशल का संतुलित विकास हो पाता है।

9) श्रोता के सामने सुनाई जाने वाले सामग्री की प्रस्तावना करके उसका ध्यान आकर्षित करने की क्रिया को 'पूर्व श्रवण प्रक्रिया' कहा जाता है। पूर्व श्रवण प्रक्रिया में वक्ता को श्रोता के ज्ञान की पूर्व जाँच, उनकी रूचि का ध्यान, नए शब्दों एवं संकल्पना का मार्गदर्शन, उनके पूर्व श्रवण के प्रभाव की जाँच आदि प्रक्रिया को ध्यानपूर्वक करना पड़ता है।

10) मध्य श्रवण प्रक्रिया में वक्ता श्रोताओं को श्रुत सामग्री से जोड़ने में सफल हो जाता है। इसमें ध्वनि तरंगें श्रोताओं के बाहरी कान से अंदर जाना शुरू होती हैं, मध्य; कान की हड्डियों से होते हुए फिर आंतरिक कान में विद्युत संकेतों में बदल दी जाती है।, जिन्हें मस्तिष्क के द्वारा संसाधित किया जाता है।

11) पश्च श्रवण प्रक्रिया यह सबसे अंतिम प्रक्रिया होती है। इसमें वक्ता श्रवण के प्रभावों एवं परिणामों का परीक्षण करता है। वह व्याख्यान समाप्त होने के बाद श्रोताओं को कुछ प्रश्न पूछकर श्रवण के प्रभाव की जानकारी लेता है।

12) श्रवण कौशल के गुण इस प्रकार है- अन्य भाषा कौशलों का विकास, ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को समझने की योग्यता, नए शब्दों का परिचय, स्मरण योग्यता और क्रम से समझने की योग्यता, अभिव्यक्ति कौशल से व्यक्तित्व विकास, समाज के सभी क्षेत्रों में विचार समझने एवं संप्रेषण में सहायता, सामाजिक सौहार्द और सद्‌भाव का निर्माण।

13) श्रवण कौशल के दोष इसप्रकार है- ध्वनि तरंगों में बाधा, वक्ता के बोलने की गलत पद्धति, श्रोता की अरूचि, वक्ता के श्रुत सामग्री को छोड़ अन्य बातों का मूल्यमापन, श्रोता का अति संवेदनशील होना, श्रोता के ज्ञान की सीमित समझ, वक्ता के हर बातों पर टिप्पणी लेखन, ध्यान को भटकाने वाले मामूली कारण और वक्ता की प्रक्षोभक बातें आदि।

14) श्रवण कौशल सुधारने के उपाय इस प्रकार है- श्रोता में अवधान (ध्यान) केंद्रीत करना, श्रोता ने वक्ता के श्रुत सामग्री पर अधिक ध्यान देना, श्रोता ने अरूचिकर विषयों में भी रूचि निर्माण करना, श्रोता ने वक्ता के बाह्य रूप के बजाए वक्ता के विषय का मूल्यमापन करना, श्रोता ने वक्ता के विचार को व्यावाहारिक स्तर पर स्वीकारना, श्रोता ने वक्ता के विषय की टिप्पणी लिखने के सही ढंग का इस्तेमाल करना आदि।

15) श्रवण कौशल के उद्देश्य इस प्रकार है- छात्रों में श्रवण के प्रति रूचि निर्माण करना, छात्रों में भाषा एवं साहित्य के नए-नए शब्दों के प्रति रूचि निर्माण करना। श्रवण कौशल की आधारशिला को मजबूत करके अन्य भाषिक कौशलों को विकास के लिए प्रयास करना। श्रुत सामग्री का अर्थ समझने की योग्यता विकसित करना। वक्ता के मनोभावों को समझने में निपुण बनना। विभिन्न ध्वनियों के अंतर को समझने की क्षमता विकसित करना। धैर्यपूर्वक सुनने और सुनने के शिष्टाचार का पालन करने की क्षमता निर्माण करना आदि।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1) सस्वर वाचन विधि का परिचय दीजिए।

2) श्रुति लेख विधि का परिचय दीजिए।

3) व्याख्यान विधि का परिचय दीजिए।

4) प्रश्नोत्तर विधि का परिचय दीजिए।

5) वाद-विवाद विधि का परिचय दीजिए।

6) कथा-कथन विधि का परिचय दीजिए।

7) श्राव्य-दृश्य माध्यम विधि का परिचय दीजिए।

8) श्रवण प्रक्रिया में पश्च श्रवण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

9) श्रवण में मध्य श्रवण प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

10) श्रवण में पश्च श्रवण प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

11) श्रवण के गुण एवं दोष स्पष्ट कीजिए।

12) श्रवण के उद्देश्यों का विवेचन कीजिए।

13) श्रवण को सुधारने के उपाय स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) श्रवण कौशल विकसित करने वाली विधियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए्।

2) श्रवण कौशल के विकास की प्रणाली या प्रक्रिया का सोदाहरण विवेचन कीजिए्।

3) श्रवण कौशल के गुण और दोषों का सविस्तर विवेचन कीजिए्।

4) श्रवण कौशलों के उद्देश्यों को बताकर श्रवण कौशल विकास के उपायों का विवेचन कीजिए्।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) आपके परिसर के किन्हीं दो प्राथमिक कक्षाओं में जाकर श्रवण विकास की विधियों पर आधारित परियोजना बनाए।

2) आपके महाविद्यालय में आयोजित किन्हीं पाँच कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर सभागार में उपस्थित श्रोताओं के श्रवण के प्रभाव पर परियोजना बना।

3) आपके परिसर में आयोजित किन्हीं पाँच कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर वक्ता के भाषण के टिप्पण निकालकर श्रवण की प्रभाव के परिणामों का आकलन कीजिए।

4) आँगनबाड़ी में जाकर श्रवण विकास के लिए प्रमुख रूप से उपयोग होने वाली विधियों पर परियोजना बनाए्।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1) डॉ. हरदेव बाहरी - अच्छी हिंदी कैसे सीखे, अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2022 ई.
2) योगेंद्र जीत - हिंदी भाषा शिक्षण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, हॉस्पिटल रोड, आगरा, सं. 2014 ई.
3) भगवतीप्रसाद शुक्ल - हिंदी उच्चारण और वर्तनी, आर्या बुक्स पब्लिकेशन, दिल्ली, सं. 1986 ई
4) डॉ. उमा मंगल - हिंदी शिक्षण, बुकमैन प्रकाशन- दिल्ली, सं. 2018 ई.
5) डॉ. भोलानाथ तिवारी - भाषा विज्ञान, किताब महाल प्रकाशन-इलाहाबाद, सं. 2012 ई.
6) डॉ. अंबादास देशमुख - प्रयोजनमूलक हिंदी आधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, सं. 2018 ई.

❑❑❑